शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 167 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 13 जुलाई 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

आईएसआईएस आतंकी साजिश मामले में दो लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया

नई दिल्ली

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने वैश्विक आतंकी नेटवर्क के छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद), महाराष्ट्र से जुड़े मॉड्यूल से जुड़े आईएसआईएस आतंकी साजिश मामले में दो लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया है। एनआईए ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। एनआईए के मुताबिक इस साल फरवरी में कई स्थानों पर तलाशी के बाद गिरफ्तार किए गए मोहम्मद जोहेब खान के खिलाफ लीबिया स्थित मोहम्मद शोएब खान के साथ मिलकर आईएसआईएस के भारत विरोधी एजेंडे को बढ़ावा देने की साजिश में आरोप पत्र दाखिल किया है।

आठ विधेयकों के मामले में बंगाल सरकार पहुंची सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली

राज्यपाल सीवी आनंद बोस द्वारा रोके गए आठ विधेयकों के मामले में पश्चिम बंगाल सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। आज इस मामले को चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच के समक्ष जल्द सुनवाई की मांग की गई, जिसके बाद चीफ जस्टिस ने पश्चिम बंगाल सरकार के वकील को याचिका की कॉपी मेल करने को कहा। कोर्ट ने कहा कि कॉपी देखने के बाद जल्द सुनवाई पर फैसला लेंगे। पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से मांग की गई है कि सुप्रीम कोर्ट राज्यपाल को निर्देश दे कि वो लंबित आठ विधेयकों पर फैसला लें। इन आठ में से छह विधेयकों को पूर्व राज्यपाल जगदीप धनखड़ के पास भेजा गया था। बाद में दो विधेयक वर्तमान राज्यपाल सीवी आनंद बोस के पास भेजे गए थे। पश्चिम बंगाल सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के उस आदेश का जिक्र किया है, जिसमें तेलंगाना के राज्यपाल को संविधान के अनुच्छेद 200 के प्रावधानों का पालन करने को कहा गया था। याचिका में पंजाब के राज्यपाल को सुप्रीम कोर्ट की ओर से दिए गए निर्देश का भी जिक्र किया गया है।

25 जून 'संविधान हत्या दिवस' घोषित...

1975 में इसी दिन लगी थी इमरजेंसी, केंद्र सरकार ने जारी की अधिसूचना, शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर अधिसूचना की प्रति पोस्ट कर यह जानकारी दी

"25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी तानाशाही मानसिकता को दर्शाते हुए देश में आपातकाल लगाकर भारतीय लोकतंत्र की आत्मा का गला घोंट दिया था"

नई दिल्ली

केंद्र की मोदी सरकार ने 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' मनाने का एलान किया है। इसको लेकर केंद्र सरकार ने शुक्रवार को अधिसूचना जारी कर दिया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर अधिसूचना की प्रति पोस्ट कर यह जानकारी दी।

केंद्र सरकार ने जारी की अधिसूचना

उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा, "25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी तानाशाही मानसिकता को दर्शाते हुए देश में आपातकाल लगाकर भारतीय लोकतंत्र की आत्मा का गला घोंट दिया था। लाखों लोगों को अकारण जेल में डाल दिया गया और मीडिया की आवाज को दबा दिया गया। भारत सरकार ने हर साल 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय किया है। यह दिन उन सभी लोगों के विराट योगदान का स्मरण करायेगा, जिन्होंने 1975 के आपातकाल के अमानवीय दर्द को झेला था।" केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को जारी एक राजपत्र अधिसूचना में कहा गया है कि 25 जून, 1975 को आपातकाल की घोषणा की गई थी, जिसके बाद "तत्कालीन सरकार द्वारा सत्ता का घोर दुरुपयोग किया गया और भारत के लोगों पर ज्यादती और अत्याचार किए गए।" भारत के लोगों को संविधान और इसके लचीले लोकतंत्र की शक्ति पर अटूट विश्वास है। अधिसूचना में कहा गया, "इसलिए भारत सरकार 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में घोषित करती है, ताकि आपातकाल के दौरान सत्ता के घोर दुरुपयोग के खिलाफ लड़ने वाले सभी लोगों को श्रद्धांजलि दी जा सके और भारत के लोगों को भविष्य में सत्ता के ऐसे घोर दुरुपयोग का किसी भी तरह से समर्थन न करने के लिए प्रतिबद्ध किया जा सके।"

कांग्रेस 8 नवंबर को मनाएगी "आजीविका हत्या दिवस"

नई दिल्ली

कांग्रेस ने शुक्रवार को 25 जून को, जिस दिन 1975 में आपातकाल घोषित किया गया था, 'संविधान हत्या दिवस' घोषित करने के सरकार के कदम की आलोचना की। फैसले पर कटाक्ष करते हुए, विपक्षी दल ने यह भी कहा कि अब से, हर साल 8 नवंबर को, जिस दिन 2016 में नोटबंदी की घोषणा की गई थी, भारत के लोग "आजीविका हत्या दिवस" मनाएंगे और एक गजट अधिसूचना भी जारी की जाएगी। कांग्रेस महासचिव (प्रभारी, संचार), जयराम रमेश ने कहा ने कहा कि आज नॉन-बायोलॉजिकल प्रधानमंत्री को हेडलाइन मैनेज करने की तत्काल आवश्यकता क्यों पड़ी इसका सीधा सा जवाब हैः अभी

संविधान हत्या दिवस का भाजपा ने किया स्वागत

नई दिल्ली

भारत सरकार की ओर से हर वर्ष 25 जून को संविधान हत्या दिवस मनाए जाने पर देशभर से नेताओं की प्रतिक्रिया आनी शुरू हो गई है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह दिन याद दिलाता है कि भारत के संविधान को कुचले जाने पर क्या हुआ था। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया पर कहा कि 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाना इस बात की याद दिलाएगा कि क्या हुआ था, जब भारत के संविधान को कुचल दिया गया था। यह हर उस व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है, जो आपातकाल की ज्यादतियों के कारण पीड़ित हुए थे, जो भारतीय इतिहास में कांग्रेस द्वारा लाया गया काला दौर था। भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने फैसले का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद दिया है। उन्होंने कहा कि 25 जून 1975 वह काला दिवस था, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के तानाशाही मानसिकता ने हमारे संविधान में निहित लोकतंत्र की हत्या कर देश पर 'आपातकाल' थोपा था। केंद्र सरकार ने प्रत्येक वर्ष 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है।

भारत के लोगों से 4 जून–जिसे इतिहास में मोदी मुक्ति दिवस के नाम से जाना जाएगा

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने इसे सुर्खियां बटोरने की कवायद बताया है। उन्होंने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि भारत के लोगों से 4 जून – जिसे इतिहास में मोदी मुक्ति दिवस के नाम से जाना जाएगा – को मिली निर्णायक व्यक्तिगत, राजनीतिक और नैतिक हार से पहले उन्होंने दस सालों तक अघोषित आपातकाल लगा रखा था। यह वही प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने भारत के संविधान और उसके सिद्धांतों, मूल्यों एवं संस्थानों पर सुनियोजित ढंग से हमला किया है। यह वही प्रधानमंत्री हैं, जिनके लिए डेमोक्रेसी का मतलब केवल डेमो-कुर्सी है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार अब से हर वर्ष 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाएगी।

सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार से पूछा- शंभू बॉर्डर खोलने के हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती क्यों

शंभू बॉर्डर खोलने का आदेश

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को हरियाणा सरकार को अंबाला के नजदीक शंभू बार्डर से बैरिकेडिंग हटाने का आदेश दिया, जहां किसान 13 फरवरी से डेरा डाले हुए हैं। शीर्ष अदालत ने सवाल किया कि कोई राज्य हाईवे को कैसे बंद कर सकता है। संयुक्त किसान मोर्चा (गैरराजनीतिक) एवं किसान मजदूर मोर्चा ने जब न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी समेत विभिन्न मांगों के समर्थन में किसानों के दिल्ली मार्च की घोषणा की थी, तब फरवरी में हरियाणा सरकार ने अंबाला-नई दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर बैरिकेड लगाए थे।

कोर्ट ने लगाई राज्य सरकार को फटकार

जस्टिस सूर्यकांत एवं जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ ने उक्त टिप्पणी तब की, जब हरियाणा सरकार के वकील ने कहा कि राज्य पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के 10 जुलाई के फैसले के विरुद्ध अपील दायर करने की प्रक्रिया में है।

सैन्य इंजीनियर सेवाओं के प्रोबेशनर्स ने राष्ट्रपति से मुलाकात की

नई दिल्ली

सैन्य इंजीनियर सेवा (एमईएस) के प्रोबेशनर्स ने शुक्रवार को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि एमईएस भारतीय सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण इकाइयों में से एक है, क्योंकि यह न केवल भारतीय सेना की तीनों सेनाओं की सेवा करती है बल्कि रक्षा मंत्रालय की कई अन्य इकाइयों को भी अपनी सेवाएं प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि एमईएस का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हमारे रक्षा बलों के पास मजबूत बुनियादी ढांचा और अच्छी सुविधाएं बनी रहें।

इसलिए एमईएस अधिकारियों की सफलता की कसौटी यह होगी कि उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली बुनियादी संरचना या सुविधाएं विश्वसनीयता और गुणवत्ता के मानकों पर खरी उतरती हैं।

हाथरस भगदड़: जांच की याचिका पर सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इनकार

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के हाथरस में हुई भगदड़ मामले पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने याचिकाकर्ता से कहा कि आप हाई कोर्ट जाएं। सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने याचिकाकर्ता से पूछा कि आप अनुच्छेद 32 के तहत सीधे सुप्रीम कोर्ट क्यों आ गए, आपको हाई कोर्ट जाना चाहिए था। याचिका में 2 जुलाई को हाथरस में हुई घटना की जांच की मांग करते हुए घटना के लिए जिम्मेदार लोगों और अधिकारियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई किए जाने की मांग की।

केजरीवाल को ईडी केस में सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम जमानत

सीबीआई मामले के कारण फिलहाल जेल से फिलहाल बाहर नहीं आ पाएंगे

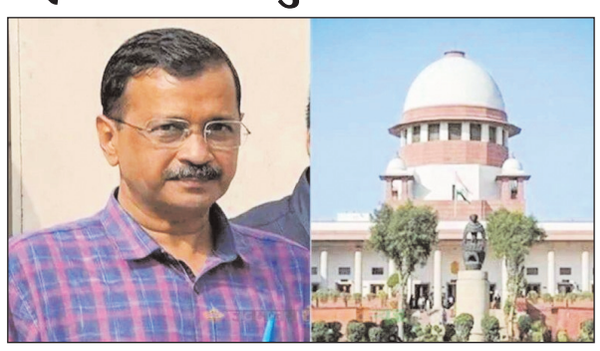

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत दे दी है। जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने ईडी की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली केजरीवाल की याचिका को बड़ी बेंच को रेफर कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद भी केजरीवाल जेल से बाहर नहीं निकल पाएंगे क्योंकि वे सीबीआई के मामले में भी न्यायिक हिरासत में हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर बड़ी बेंच चाहेगी तो वो अंतरिम जमानत के फैसले में बदलाव कर सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि बड़ी बेंच ये तय करेगी कि गिरफ्तारी का आधार क्या हो। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि महज पूछताछ गिरफ्तारी की अनुमति नहीं दे सकता है। कोर्ट ने कहा कि केजरीवाल चुने हुए प्रतिनिधि हैं और वे 90 दिन जेल में रहे हैं। जस्टिस खन्ना ने कहा कि कोर्ट किसी चुने हुए प्रतिनिधि को न तो पद से हटने को कह सकता है और न ही मुख्यमंत्री के रूप में काम करने से रोक सकता है। हम ये केजरीवाल पर छोड़ते हैं। जस्टिस संजीव खन्ना ने कहा कि कोर्ट ने चुनाव फंडिंग पर भी सवाल खड़ा किया है। उन्होंने कहा कि हाल ही में संविधान बेंच ने फैसला दिया है जिसमें इलेक्टोरल बांड को निरस्त किया है।

वो मामला चुनाव की फंडिंग से ही जुड़ा हुआ है जिसमें गहराई से पड़ताल की गई। सुप्रीम कोर्ट ने 17 मई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। 10 मई को सुप्रीम कोर्ट ने अरविंद केजरीवाल को 1 जून तक की अंतरिम जमानत देते हुए 2 जून को सरेंडर करने का आदेश दिया था। केजरीवाल ने 2 जून को सरेंडर कर दिया था। इस मामले में सीबीआई ने केजरीवाल को 26 जून को गिरफ्तार किया था।

जून में घरेलू यात्री वाहनों की थोक बिक्री तीन फीसदी बढ़कर हुई 3,37,757 इकाई

नई दिल्ली

देश में यात्री वाहनों (पीवी) की थोक बिक्री जून महीने में सालाना आधार पर तीन फीसदी बढ़कर 3,37,757 इकाई पर पहुंच गई है। पिछले साल जून में यात्री वाहनों की थोक बिक्री 3,27,788 इकाई रही थी। सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) ने शुक्रवार को जारी आंकड़ों में बताया कि जून महीने में यात्री वाहनों की थोक बिक्री तीन फीसदी बढ़कर 3,37,757 इकाई पर पहुंच गई। पिछले साल जून 2023 में यात्री वाहनों की थोक बिक्री 3,27,788 इकाई रही थी। आंकड़ों के मुताबिक जून महीने दोपहिया वाहनों की थोक बिक्री 21 फीसदी बढ़कर 16,14,154 इकाई रही है, जबकि जून 2023 में यह 13,30,826 इकाई रही थी। सियाम के मुताबिक तिपहिया वाहनों की थोक बिक्री पिछले इस साल जून में 12 फीसदी बढ़कर 59,544 इकाई हो गई, जबकि जून 2023 में यह 53,025 इकाई रही थी।

पाठ्यक्रम में किसी भी विवादित हिस्से को शामिल नहीं किया जाएगा : धर्मेंद्र प्रधान

नई दिल्ली

दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के विधि संकाय के एलएलबी पाठ्यक्रम में प्राचीन ग्रंथ मनुस्मृति को शामिल करने को लेकर उठे विवाद पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने पाठ्यक्रम में किसी भी विवादित हिस्से को शामिल नहीं करने का आश्वासन दिया है।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि कल हमारे पास मनुस्मृति को विधि संकाय पाठ्यक्रम (डीयू) में शामिल करने की कुछ सूचना आई थी। मैंने

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति से इस संबंध में बातचीत की। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि विधि संकाय के कुछ सदस्यों ने न्यायशास्त्र अध्याय में कुछ बदलाव प्रस्तावित किए हैं लेकिन जब यह प्रस्ताव दिल्ली विश्वविद्यालय के पास आया तो उन्होंने इसे खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि डीयू में आज अकादमिक परिषद की बैठक है। अकादमिक परिषद के प्रामाणिक निकाय में ऐसे किसी प्रस्ताव का समर्थन नहीं है। कल ही कुलपति ने उस प्रस्ताव को खारिज कर दिया था। केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने कहा कि हम सभी अपने संविधान और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्ध हैं। सरकार संविधान की सच्ची भावना को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट मामले में बिभव कुमार की जमानत याचिका खारिज

नई दिल्ली

दिल्ली हाई कोर्ट के जस्टिस अनूप कुमार मेंहदीरत्ता की बेंच ने आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट मामले में बिभव कुमार की जमानत याचिका खारिज कर दी है। कोर्ट ने 10 जुलाई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। हाई कोर्ट की वेकेशन बेंच ने 14 जून को बिभव की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया था। बिभव कुमार ने तीस हजारी कोर्ट की ओर से जमानत याचिका खारिज करने के आदेश को हाई कोर्ट में चुनौती दी थी। तीस हजारी कोर्ट ने 7 जून को बिभव कुमार की दूसरी जमानत याचिका खारिज की थी। तीस हजारी कोर्ट ने कहा था कि इस मामले की जांच अभी प्रारंभिक चरण में है और पीड़िता के दिलो दिमाग में अपनी सुरक्षा को लेकर खतरा है।

तीस हजारी कोर्ट ने कहा था कि स्वाति मालीवाल आम आदमी पार्टी की सांसद हैं और वो अपनी पार्टी के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मिलने गई थीं। कोर्ट ने कहा था कि इस बात की भी आशंका है कि अगर बिभव कुमार को जमानत दी जाती है तो वो गवाहों को प्रभावित कर सकता है।

दिल्ली पुलिस ने 18 मई को बिभव कुमार को गिरफ्तार किया था। इस मामले में स्वाति मालीवाल ने 17 मई को कोर्ट में अपना बयान दर्ज कराया था। घटना 13 मई की है। दिल्ली पुलिस ने 16 मई को स्वाति मालीवाल का बयान दर्ज कर एफआईआर दर्ज किया था। बिभव कुमार ने हाई कोर्ट में एक और याचिका दायर करके अपनी गिरफ्तारी को चुनौती दी है, जिस पर हाई कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा हुआ है। बिभव कुमार ने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देते हुए मुआवजे की मांग की है। बिभव कुमार ने कहा है कि उनकी गिरफ्तारी करते समय अपराध प्रक्रिया संहिता की धारा 41ए का पालन नहीं किया गया है।

भारत-थाईलैंड संयुक्त सैन्य अभ्यास मैत्री 2024 शुरू

नई दिल्ली/एजेंसी

भारतीय सेना और रॉयल थाईलैंड सेना के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास मैत्री- 2024, थाईलैंड के ताक प्रांत में चल शुरू हो गया है। यह अभ्यास संयुक्त राष्ट्र चार्टर के तहत सैन्य सहयोग को बढ़ावा देने और दोनों देशों की परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। गुवाहाटी में रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने लेफ्टिनेंट कर्नल महेंद्र रावत ने बताया कि दोनों टुकड़ियों के सैनिक सक्रिय रूप से कठोर प्रशिक्षण सत्र में जुटे हुए हैं, जो जंगल और शहरी वातावरण में उग्रवाद और आतंकवाद विरोधी अभियानों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

दो दर्जन से ज्यादा देश दे चुके है सहमति, मौजूदा समय में बिग कैट की कुल सात प्रजातियों में कोई एक भी प्रजाति मौजूद

बिग कैट के संरक्षण पर दुनिया अब मिलकर करेगी काम

नई दिल्ली/

बिग कैट यानी शेर, बाघ और चीता जैसे वन्यजीवों के संरक्षण की मुहिम को तेज करने के लिए इंटरनेशनल बैग कैट एलायंस ने काम शुरू दिया है। इसमें दुनिया के उन सभी देशों से संपर्क किया जा रहा है, जहां मौजूदा समय में बिग कैट की कुल सात प्रजातियों में कोई एक भी प्रजाति मौजूद है।

भारत में पाए जाते हैं सात में से पांच वन्यजीव

अब तक दुनिया के दो दर्जन से ज्यादा देशों ने एलायंस के साथ मिलकर काम करने को लेकर अपनी सहमति दे भी है। वहीं, बाकी देशों से

भी जल्द से जल्द एलायंस से जुड़ने और उसका सदस्य बनने को लेकर पहल की गई है। खास बात यह है कि पूरी दुनिया में सिर्फ भारत की एक ऐसा देश है जहां बिग कैट प्रजाति के सात वन्यजीवों में से पांच पाए जाते है। इनमें शेर, बाघ, चीता, तेंदुआ और हिम तेंदुआ शामिल है। दुनिया के बाकी देशों में बिग कैट के एक या दो सदस्य ही पाए जाते हैं।

भारत ने की थी एलायंस के गठन की पहल

इस एलायंस के गठन की पहल भारत ने ही की थी, जिसकी घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रोजेक्ट टाइगर के पचास साल पूरा होने के मौके पर की थी। इसके साथ ही इस साल चुनाव में जाने से पहले सरकार ने नई दिल्ली में इसके मुख्यालय को शुरू करने की मंजूरी देते हुए इसके लिए 150 करोड़ रुपए का बजट भी आवंटित किया था।

कहां है एलायंस का मुख्यालय

इस बीच एलायंस के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय ने काम शुरू कर दिया है। साथ ही दुनिया भर में बिग कैट के संरक्षण को लेकर चल रहे अच्छे कामों का ब्योरा जुटाना शुरू कर दिया है। माना जा रहा है कि इनके संरक्षण से जुड़े अच्छे कामों को जल्द ही दुनिया के दूसरे देशों के साथ साझा किया जाएगा। एलायंस ने बिग कैट से जुड़ी जानकारी जुटाने, उनसे जोड़ने, क्षमता सृजन, नेटवर्किंग, सहयोग, वित्तीय के साथ ही संसाधन, अनुसंधान, तकनीक, शिक्षा और जागरूकता आदि क्षेत्रों में मदद देने की तैयारी कर रही है। इसके साथ इस मदद को सिर्फ बिग कैट की मौजूदगी वाले देशों तक ही सीमित नहीं रखा जाएगा, बल्कि देशों को भी दी जाएगी।

मिट्टी लेने के लिए ताजियादारों की भीड़, प्रशासन की पैनी नजर

अखण्ड भारत संदेश।

मांडा। क्षेत्र के नगर पंचायत भारतगंज में शहादत के पर्व मोहर्रम को मनाने के क्रम में चौथे मोहर्रम पर नगर पंचायत भारतगंज में अलम का जुलूस परंपरागत तरीके से निकाला गया। दरगाह के सामने की मिट्टी को लेकर अलग- अलग मोहल्लों में ले जाया गया जो बाद में चौक पर रखी गई।और फातेहा भी किया गया। नगर पंचायत भारतगंज के मोहल्ला हवेली, मुल्लाना,कैथाना से अलम का जुलूस शुक्रवार को जुलूस अपने परंपरागत रास्ते बुड्ढी मैया से होते हुए चौक पर पहुचाया। वहां पर अंजुमन के लोगों ने नौहा पढ़ा और मातम किया। दरगाह के सामने से मिट्टी लिया।मिट्टी लेकर लोग अपने- अपने मोहल्ले में जुलूस लेकर पहुंचे।इस मिट्टी को इमाम चौक के बीच रखा गया और फिर फातेहा किया गया। वहीं चप्पे- चप्पे पर प्रशासन भी मुस्तैदी से डटे रहे। इसी तरह मांडा खास, कुदर आदि गांवों में भी जुलुस निकाला गया।इस दौरान डीसीपी श्रद्धा नरेंद्र पाण्डेय, एडीसीपी अभिजीत कुमार, एसीपी रवि कुमार गुप्ता,ईओ बंटी कुमारी, मांडा थाना प्रभारी शैलेन्द्र सिंह भारतगंज चौकी इंचार्ज विनय कुमार सिंह, नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि शकील अहमद टंकी , अब्दुल हक अंसारी, याकीब, चमन गुड्डू आदि हजारों लोगो की भीड़ मौजूद रही।

दरवाजा काटकर लाखों की चोरी, नहीं लिखा गया केस

घटना की सूचन पर डायल 112 की टीम ने किया था मौका मुआयना

कोरांव। कोरांव थाना क्षेत्र के लखनपुर गांव में 27 जून की रात बेखौफ चोरों ने कटर से दरवाजा काटकर लाखों रुपये के जेवरात, नगदी, कीमती कपड़े व अन्य सामानों पर हाथ साफ करदिया। भुक्तभोगी ने तत्काल डायल 112 पर सूचना दी। 112 की टीम आई और मौका मुआयना कर लौट गई। इसके बाद भुक्तभोगी ने मामले की तहरीर कोरांव पुलिस को दी, लेकिन अभी तक चोरी का केस नहीं लिखा जा सका है। कोरांव थाना क्षेत्रके लकनपुर निवासी जोगेंद्र प्रताप सिंह पुत्र स्व. महाबली सिंह ने कोरांव पुलिस को प्रेषित प्रार्थनापत्र में बताया है कि 27 जून, 2024 की रात चोरों ने दरवाजे को कटर सेकाटकर लाखों के सामान पर हाथ साफ करदिया है। भुक्तभोगी के मुताबिक चोरों ने 11500 रुपये नगद, सोने का एक बड़ा मंगलसूत्र, एक छोटा मंगलसूत्र, सोने का बाला, सोने की अंगूठी समेत कीमती कपड़े चोरी कर ले गये थे।

जन चौपाल कार्यक्रम में कौवा व निदौरी गांवों में ग्रामीणों की सुनी गई समस्याएं

करछना। विकास खंड करछना में शुक्रवार को ग्राम पंचायत निदौरी एवं कौवा पंचायत भवनों पर जन चौपाल कार्यक्रम में ग्रामीणों की समस्याओं को लेकर जन चौपाल कार्यक्रम में ग्रामीणों ने दर्ज कराई शिकायतें इसके निदान के लिए हर संभव निस्तारण कराए जाने को लेकर ब्लाक कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने निस्तारण कराए जाने का भरोसा दिलाया सर्व प्रथम ग्राम पंचायत निदौरी में सहायक विकास अधिकारी उदयभान के ब्रिज भुवन मौर्य, एडियो कोऑपरेटिव सोनल शुक्ला अमन सिंह सचिव मनीष सिंह प्रधान रेखा कुमारी सचिव सुरेंद्र कुमार प्रमोद कुमार सहायक विकास अधिकारी की उपस्थिति में पंचायत सचिवालयो पर चौपाल कार्यक्रम में ग्रामीणों की सुनी समस्याएं तथा निष्कारण के लिए नाली खडंजा आवास पेंशन शौचालय आदि जन समस्या को ग्रामीणों ने पटल पर रखा इसके निस्तारण का अधिकारियों ने दिलाया भरोसा उपस्थित ग्रामीणों में अमरजीत फूलचंद राकेश मौर्य हीरालाल गौड अश्वनी भारतीय अजय कुमार अनिल कुमार नीलम सिंह आकाश प्रजापति आदि बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

मानव जीवन में जल का संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है : शिवाकांत

जल जीवन मिशन प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को दिया गया प्रशिक्षण

करछना। प्रयागराज मानव जीवन को खुशहाल जीवन व्यतीत करने के लिए जल संसाधनों को संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है जल संसाधनों की कमी प्राकृतिक वातावरण को भी खराब करता है पानी के बिना कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता पारंपरिक तथा आधुनिक व्यवस्था में जल की विशिष्ट भूमिका है तथा यह पीने घरेलू कृषि एवं उद्योगों सहित समस्त दैनिक कार्यों के लिए अनिवार्य है स्वच्छ एवं शुद्ध पानी अनोखा पदार्थ है इसलिए इसका महत्व समझने व इसे संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है पानी का संरक्षण सहित तथा भूजल संसाधनों को प्रदूषण से बचाने में भी सहायक होता है जल संरक्षण के द्वारा पानी की खपत को एक तिहाई तक काम किया जा सकता है जल के सदुपयोग से पानी तथा सीवर की लागत को तेज प्रभाव कम कर सकते हैं पानी के सदुपयोग के बिल कम करता है जिससे उपभोक्ताओं की आर्थिक बचत भी होती है विभिन्न पर्यावरण लाभ अर्थात स्थानीय झरनों में उपलब्ध पानी में वृद्धि भूजल स्तर में स्थिरता प्रदूषण से सुरक्षा आदि होती है तथा बड़े जलाशयों तथा बांधों की आवश्यकता को काम करता है भूजल की निकासी और नियंत्रण की आवश्यकता को काम करता है विकासखंड करछना के सभागार में शुक्रवार को दो दिवसीय जल जीवन मिशन कार्यक्रम में जल संरक्षण पर जल शुद्धता हर घर जल योजना के अंतर्गत विकासखंड के समस्त ग्राम पंचायत से विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं को यूनोप्स के जिला सलाहकार शिवाकांत द्विवेदी ने दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान उक्त बातें विस्तार पूर्वक बताई इस मौके पर धीरेंद्र द्विवेदी राकेश सिंह दिवाकर पटेल प्रदीप पटेल संगीता सतेन्द्र सिंह एवं शिक्षकों में निहाल अहमद संतोष चौबे नीता मेहरोत्रा वंदना सोनी विदिशा आशा सिंह प्रीति सूर्यकांत सिंह पुष्पा देवी यज्ञ द्विवेदी नागेश्वर पांडे सुजीत प्रतिभा शिव प्रसाद जगमोहन कंचन सिंह चित्रा सिंह बबीता श्रीवास्तव आज शिक्षक शिक्षिकाएं मौजूद रहे।

उपभोक्ताओं ने किया घरों में आ रहें गन्दे व बदबूदार पानी की शिकायत

नैनी। नैनी अवंतिका कालोनी में हो रहे पेयजल आपूर्ति की शुक्रवार को स्वास्थ्य विभाग की टीम के साथ जलकल विभाग नगर निगम प्रयागराज नैनी जोन 5 के अवर अभियंता एस0 पी0 सिंह के द्वारा नैनी क्षेत्र में किए जा रहे पेयजल आपूर्ति का परीक्षण कराया गया। परीक्षण कर रही टीम के अनुसार पेयजल बेहतर पाया गया। अवन्तिका विकास समिति नैनी के संयोजक गजेन्द्र प्रताप सिंह के अनुसार टंकी का पानी तो ठीक है परन्तु जब घरों में पहुंचता है तो रास्ते में पाइप लाइन लीकेज होने के कारण कहीं गन्दा पानी तो कहीं सीवर से कनेक्ट हो जाने पर बदबूदार पानी भी आता है। सिंह के अनुसार समिति की अपेक्षा है कि समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों के घरों में आ रहें पानी का भी परीक्षण कराकर गड़बड़ियों को ठीक कराया जाना चाहिए। जिससे उपभोक्ताओं को विभिन्न बिमारियों के खतरों से बचाया जा सके। व अन्य सामान परचोरों ने हाथ साफ किया है। अगले दिन खोजबीन के दौरान मकान से कुछ दूरी पर कुछ सामान फेंका हुआ पाया गया।

डिजिटाइजेशन के विरोध में बीआरसी मेजा के शिक्षकों ने चलाया हस्ताक्षर अभियान

अखंड भारत संदेश

मेजा। डिजिटाईजेशन के विरोध में प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा चलाए जा रहे हस्ताक्षर अभियान में अपनी सहमति व्यक्त करते हुए हस्ताक्षर बनाए। शुक्रवार को इस अभियान के दूसरे दिन बी आर सी मेजा में विकास खंड के शिक्षक बड़ी संख्या में लामबंद हुए। इस अवसर पर प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष मनीष तिवारी ने कहा की प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर दिनेश चंद्र शर्मा के आह्वान पर उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा विरोध प्रदर्शन और तुगलकी फरमानों का बहिष्कार करने के लिए कार्यक्रम जारी किया गया है। बैठक में डिजिटलाइजेशन और ऑनलाइन उपस्थिति के विरोध में 11 व 12 जुलाई को ऑनलाइन उपस्थिति के आदेश को वापस लिए जाने के लिए सहमति अथवा असहमति के पक्ष में हस्ताक्षर कराए गए। 14 जुलाई को दोपहर प्रदेश स्तर पर ट्विटर अभियान चलाया जाएगा, जिसमें सभी शिक्षक और शिक्षणेत्तर कर्मचारी भी शामिल होंगे । हस्ताक्षर अभियान के इस मौके पर बी के मिश्र, वी पी सिंह,अर्चना बघेल, आकांक्षा यादव,राहुल, अखिलेश ,चंद्रजीत सिंह,शैलेंद्र मौर्य,सूरज पांडे,सुनील तिवारी,बृजेंद्र सिंह,मनोज यादव संदीप तिवारी, मिलिंद द्विवेदी, इलियास अली, उमा सिंह,राममनोहर गुप्ता, प्रवीण पटेल, प्रवीण दुबे,गिरीश तिवारी, सचिन उपाध्याय सोयब सिद्दीकी,सैलजा सिंह तथा आरती सिंह,आदि के अलावा सैकड़ों शिक्षक एवं शिक्षिकाएं प्रमुख रूप से मौजूद रहीं।

अल्हवा ग्राम सभा में चार माह पूर्व निर्माण कार्य करा रही फर्म ने कार्य छोड़ा,बोला पैसा नहीं मिल रहा

जल जीवन मिशन, ग्राम प्रधान ने विधायक कोरांव से किया शिकायत, ठेकेदार ने अब दूसरी साइड का ले लिया कार्य

अल्हवा ग्राम में निर्माण कार्य करा रहे ठिकेदार ने अधर में छोड़ा टंकी का निर्माण कार्य, और वर्षा कॉन्स्ट्रक्सन द्वारा दूसरे बरोहां ग्राम में साफ निर्माण कार्य कराने का दृश्य

अखंड भारत संदेश

कोरांव। जल जीवन मिशन के तहत ग्राम सभाओं में शुद्ध पेय जलापूर्ति के लिए हो रही जल पाइप लाइन का निर्माण कार्य तीव्रता से तो चालू है किंतु तीन चार गांवों के मध्य मुख्य पाइप लाइन से सीधे जल प्रपात से होने वाली जल पाइप लाइन से भंडारण करने वाली पानी की टंकी का निर्माण कार्य ठीकेदारों की आपसी मनमुटाव के चलते अधर में लटक गया है। और निर्माण कार्य दाई संस्था द्वारा बरती जा रही लापरवाही के कारण निर्माण पूर्ण करने के बजाय निर्माण सामग्री ही उठवा ले जा रहे हैं।

बता दें कि ग्राम सभा अल्हवा में जल पाइप लाइन का कार्य पूर्ण हो गया है किंतु तीन चार ग्रामों में सप्लाई होने वाली जल टंकी का कार्य शुरू तो कर दिया गया किंतु फाउंडेशन का पूर्ण कार्य होने के बावजूद कथित ठिकेदार ने निमार्णाधीन टंकी कार्य हेतु लगी स्टील सरिया आदि निर्माण सामग्री उठवा ले गया। जिससे ग्रामीणों में आक्रोश है साथ ही ग्राम प्रधान को जानकारी होते ही अवशेष निर्माण सामग्री ले जाने पर रोक लगा दिया.ठिकेदार यूएसटी हिंद कोंस्ट्रक्सन और वर्षा कंस्ट्रक्शन ने मिल कर ठेका लिया था। किंतु एक पार्टी साझेदार ने चार माह तक पूंजी फंसा कर परेशान रहा भुगतान नहीं दिया,जिससे वर्षा कोस्ट्रक्सन अपनी सामग्री उठवा ले गया। जानकारी होने पर प्रधान ने और उच्च स्तरीय शिकायत भी कर दिया है। ज्ञात हो कि ग्राम सभा अल्हवा में करीब 33 लाख की लागत में निर्माण हो रही पानी की टंकी से ग्राम अल्हवा के अतिरिक्त जमुआ, धुंस और बंसीपुर तक पेय जला पूर्ति में जल पाइप लाइन के माध्यम से होना है।

उक्त संबंध में वर्षा कॉन्स्ट्रक्सन निर्माण कार्य दाई संस्था के काजोड़ शर्मा ने बताया कि हिंद कास्ट्रक्सन के उदय सिंह ने दो लाख सोलह हजार रूपया जेसीबी गढ़ा खुदवाई, पीसीसी करवाई, सरिया भरवाई, सरिया खोलवाई, बालू, गिट्टी, मिट्टी कार्य, बालू धुलवाई आदि का कार्य टोटल करीब दो लाख सोलह हजार चार माह से पैसे नहीं दे रहे। क्योंकि मेरा साइड बरौन्हा ग्राम में चल रहा है। जहा निर्माण सामग्री लगनी है। इस बाबत ग्राम प्रधान अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने विधायक कोरांव राजमणि कोल जी से शिकायत किया और हस्तक्षेप की माग किया। विधायक ने दोषी और विलंब कार्य करने वाले कार्यदाई संस्था को दंडित कराने का आश्वासन दिया।। साथ ही विभागीय अधिकारियों से वार्ता करने और निर्माण कार्य स्मयांतर्गत पूर्ण न किए जाने वाले ठिकेदार को ब्लैक लिस्टेड सहित कार्यवाही कराए जाने की तसल्ली भी दी। विधायक ने भी कहा कि सामग्री नहीं उठेगी।

ग्राम प्रधान अल्हवा ने नमामि गंगे योजना के प्रमुख सचिव लखनऊ, डीएम प्रयागराज आदि से कार्यवाही की मांग करते हुए तत्काल प्रभाव से निर्माण कार्य किसी दूसरे ठिकेदार के माध्यम से पूर्ण कराए जाने की मांग की है।

कथित दबंगों ने पत्रकार के घर का ताला तोड़ कर रहे हैं कब्जे का प्रयास, लगाई न्याय की गुहार

मेजा। कथित दबंगों द्वारा एक पत्रकार के घर का ताला तोड़कर मकान पर कब्जा करने का प्रयास किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। पीड़ित पत्रकार सुशील दुबे ने मेजा पुलिस को तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के सोरांव गांव निवासी पत्रकार सुशील दुबे (राजू दुबे) ने मेजा पुलिस को दी गई तहरीर में उल्लेख करते हुए लिखा है कि शुक्रवार को पत्रकार के गांव के ही कुछ कथित दबंगों ने पत्रकार को अश्लील भाषाओं का प्रयोग करते हुए मकान का तोड़ने लगे जिसका पत्रकार द्वारा विरोध किया गया तो उन्हें जान से मरने की धमकीं भी दी गई। आनन फानन में पत्रकार ने इस प्रकरण की जानकारी इन्स्पेक्टर मेजा राजेश उपाध्याय को दिया। जहां इन्स्पेक्टर मेजा ने चौकी मेजा रोड को निर्देशित करते हुए मौके पर शांति व्यवस्था कायम रखने का आदेश दिया बताया जाता है कि थाना प्रभारी मेजा के आदेश के बाद मेजारोड चौकी के दिवान अखिलेश यादव ने मौके पर पहुच कर शान्ति व्यवस्था कायम करने को कहा जरूर है लेकिन दबंगों की धमकी के अनुसार पत्रकार एवं उनके परिजनों को उपरोक्त दबंगों से जान मॉल का खतरा बना हुआ है।

लोहे की जालियों और तीन पहिया आटो के साथ तीन चोर धराए भेजे गए जेल

मऊआइमा। नगर पंचायत मऊआइमा में आए दिन नालियों पर से रातों को लोहे की जालियों चोरियों की शिकायत पर मऊआइमा पुलिस ने बाइक लोहे की जालियां और तीन पहिया आटो के साथ सूरज पांडेय पुत्र संतोष कुमार चिलबिला कोतवाली प्रतापगढ़, राघव पांडेय उर्फ अंजलि पांडेय पुत्र संतोष कुमार कमास चिलबिला प्रतापगढ़ और आकाश उमर वैशय पुत्र उमाशंकर ग्राम लाखीपुर कौहडौर प्रतापगढ़ को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

मऊआइमा केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन की बैठक में नारकोटिक दवाओं पर चर्चा हुई

मऊआइमा। मऊआइमा केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन की बैठक थाना पड़ाव चौराहे के समीप हुई। बैठक की अध्यक्षता अब्दुल्ला अंसारी ने किया। बैठक में नारकोटिक दवाओं के सम्बन्ध शासन द्वारा दिए गए दिशा निर्देशकों पर इलाहाबाद केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट के अध्यक्ष अनिल दूबे,महा मंत्री शिवम अग्रवाल ने विस्तुत जानकारी दी तथा खरीद और बिक्री में विस्तार से बताए। बैठक में मेडिकल स्टोर के मालिक और संचालक मोहम्मद कलीम अल्ताफ, मोहम्मद सईद, मोहम्मद तारिक, मोहम्मद अलीम, शिवबाबू, आदिल अब्दुल मलिक, अब्दुल मोमिन, अजय, अच्छे, नौशाद, छेदी, वहाब, नावेद, अदनान, हसीन अहमद, फैसल, बासित, नवाज आलम आदि मौजूद थे।

मेड काटने को लेकर मार पीट आधा दर्जन के खिलाफ क्रास मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मेड काटने को लेकर दो पक्षों में मार पीट कई जख्मी दोनों पक्षों में एक दूसरे के तीन तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम चकश्याम उर्फ पूरे हिंचा निवासी राम किशोर पुत्र राम दुलार का आरोप है कि उसके खेत का मेड विपक्षी काट रहे थे मना करने पर मारा पीटा गया। पुलिस ने मदन लाल, बच्चे लाल, मोतीलाल के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है जबकि दूसरे पक्ष के मदन लाल पुत्र बेचू लाल ने ,बच्चू लाल,सनि राम किशोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

46 गाड़ियों में लगाए गए सामान्य श्रेणी के 92 कोच

प्रयागराज। सामान्य श्रेणी की के यात्रियों को सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से रेलवे ने लंबी दूरी की 46 विभिन्न महत्वपूर्ण गाड़ियों में कोचों की संख्या में विस्तार करते हुए इन गाड़ियों में 92 नए कोच लगाए गए हैं जो सामान्य श्रेणी के हैं। कोचों की संख्या में वृद्धि के लिए 22 दूसरी गाड़ियों को भी चिन्हित किया गया है और उनमें सामान्य श्रेणी के अतिरिक्त कोच लगाने की योजना बनाई गई है। इससे सामान्य श्रेणी में यात्रा करने वाले लोगों को काफी सहूलियत होगी। जिन गाड़ियों में अतिरिक्त कोच लगाने का फैसला लिया गया है उनमें गुवाहाटी बीकानेर एक्सप्रेस, गुवाहाटी बाड़मेर एक्सप्रेस, सिलघाट टाउन ताम्बरम नागौन एक्सप्रेस, गुवाहाटी लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस, गुवाहाटी जम्मू तवी एक्सप्रेस , गुवाहाटी जम्मू तवी एक्सप्रेस, गुवाहाटी ओखा एक्सप्रेस, गुवाहाटी बेंगलुरु सुपरफास्ट एक्सप्रेस, डिब्रूगढ़ लालगढ़ अवध आसाम एक्सप्रेस, वाराणसी इंदौर सुपर फास्ट एक्सप्रेस, काशी महाकाल वाराणसी इंदौर सुपरफास्ट एक्सप्रेस , धनबाद अलप्पुषा. एक्सप्रेस, काठगोदाम देहरादून एक्सप्रेस, जयपुर मैसूर सुपरफास्ट एक्सप्रेस, तिरुपति कोल्लम एक्सप्रेस, हावड़ा सिकंदराबाद फलकनुमा एक्सप्रेस, बेंगलुरु भागलपुर एक्सप्रेस, यशवंतपुर कन्नूर एक्सप्रेस, अजमेर मैसूर एक्सप्रेस, हावड़ा सिकंदराबाद एक्सप्रेस,मैसूर तूतीकोरिन एक्सप्रेस,जोधपुर बेंगलुरु एक्सप्रेस, केसर बेंगलुरु सिटी बेलगामी सुपरफास्ट एक्सप्रेस, चेन्नई सेंट्रल हुबली सुपरफास्ट एक्सप्रेस, बेंगलुरु भागलपुर अंग एक्सप्रेस, बैंगलोर सिटी सांगली रानी चेन्नम्मा एक्सप्रेस, कोटा जंक्शन दानापुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस, कोटा सिरसा एक्सप्रेस, भावनगर बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट एक्सप्रेस, वेरावल जंक्शन मुंबई बांद्रा वेरावल जंक्शन सौराष्ट्र जनता एक्सप्रेस, मुंबई बांद्रा-भुज कच्छ सुपरफास्ट एक्सप्रेस,भुज दादर सायाजी नगरी सुपरफास्ट एक्सप्रेस, मुंबई बेंगलुरु उदयन एक्सप्रेस, मुंबई अमरावती सुपरफास्ट एक्सप्रेस, छत्रपति शिवाजी टर्मिनल नागपुर सेवाग्राम एक्सप्रेस गाड़ियां शामिल हैं। इन सभी गाड़ियों में लगाए गए इन अतिरिक्त कोच से आम लोगों को काफी राहत मिलेगी।

सवारी से भरी अप्पे खड़ी ट्रक के पीछे घुसी दर्जन भर यात्री घायल, कई गंभीर

प्रयागराज, घूरपुर। घूरपुर थाना क्षेत्र के सेमरा कल्बना गांव के डाक बंगला के पास हाईवे पर शुक्रवार की दोपहर बारा से शहर की तरफ से जा रही सवारी से भरी अप्पे खड़ी ट्रक के पीछे घुस गई । अप्पे में सवार दर्जन भर यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए। चीख पुकार मच गई आसपास के लोगों ने घायलों को बाहर निकाला। सूचना पर पहुंची पुलिस घायलों को इलाज के लिए जसरा सी एचसी में भर्ती कराया। घायलों में मो.रफीक पुत्र हनीफ पिपराव थाना बारा, मो. तौफीक पुत्र बुद्धू भड़रा थाना नैनी, अरुण कुमार कुशवाहा पुत्र रामजस कुशवाहा लाला का पूरा बारा, प्रीति पत्नी दयानंद ललई थाना बारा, आकाश पुत्र राजाराम, सत्यभामा पुत्री आकाश, नंदिनी पत्नी आकाश, रहमतुल निशा पत्नी मो नफीस, नजमा बेगम पत्नी मो आयुष, लुवना सिद्दीकी पुत्री आयुष सिद्दीकी, चालक फईम पुत्र मोहम्मद सत्तार, एवं एक माह की दुधमुंही बच्ची प्रज्ञा पुत्री दयानंद सभी गंभीर रूप से घायल हो गए जिसमे नफीस, अरुण कुशवाहा, तौफीक, रहमतुल निशा, लुवना, आकाश, प्रीति एवं चालक फईम की हालत गंभीर देखते हुए प्राथमिक उपचार कर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया वहीं बाकी घायलों का प्राथमिक उपचार कर घर भेज दिया गया।

हाईकोर्ट के वकीलों का कार्य बहिष्कार स्थगित

अखंड भारत संदेश

बार एसोसिएशन का फैसला, कहा-मुख्य न्यायाधीश ने दिया आश्वासन

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिशन का कार्य बहिष्कार शुक्रवार तीसरे दिन भी चला। शाम को इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने ऐलान किया कि वह आगे का कार्य बहिष्कार अब स्थगित करते हैं। बार एसोसिएशन की बैठक के बाद यह निर्णय लिया गया। इलाहाबाद बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल तिवारी का कहना है कि चीफ जस्टिस हाईकोर्ट ने मांगों और परेशानियों को लेकर बार एसोसिएशन को आश्वासन दिया है। ऐसे में इसे स्थागित किया जाता है। अध्यक्ष अनिल तिवारी ने कहा कि अब 29 जुलाई को कार्यकारिणी बैठक कर इस मामले पर आगे निर्णय लेगी।

न्यायमूर्ति के रूप में बार सदस्य का नाम भी प्रस्तावित हो :

अध्यक्ष अनिल तिवारी व अन्य पदाधिकारियों ने मुख्य न्यायाधीश इलाहाबाद हाईकोर्ट से यह आग्रह भी किया है कि ऐसे किसी अधिवक्ता का नाम न्यायमूर्ति के के रूप में प्रस्तावित न करें जो हाईकोर्ट बार एसोसिएशन या फिर अवध बार एसोसिएशन का सदस्य न हो। वकीलों के काम पर लौटने से वादकारियों को बड़ी राहत मिली है।

शाम तक नहीं हुआ अदालतों में कामकाज :

इलाहाबाद हाईकोर्ट में आज शुक्रवार को भी कामकाज ठप रहेगा। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन इस बार कार्य बहिष्कार के मुद्दे पर काफी अडिग और सख्त है। यही वजह है कि इलाहाबाद ल्उ बार एसोसिएशन के पदाधिकारी, सदस्य खुद निगरानी कर रहे हैं कि मजबूती से लड़ाई लड़ी जा सके।तीन दिनों से इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक भी मामले की सुनवाई न होने से हजारों केस लटक गए हैं। हालांकि जस्टिस कोर्ट आ रहे हैं, वह बैठ भी रहे हैं लेकिन उन्हें वापस लौटना पड़ रहा है।

उम्मीद है कोर्ट खुले, होटल-धर्मशाला में ठहरे लोग :

पूरे प्रदेश से आने वाले वादकारी वापस लौट रहे हैं। बहुत सारे वादकारी तो प्रयागराज में ही होटल, धर्मशाला में ठहर गए हैं ताकि एक दो दिन में हाईकोर्ट में सुनवाई शायद हो जाए। इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक दिन में 40 से 50 कोर्ट बैठती है। इन कोर्टों में हजारों केसों की सुनवाई होती है। सुनवाई की लंबी लिस्टिंग की वजह से महीनों तक नंबर ही नहीं लग पाता। ऐसे में जिन परिवारों के मामले हैं वह बेचैन हैं। उम्मीद कर रहे हैं कि कार्य बहिष्कार जल्द से जल्द खत्म हो जाए ताकि उनके मामलों की सुनवाई हो सके।

एक कोर्ट में ही हो जाती है 150 केसों की सुनवाई :

इलाहाबाद हाईकोर्ट में यूं तो 160 न्यायाधीशों के पद हैं। हालांकि जजों की संख्या 94 के करीब ही हैज 126 की संख्या सालों से पूरी नहीं हुई। कभी 112 तो कभी 110 तक रही। कई कई कोर्ट तो ऐसी है जिनमें एक दिन में 100 से 150 केसों की सुनवाई हो जाती है। ऐसे में तीन दिन तक कोर्ट बंद रहने से क्या हाल होगा यह किसी से छिपा नहीं है।

इस बार इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन व्यवस्थाओं और जजों को लेकर काफी गुस्से में है। यही वजह है कि बार एसोसिएशन के अध्यक्ष समेत पदाधिकारी खुलकर बोल रहे हैं। बदलाव के लिए वह मुखर हैं। बैठकों का दौर चल रहा है। वकीलों को पत्र लिखे जा रहे हैं।

दीने मोहम्मद की बका के लिये कर्बला हुई : मेराज महमूद

प्रयागराज। माहे मोहर्रम की पाँचवी को हर वर्षो की भांति इस वर्ष भी वरिष्ठ पत्रकार जैनुल आबदीन निवासी बाबूगंज बाजार के आवास पर कर्बला के बहत्तर जॉ निसारों की याद में मजलिस का इन्काद किया गया। इस वर्ष जुमा के दिन पांचवी मोहर्रम पर भी शहीदानें करबला की याद में मजलिस का इनकाद किया गया। जिसमें भदोही से पधारें हाफिज मेराज महमूद ने कर्बला में शहादत पेश करने वाले बहत्तर को खेराज अकीदत पेश करते हुये कहा कि मेराज में हमारे आका सल्लल्लाहो हो वलय वसलम को जो तोहफा मिला था रोजा, नमाज,हज,जकात उसकी परवरिश नशोनुमा के लिये हुसैन अ. स. दुनिया में तशरीफ लाये। नाना के दीन को बचाने और उसको नशोनुमा हेतु हुसैन ने कर्बला में यजीदी फौज के सामने घुटने नहीं टैके न ही बैयत कुबूल की बादशाह यजीद ने हर ढंग से हुसैनी घराने पर बैयत का दबाव बनाया। करबला में खाना पानी पर पहरा कर दिया गया।परन्तु हुसैन ने घुटने नहीं टेके और जंग मैं यजीदी फीजों के हाथो शहीद कर दिये गये। इमाम हुसैन ने शहीद होकर नाना के दीन को बचा लिया। आज हुसैन के नाम सारी दुनिया में है जबकि यजीद का नामो निशान मिट गया। मजलिस मे मौजूद,कारी मोहम्मद हुसैन,हाफिज गुलाम मोहम्मद,हाफिज मोहम्मद वारिस, ने नात व मनकबत पेश।इस मौके पर हाफिज हाजी अब्दुल खालिक, अली अहमद हाशमी पत्रकार,मोहम्मद मोबीन हाशमी,मोहम्मद असहाल मलावा शादाब, मोहम्मद सैफ हाशमी,नेहाल अंसारी, सुम्बुल, मोहम्मद मसूद आदि लोग उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ने जारी किया हेल्पलाइन नंबर, प्रवेश संबंधित जानकारी के लिए छात्र छात्राएं कर सकते हैं कॉल

प्रयागराज। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ने छात्र-छात्राओं की सहूलियत के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। एडमिशन-2024 के डायरेक्टर प्रोफेसर जयंत कुमार पति ने बताया कि यूनिवर्सिटी में स्नातक एवं परास्नातक में प्रवेश संबंधित जानकारी के लिए छात्र हेल्पलाइन नंबर 9453852490 पर कॉल कर सकते हैं। प्रत्येक कार्य दिवस पर सुबह 10 बजे से शाम 4:30 बजे तक हेल्पलाइन नंबर सक्रिय रहेगा।

शिक्षिकाओं व छात्राओं के लिए आई 2 नई बसें : विश्वविद्यालय द्वारा 2 नई बस खरीदी गई है। इन दोनो बसों को शहर के विभिन्न रूट पर विशेष रूप से शिक्षिकाओं एवं छात्राओं की सुविधा के लिए चलाया जाएगा। इससे विश्वविद्यालय की शिक्षिकाओं एवं छात्राओं को विश्वविद्यालय आने-जाने के लिए सुरक्षित परिवहन मिल सकेगा। बस की सुविधा लेने के लिए पास की व्यवस्था होगी। सप्ताह के अंत के दिनों में ये बसें विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के द्वारा चलाए जाने वाले आउटरीच गतिविधियां के लिए इस्तेमाल में लाई जा सकेंगी। यह जानकारी विश्वविद्यालय की पीआरओ प्रो. जया कपूरा ने दी है।

श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर में कैबिनेट मंत्री के पुनर्जन्म पर की गई पूजा अर्चना

नैनी। नैनी अरैल में श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर में भाजपा के कार्यकताओं ने पूजा अर्चना किया कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी का पुनर्जन्म के शुभ अवसर पर भाजपा कार्यकताओं ने किया पूजन अर्चन भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा महानगर उपाध्यक्ष पूर्व कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख संजय श्रीवास्तव का अध्यक्षता में उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी के जन्म दिन के अवसर पर पूजा अर्चना करके उनके दीघार्यु होने की कामना की एवं सोमेश्वर नाथ मंदिर भोलेनाथ के दरबार में रुद्राभिषेक करके कैबिनेट मंत्री के उम्र भोलेनाथ और बढ़ाएं इसके लिए भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा नैनी मंडल अध्यक्ष नीरज शर्मा संयोजक सुनील विश्वकर्मा महामंत्री उमेश सेन नित्यानंद मिश्रा रमेश पटेल धर्मराज पटेल बाबूजी यादव धीरज यादव वह कार्यकर्ता मौजूद थे।

तमंचे के बल पर दुकान में लूट कर व्यापारी को अगवा करने की कोशिश

झूंसी। सहसो अंदावा मार्ग पर स्थित रहिमापुर में शुक्रवार की दोपहर दिनदहाड़े कार सवार बदमाश मिठाई की दुकान से नकदी व मोबाइल लूटकर कर व्यापारी को अगवा करने की कोशिश की पूरा मामला दुकान में सीसी टीवी में कैद हुआ है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस मामले की जांच कर रही है। रहिमापुर निवासी राजेश कुमार यादव ने गांव के बाहर बाजार में यादव स्वीट हाउस के नाम से मिठाई की दुकान खोल रखी है। शुक्रवार की दोपहर दुकान पर उसके मामा लल्लन प्रसाद यादव निवासी मलिया का पूरा थरवई बैठा था। तभी कार पर सवार कुछ लोग दुकान पर पहुंचे और तमंचा तानकर जबरदस्ती काउंटर से 22 हजार रुपया निकाल लिया। विरोध करने पर बदमाशों ने मामा का मोबाइल छीन लिया और घसीटकर कार में बैठा लिया। शोर सुनकर आस-पास के लोग पहुंचे और कार सवारों का पीछा करने लगे। पकड़े जाने की डर से उन लोगों ने लल्लन को कार से उतारकर भाग गए। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है। घटना सही होने पर कार्रवाई की जाएगी।

जल जीवन मिशन द्वारा प्रशिक्षणों उपरांत वितरित किया गया किट

सोरांव। स्थानीय तहसील क्षेत्र के विकास खंड श्रृंगवेरपुर धाम में शुक्रवार को जल जीवन मिशन योजना के तहत प्रत्येक ग्राम पंचायत से नौ लोगों जिसमें आशा, एएनएम, आंगनवाड़ी कार्यकत्री, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, समूह सखी महिलाओ को किट वितरण किया गया। जानकारी के अनुसार गुरुवार को जल जीवन मिशन के कर्मचारियों और पदाधिकारियों द्वारा लोगों को प्रशिक्षण दिलाया गया था। जिसके क्रम में शुक्रवार को विकास खण्ड श्रृंगवेरपुर के बायो वेद रिसर्च इंस्टीट्यूट भगवतीपुर में किट वितरण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीजेपी विधायक गुरु प्रसाद मौर्य रहे। मुख्य अतिथि ने उपस्थित सभी लोगों को बताया कि पानी जीवन के लिए बहुत ही जरुरी है। इस लिए सभी प्रशिक्षण प्राप्त लोग अपने अपने क्षेत्रों में जाकर शुद्ध और साफ पानी पीने के लिए जागरूक करें। इतना ही नहीं जीवन को सही प्रकार से जीने के लिए पानी की बबार्दी को रोकने की भी बात कही। विधायक ने कहा कि यह योजना प्रधानमंत्री की स्वर्णिम योजना है। ग्राम पंचायत स्तर पर सभी लोगों को जागरूक करने के लिए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम करने के पश्चात किट वितरण का सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि पानी का शुद्धिकरण करके लोगों को जागरूक करें। मिशन का यह प्रशिक्षण और किट वितरण कार्यक्रम मेरा पथ एजुकेशन लिमिटेड द्वारा किया गया। जिसमें मुख्य रूप से अभिषेक शुक्ला, शिवाजी राठौर,ओमप्रकाश, सुभाष चंद्र,पंकज, सुशील कुमार, चंद्र शेखर आजाद, प्रमोद पटेल,मोनिका,सिमरन, मयंक यादव आदि लोग मौजूद रहे।

एडगर दान पर प्रिंसिपल ने दर्ज कराया एक और केस

मुकदमा वापसी के लिए धमकी देने का आरोप

प्रयागराज। जॉनसन गर्ल्स स्कूल में प्रिंसिपल पद को लेकर हुए विवाद के मामले में डायोसिस ऑफ लखनऊ के बिशप मोरिस एडगर दान के खिलाफ एक और मुकदमा दर्ज कराया गया है। यह मुकदमा कॉलेज की निवर्तमान प्रिंसिपल पारुल सोलोमन की ओर से दर्ज कराया गया है। इसमें मुकदमा वापस लेने के लिए दबाव बनाने, पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी, पीछा करने, डराने और तरह-तरह की धमकी देने का मुकदमा कर्नलगंज थाने में दर्ज कराया गया है। थाने में मोरिस एडगर दान, एलन दास, अभिषेक बराट, आरची तिमुथी, अभिषेक व्यास, आरके सिंह सहित अन्य लोगों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया गया है। आरोप है कि नामजद आरोपियों में कई लोगों का आपराधिक इतिहास है। बता दें कि दो जुलाई को कॉलेज पर कब्जे को लेकर काफी विवाद हुआ था। विशप एडगर दान की मौजूदगी में कई लोगों ने प्रिंसिपल के कमरे का दरवाजा तोड़कर अंदर कब्जा कर लिया था। कक्ष में मौजूद प्रिंसपल पारुल के साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया। वायरल वीडियो में वह डोंट टच कहते हुए चीखती नजर आ रही हैं। बिशप ने नए प्रिंसिपल शर्ली मसीह को जबरन चार्ज दिलवा दिया। पारुल इसका विरोध करती रहीं। बिशप की मौजूदगी में उन्हें कुर्सी से धकेलकर हटा दिया गया और उनका मोबाइल छीनने का प्रयास किया गया था। इस मामले में पारुल ने मुकदमा दर्ज कराया था।

नोडल अधिकारी ने जनपद भ्रमण के दूसरे दिन भी रेन वाटर हार्वेस्टिंग से सम्बंधित कार्यों का किया स्थलीय निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जल शक्ति अभियान कैच द रेन-2024 के तैयारियों के लिए भारत सरकार से आये हुए नोडल अधिकारी शोभित गुप्ता तथा उनके साथ आये टेक्नीकल ऑफिसर डा0 रंजीत कुमार के द्वारा जनपद भ्रमण कार्यक्रम के तहत दूसरे दिन शुक्रवार को जनपद में कराये गये कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया गया। नोडल अधिकारी द्वारा सर्वप्रथम होलागढ़ विकास खण्ड में लघु सिंचाई विभाग द्वारा निर्मित चक डैम, सहसो विकास खण्ड में स्मृति वाटिका, स्मृति वाटिका बिगगिया, स्मृति वाटिका पाली का निरीक्षण किया गया। तत्पश्चात पाली में उच्च प्राथमिक विद्यालय का भी औचक निरीक्षण किया गया, जिसमें रूफ टाफ रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगा हुआ पाया गया। नोडल अधिकारी के द्वारा वहां पर साफ-सफाई हेतु निर्देशित किया गया। सहसों में लघु सिंचाई द्वारा निर्मित ग्राम पंचायत जगबन्धनपुर में तालाब के जीर्णोद्धार के बंधे पर बनाये जा रहे रिंग रोड को एनएच-4 के द्वारा ठीक करा लिए जाने के लिए कहा गया है। नोडल अधिकारी के द्वारा निरीक्षण के बाद जल संरक्षण से सम्बंधित अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए कार्यों में पायी गयी कमियों को 15 दिन के अंदर ठीक कराये जाने का निर्देश दिया गया है। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार सहित अन्य सम्बंधित अधिकारी गण उपस्थित रहे।

जिला कोर्ट में जयराम रमेश तलब

आरोपों पर उत्तर देने के लिए बुलाया, अमित शाह पर की थी टिपप्णी

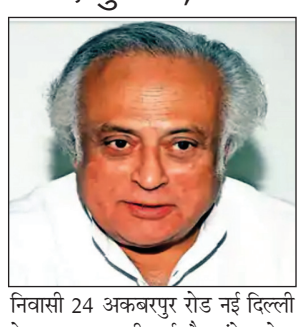

प्रयागराज। प्रयागराज जिला कोर्ट ने कांग्रेस नेता जयराम रमेश को 23 जुलाई को पेश होकर जवाब देने को कहा है। जयराम रमेश ने 1 जून को एक बयान जारी कर कहा था-'गृहमंत्री अमित शाह जिला 150 कलेक्टर्स को फोन किया है। वो कह रहे हैं कि सारे परिणाम भाजपा के पक्ष में ही आने चाहिए।'इस मामले में जिला न्यायालय ने कांग्रेस नेता जयराम रमेश को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। एसीजेएम-7 की ओर से जयराम रमेश के लिए जारी नोटिस में कहा गया है कि सुशील कुमार बनाम जयराम मामले में 23 जुलाई 2024 को उपस्थित हों, ऐसा अपराध के आरोप के उत्तर देने के लिए आवश्यक है।

नोटिस धारा 68, अनुसूची 5, प्रपत्र संख्या 1 के तहत : कांग्रेस नेता को यह नोटिस धारा 68, अनुसूची 5, प्रपत्र संख्या 1 के तहत भेजी गई है। नोटिस जयराम रमेश पुत्र सीके रमेश निवासी 24 अकबरपुर रोड नई दिल्ली के नाम पर जारी हुई है।कांग्रेस नेता जयराम रमेश के खिलाफ इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ता सुशील कुमार मिश्र ने वाद दायर किया था। जिसके आधार पर कोर्ट ने आपराधिक मुकदमा दर्ज किया था। अब नोटिस जारी कर कांग्रेस नेता से जवाब मांगा गया है।मामले की अगली सुनवाई 23 अगस्त को होगी। जयराम रमेश के खिलाफ वाद दायर करने वाले वकील सुशील मिश्र का कहना है कि उन्होंने चुनाव आयोग को भी पत्र भेजा था।जब चुनाव आयोग ने कोई कार्रवाई नहीं की तो उन्होंने जयराम रमेश के खिलाफ फौजदारी का केस दाखिल किया। उनका कहना है कि जयराम रमेश ने झूठा, फर्जी बयान जारी कर देश का माहौल खराब किया था। असल में जयराम रमेश ने एक जून को एक बयान जारी कर कहा था कि गृहमंत्री अमित शाह जिला कलेक्टर्स को फोन पर धमकी दे रहे हैं। परिणाम भाजपा के पक्ष में लाने के लिए वह 150 से अधिक कलेक्टर को फोन कर चुके हैं।उनका यह बयान उनके आधिकारिक ट्विटर अब (एक्श) पर भी पोस्ट किया गया था। जयराम रमेश ने अमित शाह के इस कृत्य को शर्मनाक बताया था।इस बयान के खिलाफ भाजपा विधि प्रकोष्ठ के सह संयोजक सुशील कुमार मिश्र ने कोर्ट में वाद दाखिल किया था, जिसके आधार पर मुकदमा दर्ज किया गया था। कोर्ट ने कांग्रेस नेता को नोटिस जारी किया है।

नैनी पुलिस ने 15 मोबाइल के साथ शातिर चोर को किया गिरफ्तार

नैनी। नैनी कोतवाली प्रभारी निरीक्षक यशपाल सिंह के कुशल नेतृत्व में गठित पुलिस टीम द्वारा एक शातिर मोबाइल चोर को शुक्रवार को गिरफ्तार किया गया। उसके कब्जे से कई कंपनियों के पंद्रह मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार नैनी पुलिस को शुक्रवार को मुखबिर के जरिये सूचना मिली कि एक संदिग्ध युवक यीशू दरबार तिराहे थाना नैनी पर टहल रहा है। सूचना पर पहुँची नैनी पुलिस ने युवक से पूछताछ की पूछताछ में युवक अपनी पहचान ओम कुमार (19) पुत्र धर्मवीर हरिजन निवासी सकरी गली पोस्ट साहेबगंज थाना ताल इनाडी जिला साहेबगंज झारखण्ड बताया। उसके बाद पुलिस ने उसकी तलाशी ली जिसके बाद उसके बैग में कई कंपनियों के मोबाइल फोन बरामद किए गए। उसके बाद उस शातिर चोर को थाने लाकर उक्त गिरफ्तारी बरामदगी के आधार पर उसके खिलाफ सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया गया। उसके बाद अग्रिम विधिक कार्यवाही की गई।

एण्ड टीवी प्रस्तुत करता है भीमा

भीमा नामक लड़की पर आधारित यह सोशल ड्रामा समानता के मुद्दे को दर्शाएगा

प्रयागराज। एण्डटीवी का नया शो भीमा 1980 के दशक पर आधारित है। राज खत्री प्रोडक्शंस ने इसका निर्माण किया है। इसमें भीमा नाम की एक लड़की की कहानी दिखाई गई है जो किसी दूसरी जाति से ताल्लुक रखती है। यह एक लड़की की दुविधा और समान अधिकारों को लेकर उसके सफर को दिखाता एक सोशल ड्रामा है। दर्शकों को शो में इस लड़की के साहसिक सफर की कहानी देखने को मिलेगी, जिसमें वह अपने परिवार, समाज और आर्थिक हालातों से उपजी मुश्किलों का सामना करती नजर आती है। काफी अन्याय और भेदभाव झेलने के बावजूद, वह बड़ी ही बेबाकी से उन परेशानियों को पीछे छोड़ देती है। ढेर सारी चुनौतियों के बावजूद भारतीय संविधान के निमार्ता डॉ. बी आर आम्बेडर के कानूनों और आदर्शों को बनाए रखना भीमा के अटूट विश्वास को दिखलाता है। इतनी छोटी-सी उम्र में उसने खुद को इस मिशन के नाम समर्पित कर दिया। समाज का प्रभावी तबका उसके काम से घबराकर पूरी ताकत से एकजुट होकर उसकी कोशिशों को विफल करने का प्रयास करता है। इतनी बड़ी रुकावट के बावजूद भी भीमा बिलकुल नहीं घबराती तथा अपनी कोशिशें और तेज कर देती है। भीमा का प्रीमियर 6 अगस्त, 2024 को रात 8:30 बजे एण्डटीवी पर किया जाएगा।

प्रमुख सचिव, नगर विकास ने किया विभिन्न विभागों द्वारा कराए जा रहे कार्यों के प्रगति की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

महाकुंभ 2025 के दृष्टिगत : प्रमुख सचिव ने कार्यों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समयसीमा में अनिवार्य रूप से पूर्ण कराये जाने के दिए निर्देश, तथा कार्यों की गुणवत्ता की जांच थर्ड पार्टी से नियमित रूप से कराने के लिए कहा

प्रयागराज। महाकुंभ 2025 की दिव्यता एवं भव्यता को बढ़ाने के दृष्टिगत विभिन्न विभागों द्वारा कराए जा रहे कार्यों की समीक्षा शुक्रवार को प्रमुख सचिव, नगर विकास, अमृत अभिजात की अध्यक्षता में आयुक्त कार्यालय स्थित गांधी सभागार में संपन्न हुई। बैठक में प्रमुख सचिव ने सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय में कार्य को अनिवार्य रूप से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा है कि सभी विभागों का कार्य 31 अक्टूबर तक अनिवार्य रूप से पूर्ण हो जाये। उन्होंने कराये जा रहे कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिए जाने के लिए कहा। प्रमुख सचिव ने कार्यों की गुणवत्ता की जांच थर्ड पार्टी से नियमित रूप से कराने एवं जांच की रिपोर्ट के अनुसार कार्य कराये जाने के लिए कहा है। बैठक में सर्वप्रथम मेलाधिकारी विजय किरण आनंद ने अभी तक कराए गए कार्यों की लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति एवं उनमें आ रही समस्याओं के बारे में अवगत कराया जिसके पश्चात कार्यों की विभागवार समीक्षा की गई। सेतु निगम द्वारा कराए जा रहे कार्यों की समीक्षा के दौरान प्रमुख सचिव ने सभी शेष कार्यो को ससमय एवं गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराने के निर्देश देते हुए नए एवं पुराने ब्रिजेज पर लगे हुए जॉइंट्स के कारण आवागमन में लग रहे झटकों को कम करने के दृष्टिगत संबंधित अधिकारियों को यथासंभव जो भी निराकरण किए जा सकते हैं उन्हें करने के निर्देश दिए। प्रयागराज विकास प्राधिकरण द्वारा कराये जा रहे कार्यों की प्रगति धीमी पाए जाने पर उन्होंने असंतोष व्यक्त किया तथा मैनपावर बढ़ाते हुए शेष कार्य अतिशीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। यह अवगत कराए जाने पर कि प्राधिकरण में जेई एवं एई की संख्या कम होने के कारण कार्य कराने में कठिनाई आ रही है उन्होंने अपेक्षित संख्या में जेई एवं एई को अति शीघ्र डिप्यूट करने का आश्वासन दिया तथा मण्डलायुक्त से कहा कि जब तक जेई एवं एई नहीं भेजे जाते हैं तब तक अन्य विभागों से जेई एवं एई को सम्बद्ध कर लिया जाए ताकि किसी भी सूरत में कार्य की प्रगति धीमी न होने पाये। इसके अतिरिक्त उन्होंने हर साईट पर कितने लेबर हैं इसकी डेली रिपोर्ट बनाते हुए थर्ड पार्टी एजेंसी से आवश्यकतानुसार कॉन्ट्रैक्टर्स की वर्कशॉप कराने के निर्देश दिये जिससे कि जानकारी के अभाव से कहीं भी गुणवत्ता में कोई कमी न आए। इसी क्रम में उन्होंने नगर निगम द्वारा बनाई जा रही सड़कों पर सीआरआरआई गाइडलाइंस के अनुसार सड़क बनाने में प्लास्टिक का यूज करने का भी सुझाव दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि आज कल सड़क बनाने में वृहद स्तर पर प्लास्टिक का इस्तेमाल किया जा रहा है अतः यहां भी नगर निगम को इस दिशा में कार्य करना चाहिए। सड़कों में आवागमन को स्मूथ बनाने के दृष्टिगत उन्होंने टेबल टॉप वाले स्पीड ब्रेकर्स लगाने, सौन्दर्यीकरण के दृष्टिकोण से डिवाइडर्स पर मौसम के अनुकूल पेड़ लगाने तथा हर सड़क पर पानी निकासी हेतु ड्रेनेज की व्यवस्था करने के निर्देश दिए। जल निगम द्वारा कराए जा रहे कार्यों की समीक्षा के दौरान प्रमुख सचिव ने कहा कि जहां पर सीवर लाइन बिछी हुई है, वहां पर प्रत्येक घरों का कनेक्शन सीवर लाइन से अनिवार्य रूप से जोड़ने की कार्यवाही सुनिश्चित करा ली जाये। उन्होंने कहा कि जनपद में जहां भी सीवर कनेक्शन हो सकता है एवं नहीं है, वहां पर यथासम्भव सीवर कनेक्शन देने का प्रयास करने के निर्देश दिए। साथ ही कुम्भ मेले के दौरान पाइप लीकेज की समस्या के निराकरण हेतु जल निगम के संबंधित अधिकारियों को पाइप लीकेज के चिन्हांकन हेतु टेक्नोलॉजी का यूज करने के निर्देश दिए तथा इस दिशा में एक कार्ययोजना बनाने को कहा। स्वास्थ्य विभाग द्वारा कराए जा रहे कार्यों की समीक्षा के दौरान उन्होंने स्वास्थ्य विभाग की तत्परता को परखने हेतु पुलिस एवं अन्य संबंधित विभागों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए समय समय पर मॉकड्रिल कराने के निर्देश दिए, जिससे कि इतनी भारी मात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं हेतु स्वास्थ्य विभाग की तैयारी का सही आंकलन लगाया जा सके। उन्होंने इस दिशा में एक एसओपी तैयार करने के भी निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। मंदिरों के जीर्णोद्धार एवं सौंदर्यीकरण के दृष्टिगत उन्होंने सभी मंदिरों पर फसाड लाइटिंग पर विशेष ध्यान देने को कहा। साथ ही सावन के दृष्टिगत मनकामेश्वर मंदिर में चल रहे कार्यों की वजह से श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की असुविधा न हो इसके दृष्टिगत सावन शुरू होने से पूर्व सकुर्लेटिंग एरिया क्लियर करने तथा वहां कराए जा रहे सभी कार्यों की डेली मॉनीटरिंग कराने के निर्देश दिए। इस अवसर पर मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत, आईजी प्रेम कुमार गौतम, जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल, पीडीए उपाध्यक्ष अरविंद चौहान, एसएसपी कुम्भ मेला सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

यूटा ने किया डिजिटल उपस्थिति का बहिष्कार

सभी संगठन मिल कर किए सयुक्त मोर्चा का गठन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बिना भौतिक स्थिति का व्यवहारिक अध्ययन किये मात्र शिक्षकों के मानसिक शोषण के उद्देश्य से शिक्षकों व छात्रों की डिजिटल हाजिरी लेने के आदेश से खफा शिक्षक संगठन यूनाइटेड टीचर्स एसोसिएशन (यूटा) ने शासन के इस आदेश को तुगलकी फरमान बताते हुए डिजिटल उपस्थिति का पूर्ण बहिष्कार का ऐलान किया है।

संगठन के जिलाध्यक्ष मुकेश कुमार दुबे ने कहा कि डिजिटल

डिजिटल उपस्थिति का बहिष्कार करते शिक्षकगण।

उपस्थिति से पूर्व शिक्षकों की लंबित समस्याओं का निस्तारण किया जाए। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को अन्य कर्मचारियों की भाँति वर्ष में 30 ईएल व अर्द्धअवकाश दिए जाएं इसके अतिरिक्त आँधी-तूफान, बरसात, बाढ़, जाम एवं धार्मिक व राजनैतिक आयोजनों को लेकर मार्ग अवरुद्ध, नेटवर्क में बाधा जैसी आपात स्थिति में डिजिटल उपस्थिति से छूट प्रदान की जाए तथा चार दिन के लेट पहुंचने पर एक दिन का आकस्मिक अवकाश समायोजित किया जाए, महामंत्री नीरज कुमार सिंह ने कहा की इसके अतिरिक्त प्रत्येक विद्यालय में स्थाई एक सफाईकर्मी व एक ट्रेंड कम्प्यूटर ऑपरेटर/लिपिक की नियुक्ति की जाए, इंचार्ज प्रधानाध्यापकों को उनके कार्य की एवज में प्रधानाध्यापक पद का वेतनमान दिया जाए इसके साथ ही दशकों पुरानी शिक्षकों के वार्षिक स्वैच्छिक स्थानांतरण व प्रमोशन की सुविधा नियमित सुचारू रखे जाएं और शिक्षकों को गैर शिक्षण कार्यों यथा बीएलओ ड्यूटी, विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण व गणना से मुक्त किये जाने हेतु स्पष्ट निर्देश निर्गत किया जाए। संगठन के पदाधिकारियों ने कहा कि जबतक शिक्षकों की उक्त मांगों का निस्तारण नहीं किया जाता है तब तक प्रदेश के किसी भी जनपद के शिक्षक, शिक्षामित्र व अनुदेशक कदापि डिजिटल हाजिरी नहीं देंगे।

यूटा संघ कोषाध्यक्ष अहमद हसन ने शिक्षकों से अपील की है कि वे आगामी पूरे सप्ताह काली पट्टी बांधकर विरोध दर्ज कराएं और संगठन के जिला नेतृत्व के द्वारा घोषित कार्यक्रम के अनुसार जनपद मुख्यालय पर प्रदर्शन कर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिलाधिकारी एवं जनप्रतिनिधियों को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन देने के कार्यक्रम में अधिसंख्य स्थिति में प्रतिभाग करें। संगठन के संगठन मंत्री आशीष मिश्र, ने कहां की प्रदेश स्तर से लेकर जनपद स्तर तक सभी शिक्षक संगठनों का एक संयुक्त मोर्चा बनाया गया है और एक बैनर की तरह हम लोग आंदोलन को गति प्रदान करेंगे, शासन प्रशासन विभाग चाहे जितना भी प्रयास कर ले हम लोग ऑनलाइन उपस्थिति नहीं देंगे नहीं देंगे।

आनलाईन हाजिरी पर सरकार अपनाये समान दृष्टिकोण अन्यथा होगा विरोध

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। आल इण्डिया रूरल बार एसोशिएसन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों के आनलाईन हाजिरी के फरमान को लेकर मानसिक उत्पीड़न की विभागीय पहल पर रोक लगाने की मांग की है। उन्होनें कहा कि एक तरफ देश में एक देश एक चुनाव और समान नागरिक संहिता की बात की जा रही है तो ऐसे में आनलाईन हाजिरी सिर्फ परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों मात्र पर थोपा जाना भेदभावपूर्ण सरकारी आचरण प्रदर्शित करता है। उन्होनें पत्र में सीएम योगी आदित्यनाथ से कहा है कि तहसील में कार्यदिवस पर भी लेखपाल और ब्लाकों में ग्राम विकास अधिकारी तथा कलेक्टेट्रट व विकास भवन समेत जनता की समस्याओं से जुड़े विभागों में अफसर व कर्मचारी ढूढ़े नही मिल पाया करते हैं। उन्होने कहा कि ऐसे में सरकार आखिर इन अधिकारियों एवं कर्मचारियों की दिन में दो बार आनलाईन हाजिरी सम्बन्धित कार्यालयों या कार्यस्थलों से क्यूं नही ले पा रही है। उन्होनें कहा कि परिषदीय विद्यालयों में सरकार अभी तक संसाधनों को भी पूरा नही कर सकी है। उन्होने कहा कि पहले सरकार इन विद्यालयों के अंदर मूलभूत आधारगत ढ़ांचा तैयार करे। रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने यह भी कहा है कि इन शिक्षकों के ही साथ यदि सरकार तुगलकी फरमान पर अमादा रही तो उनका संगठन जरूरत पड़ने पर सक्षम विधिक याचिका भी दायर करेगा। वहीं उन्होनें कहा कि जरूरत पड़ने पर एसोशिएसन शिक्षकों की मांगों के समर्थन में उनके हर आवश्यक संघर्षो में बराबर की सहभागिता निभायेगा।

जमीन की रंजिश में हुई मारपीट, आधा दर्जन से अधिक पर केस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने जमीनी रंजिश में हुई मारपीट की घटना को लेकर आधा दर्जन से अधिक लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के कटरा बलीपुर इनहन गांव की सुमित्रा देवी पत्नी कामता प्रसाद ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि एक जुलाई को जमीन की रंजिश में गांव के राम नरेश, प्रेमकुमार, प्रदीप कुमार, लीलावती पत्नी रामनरेश, किरन पुत्री रामलाल, सोनी पुत्री रामनरेश कुछ अज्ञात लोगों के साथ उसके दरवाजे पर पहुंचे। गालीगलौज करते हुए घर में घुसकर परिवार के लोगों को लाठी डण्डे से जमकर मारापीटा व जान से मारने की धमकी दी। जांच के बाद पुलिस ने आधा दर्जन से अधिक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

पुरानी पेंशन बहाली को रेल कर्मियों ने दिया धरना-प्रदर्शन

एसएस दफ्तर के सामने एकत्र हुए रेल कर्मी, की नारेबाजी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एनसी, जेसीएम के संयोजक कामरेड शिव गोपाल मिश्र के आह्वान पर पुरानी पेंशन बहाली योजना की मांग को लेकर रेल कर्मियों ने शुक्रवार को धरना प्रदर्शन किया। मेंस यूनियन के शाखा मंत्री अनिल शुक्ला की अगुवाई में रेल कर्मियों ने जुलूस निकाल कर नारेबाजी की।

एसएस दफ्तर के सामने प्रदर्शन किया। मंत्री अनिल शुक्ला ने कहा कि केंद्र सरकार से पुरानी पेंशन योजना को पुनः

मांगों को लेकर प्रदर्शन करते रेल कर्मी।

बहाल करने की मांग की जाती है। साथ ही एक जुलाई 2004 से लागू नई पेंशन योजना को समाप्त करने की मांग की गई। अध्यक्षता मो. शफीक ने संचालन उपाध्यक्ष मो.अनीश ने किया। धरने में अजय आनंद, संजय डोंगरा, संतोष तिवारी, धीरज सिंह, अजय, मुन्ना, राकेश, रामसूरज, बुद्धिराम, जितेंद्र, एके सिंह, केएन मिश्रा, रईस, प्रभात,विशाल समेत काफी संख्या में कर्मचारी मौजूद थे।

जिले ने स्थापित किया एलीट वर्ल्ड रिकॉर्ड

एक माह में बनाये गये 2017 खेत-तालाब

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला ग्रामीण विकास विभाग ने जिले के 17 ब्लॉकों, जिसमें 1,148 ग्राम पंचायतें में किसानों के लिए 2017 खेत तालाब स्थापित करने का विश्व रिकॉर्ड स्थापित करके एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इस पहल में शामिल श्रमिकों को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (एमजीएनआरईजीएस) के तहत कवर किया गया था, जिससे 30 दिनों से अधिक का निरंतर रोजगार सुनिश्चित हुआ। इस उपलब्धि को एलिट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा 30 दिनों में एकाधिक स्थानों पर बनाए गए

जिलाधिकारी को एलीट वर्ल्ड रिकॉर्ड का खिताब देते अधिकारी।

सर्वाधिक खेत तालाब की श्रेणी में प्रमाणित किया गया है।

जिला मजिस्ट्रेट संजीव रंजन के अनुसार, उत्तर प्रदेश में मानसून की शुरुआत से पहले भूजल क्षमता में सुधार करने की गंभीर प्रतिबद्धता के साथ हमने कुल परियोजना लागत के साथ 0.91 लाख रुपये की इकाई लागत पर 17 ब्लॉकों में 2017 खेत तालाब बनाने का फैसला किया। मनरेगा के तहत 12 जून से 11 जुलाई 2024 तक 30 दिनों के भीतर 18.51 करोड़ रुपये लगा। जिला मजिस्ट्रेट ने आगे बताया कि गर्मी के महत्वपूर्ण महीनों के दौरान किसानों के सामने आने वाली पानी की कमी की समस्याओं को दूर करने के लिए शुरू की गई पहल में प्रत्येक खेत तालाब का सावधानीपूर्वक विनिर्देशों के अनुसार निर्माण करना शामिल है। मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहरा ने विशेषकर गर्मियों के दौरान, प्रतापगढ़ जैसे जिलों में कृषि के लिए पानी की गंभीर कमी पर प्रकाश डाला। एलीट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के राजदूत और वरिष्ठ निर्णायक अमीत के0 हिंगोरानी ने कहा कि हमें इस परियोजना को एक नए विश्व रिकॉर्ड के रूप में प्रमाणित करते हुए खुशी हो रही है। एलीट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के राजदूत और वरिष्ठ निर्णायक डॉ. सत्यश्री केदारशेट्टी ने किसानों के बीच आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और जलवायु परिवर्तनशीलता के प्रति कृषि उपज की संवेदनशीलता को कम करने के प्रयासों के लिए परियोजना की सराहना की। प्रशस्ति समारोह के दौरान एलीट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के निर्णायक भावना राजेश, रक्षिता आर., और राजेश ए.एन. भी उपस्थित थे।

एसपी ने चौकी इंचार्ज सहित चार आरक्षी को किया निलंबित

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के रामगंज बाजार में किराए के एक मकान में अवैध रूप से पटाखा बनाने व बेचने और मकान में विस्फोट हो जाने से घटित घटना में मकान के क्षतिग्रस्त हो जाने व किशोरी के घायल हो जाने के प्रकरण में आसपुर देवसरा थाने में अभियोग पंजीकृत कर दो आरोपियों को जेल भेज दिया गया और चैकी इंचार्ज सहित चार आरक्षियों को एसपी ने निलंबित कर विभागीय कार्यवाही के लिए सम्बद्ध कर दिया। बता दें कि बीते सप्ताह शुक्रवार को रामगंज बाजार के एक मकान में विस्फोट हो जाने के कारण मकान क्षतिग्रस्त हो गया और एक किशोरी घायल हो गई। मामले में एसपी प्रतापगढ़ एक्शन मोड में आ गए और अवैध रूप से मकान में विस्फोटक सामग्री रखने और पटाखा बनाने व बेचने वाले सोल्जर पुत्र नन्हे व नन्हे की पत्नी के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया गया। एसपी ने मामले में कड़ा रुख दिखाते हुए चैकी क्षेत्र में अवैध रूप से विस्फोटक पदार्थ रखने और पटाखे बनाकर बेचने के संबंध में चैकी इंचार्ज और आरक्षियों द्वारा सूचना दर्ज न कराने के संबंध में चैकी इंचार्ज राजेश कुमार, आरक्षी अजय यादव, आरक्षी मुकेश गुप्ता, आरक्षी मन्नू व आरक्षी राम निवास यादव को निलंबित कर विभागीय कार्यवाही के लिए पुलिस लाइन सम्बद्ध कर दिए।

जलसंरक्षण के लिए बन रहे फार्म पांड तालाब का अधिकारी ने किया निरीक्षण

शासन स्तर से आये अधिकारी ने आठ तालाबों का लिया जायजा

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। गांवों में जिस तरह से जलस्तर घट रहा है और तालाबो कों अतिक्रमण करके उस पर मकान व खेती किया जा रहा है जिससे किसानों की खेती बाड़ी के लिए पानी की जरूरत नहीं पूरा हो पा रही है। ऐसे में सरकार की मंशा के अनुरूप गांवो का पानी फार्म पांड योजना में एकत्रित कर फिर से खेत की सिंचाई की जा सकती है सिंचाई जल समाधान के लिए वर्षा जल संचय समाधान के लिए कृषि विभाग द्वारा प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना व राज्य योजना के तहत कच्चा एवं प्लास्टिक लाइनिंग फार्म पांड विकास खंड कालाक़ांकर में बनाए जा रहे हैं।

जल संरक्षण तालाब का निरीक्षण करते जाँच टीम के अधिकारी राजेश एन।

इसमें वर्षा जल का संचय कर फसल उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका जीवकोपार्जन के लिए बंजर भूमि को खेतिहर भूमि बनाने के लिए एवं रवि फसल की सिंचाई की एवं सिंघाड़े की खेती, मत्स्य पालन करने में कारगर साबित होगी। भारत सरकार की जाँच टीम के राजेश एन शुक्रवार की सुबह लगभग 8 बजे ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर पहुँचे। जंहा खण्ड विकास अधिकारी प्रवीन कुमार श्रीवास्तव व ग्राम पंचायत सचिवों के साथ बडेरा ,आलापुर, करमगंज, पनिगो, अतौलिया, कियावां, बडेरा व नटोही गांव पहुँचे जहां बन रहे जल संरक्षण के लिए फार्म पांड तालाबों का निरीक्षण किया। कार्य संतोषजनक व मानक के अनुसार पाये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कार्यो की सराहना किया। औचक निरीक्षण के बाद अपने गंतव्य को रवाना हो गये। निरीक्षण के दौरान ग्राम पंचायत सचिव अनुराग यादव, आफ़ताब अहमद, प्रभांशु पांडे, शशिकांत सिंह, अभिषेक शुक्ला, व ग्राम प्रधान अर्जुन कुमार, सियाराम मौर्य, प्रमोद कुमार, पप्पू चुडिहार, ब्रजेश कुमार यादव, राजकुमार, इतलेश कुमार के साथ ब्लाक के स्टॉफ मौजूद रहे। औचक निरीक्षण सकुशल सम्पन होने पर ब्लाक् कर्मचारियों ने राहत की सांस ली।

घर में घुसकर हजारों की नकदी व लाखों के जेवरात उड़ा ले गये चोर, पीड़ित ने दी तहरीर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली क्षेत्र के दो घर में घुसकर अज्ञात चोर हजारों की नकदी व लाखों के जेवरात उडा ले गये। लालगंज कोतवाली के पयागीपुर गांव में गुरूवार की रात छत के रास्ते अज्ञात चोर गांव के श्याम लाल वर्मा के घर में छत के रास्ते चोर अंदर घुस आये। कमरे का ताला तोडकर आलमारी में रखी चालीस हजार की नकदी व हजारों रूपये के सोने चांदी के जेवरात उडा लिये। चोरों ने इसी गांव की सरोजा देवी के घर में भी घुसकर घर में रखे हजारों की नकदी व जेवरात के साथ ही बर्तनों पर भी हाथ फेर दयिा। शुक्रवार की सुबह सोकर उठे परिवार के लोगों ने घर में बिखरा सामान देख छानबीन की तो चोरी की घटना की जानकारी होने पर आवाक रह गये। सूचना पर पहुंची पुलिस छानबीन कर वापस लौट गयी। रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज सुरेन्द्र सिंह का कहना है कि घटना की तहरीर मिली है जांच के बाद मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

ईओ के न होने से नगर पालिका के कर्मियों को वेतन के पड़े लाले

डीएम प्रशासक, फिर भी दस दिन से खाली है ईओ की कुर्सी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका विगत दस दिनों से बिना अधिशाषी अधिकारी के कार्य कर रही है। अधिशाषी अधिकारी के न होने से नगर पालिका के सभी वित्तीय कार्य रुक गये हैं। यहां तक कि नगर पालिका के किसी कर्मचारी को इस माह अभी तक वेतन नहीं मिल पाया। जबकि हर माह दस तारीख को यह वेतन नियमित मिलता रहा है। बता दें कि नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह के निधन के पश्चात अध्यक्ष का पद भी खाली है। इसका कार्य स्वयं जिलाधिकारी संजीव रंजन प्रशासक के रुप में देख रहे हैं लेकिन कर्मचारियों के वेतन सहित सभी वित्तीय कार्य ठप पड़े हुए हैं। इससे नगर पालिका में जन्म, मृत्यु प्रमाण पत्र नहीं बन पा रहा है। इसके अलावा वित्त से सम्बन्धित कोई कार्य नहीं हो पा रहा है। बता दें कि ईओ राम अचल कुरील को निदेशक ने 10 दिन पहले ही निलम्बित कर दिया है। विगत दो जुलाई से यह पद रिक्त है। इस ओर न तो शासन का ध्यान जा रहा है और न ही जिलाधिकारी का। जानकार लोगों का कहना है कि जिलाधिकारी की पहल से शासन ईओ की व्यवस्था कर सकता है।

सियाराम उमरवैश्य की धर्मपत्नी के निधन से उमरवैश्य समाज ने जताया शोक

समाज सभा के पदाधिकारियों ने घर पर पहुंचकर दी श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला उमरवैश्य समाज सभा की एक आकस्मिक बैठक जिला अध्यक्ष गुलाब चंद्र उमरवैश्य की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से आज महादानी सियाराम उमरवैश्य की धर्म पत्नी के निधन पर गहरा अशोक व्यक्त किया गया।

समाज सभा के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य ने कहा कि समाजसेविका चाची श्यामवती के निधन से समाज को अपूर्ण क्षती हुई है। उन्होंने

श्यामवती उमरवैश्य (फाइल फोटो)

अपने जीवन काल में अनेक संस्थाओं को दान देकर समाज को समर्पित किया और सर्व समाज को इसका फायदा मिल रहा है। चाचा सियाराम उमरवैश्य ने भगवान प्रभु श्री राम जी के भव्य मंदिर निर्माण में एक करोड़ दान देकर देश में जिले का गौरव बढ़ाया था। उसमें भी चाचा जी की बराबर भागीदारी रही है। अंत में 2 मिनट का मौन रखकर मृत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया गया। इस अवसर पर वैद्य राम अजोर उमरवैश्य, गुलाबचंद, शोभनाथ, मदनलाल, अजय कुमार, कैलाश मैनेजर, लक्ष्मी नारायण, श्री राम, राम जी पट्टी, देवेंद्र गुप्ता, डॉ0 श्याम, रमेश चंद्र, हनुमान प्रसाद, रामेश्वर प्रसाद, जवाहरलाल बच्चा, दीपक सभासद, छेदीलाल, संतोष कुमार, देवानंद, राजू महुली आदि समाज के पदाधिकारीयो ने उनके प्रति शोक व्यक्त किया।

संगठन की मजबूती के लिये जी-जान से जुटें कार्यकर्ता: मुकुंद तिवारी

संगठन की समीक्षा बैठक में कांग्रेस कमेटी के महासचिव ने की शिरकत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा संगठन की समीक्षा बैठक स्थानीय जिला पंचायत के सभाकक्ष में जिलाध्यक्ष डॉ0नीरज त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के महासचिव व प्रतापगढ़ प्रभारी मुकुंद तिवारी मौजूद रहे। संचालन जिला सचिव सुरेश मिश्र ने किया।

इस दौरान मुकुंद तिवारी ने कहा कि संगठन को मजबूत किये

समीक्षा बैठक में बोलते प्रभारी मुकुंद तिवारी।

बगैर आने वाले विधान सभा चुनावों में सफलता नहीं मिल सकती, इसलिए सभी साथियों को बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करने के काम में आज से ही लग जाना चाहिए। अध्यक्ष पद से बोलते हुए जिलाध्यक्ष डॉ0नीरज त्रिपाठी ने कहा कि किसी भी संगठन को चलाने के लिए हमें संपर्क, संवाद, संघर्ष करना होता है तभी हम सफल हो सकते हैं। इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी ने आपने अनुभवों से लोगों को संगठन मजबूत करने के टिप्स दिए। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष डा0वी0के0सिंह, नगर अध्यक्ष इरफान अली ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के पश्चात राजीव गांधी वृक्षारोपण अभियान के तहत हर बूथ पर एक वृक्ष लगाने के प्रदेश कांग्रेस कमेटी के लक्ष्य को पूरा करने हेतु कार्यकर्ताओं को पौधे वितरित किये गए। कार्यक्रम में सेवादल अध्यक्ष महेंद्र शुक्ल, वेदांत तिवारी, प्रेम शंकर द्विवेदी, राम लवट यादव, विजय शंकर तिवारी, शिवम् मिश्रा, मकरंद शुक्ला, राजेन्द्र वर्मा, फतेह बहादुर सिंह, उमेश तिवारी, डॉ0 अजय सिंह, विजय प्रताप तिवारी, पृथ्वीराज गौतम, नूर आलम आदि मौजूद रहे।

एसपी अनिल कुमार ने सुनी जनसमस्या

निस्तारण से पीड़ितों में संतुष्टि

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार ने एसपी कार्यालय में जनसुनवाई का आयोजन किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न लोगों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और उन्हें समयबद्ध तरीके से निस्तारित करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।

जनसुनवाई में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे, जिन्होंने अपनी समस्याओं और शिकायतों को पुलिस अधीक्षक के समक्ष रखा। समस्याओं में अधिकतर मामलों का संबंध सुरक्षा, अपराध नियंत्रण, और प्रशासनिक अनियमितताओं से था।

लोगों की समस्याएं सुनते एसपी अनिल कुमार।

अनिल कुमार ने सभी शिकायतकर्ताओं को आश्वासन दिया कि उनकी समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान हमारी पहली प्राथमिकता है और हम हर संभव प्रयास करेंगे कि सभी मामलों का त्वरित और निष्पक्ष निस्तारण हो। इस अवसर पर अन्य पुलिस अधिकारियों ने भी भाग लिया और लोगों की समस्याओं को नोट किया। जनसुनवाई के दौरान पुलिस अधीक्षक ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे लोगों की समस्याओं को गंभीरता से लें और त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करें। जनसुनवाई के बाद, उपस्थित लोगों ने पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार के प्रति अपनी संतुष्टि और विश्वास व्यक्त किया और उम्मीद जताई कि उनकी समस्याओं का शीघ्र समाधान होगा।

सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत सभी आवश्यक कार्यवाही करें सुनिश्चित : जिलाधिकारी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी के साथ उदयन सभागार में जनपद में सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत जिला स्टीयरिंग कमेटी की बैठक की गई।बैठक में अधिशासी अभियंता, सिंचाई जगदीश लाल ने बताया कि विगत 02-03 वर्षों में जनपद के 48 गॉव बाढ़ से प्रभावित रहें है, जिसमें तहसील चायल के 13 ग्राम एवं मंझनपुर के 35 ग्राम शामिल हैं। कुल 25 बाढ़ राहत चौकिया बनायी जाती हैं।

जिला कृषि अधिकारी ने अब तक की गई कार्यवाही/तैयारी के सम्बन्ध में बताया कि बाढ़ पूर्व तैयारियों में चिन्हित क्षेत्रों में अधिक पानी के प्रति सहनशील धान की प्रजाति की खेती करने के लिए किसानां को प्रोत्साहित/बढ़ावा दिया जा रहा हैं तथा बाढ़ का पानी उतरने के बाद खाली खेतों में कम दिनो में तैयार होने वाली फसल की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्होंने बताया कि किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से आच्छादित होने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि गॉव का भ्रमण कर अद्यतन स्थिति की जॉच करा लिया जाय। जिलाधिकारी ने जिलापूर्ति अधिकारी को राहत सामग्री के वितरण के लिए टेण्डर आदि की कार्यवाही समय से सुनिश्चित करने तथा अधिशासी अभियंता लोनिवि को सम्भावित बाढ़ से प्रभावित ग्रामों का सर्वे कर संपर्क मार्गों की जॉच कराने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिशासी अभियंता, विद्युत को गॉव का सर्वे कर विद्युत से सम्बन्धित आवश्य कार्यवाही सुनिश्चित करने तथा मुख्य पशु चिकित्साधिकारी को पशुओं का टीकाकरण/पशुओं के उपचार के लिए आवश्यक दवाओ की उपलब्धता सुनिश्चित करने व पशु चिकित्साधिकारियों की ड्यूटी लगाने आदि कार्यवाही करने के निर्देश दियें। उन्होंने सीएमओ को सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत बाढ़ राहत चौकियों पर मेडिकल टीम की ड्यूटी लगाने एवं बाढ़ के पश्चात संक्रामक रोग की रोकथाम के लिए आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दियें तथा बाढ़ राहत चौकियों पर पुलिस की पर्याप्त ड्यूटी भी लगाई जाय तथा नाव की व्यवस्था भी सुनिश्चित कर लिया जाय। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि रेडक्रास एवं सैनिक कल्याण सहित स्वयंसेवी संस्थाओं से समन्वय कर उनका भी सहयोग लिया जाय बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रबुद्ध सिंह, सभी उप जिलाधिकारीगण, सभी खण्ड विकास अधिकारीगण एवं सभी अधिशासी अधिकारीगण सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

झांसा देकर विधवा से कराया जमीन का बैनामा अब नहीं दे रहे रकम

2 वर्ष जमीन बिक्री का डेढ़ लाख रुपए पाने के लिए विधवा महिला है परेशान

कौशाम्बी चरवा थाना क्षेत्र के उदाथु गांव में विधवा बिन्दु देवी को झांसा देकर उसका नलकूप और सात बिश्वा जमीन दो वर्ष पहले गांव के बंसीलाल ने अपनी पत्नी जगदेई के नाम रजिस्ट्री ऑफिस में पंजीकृत बैनामा करा लिया 2 वर्ष से विधवा महिला अपनी जमीन बिक्री का बकाया डेढ़ लाख रुपए बंसीलाल से मांग रही है लेकिन उसे लगातार झांसा दिया जा रहा है 2 महीने पहले मामला थाना पुलिस के पास भी पहुंचा पुलिस ने पंचायत के बहाने आरोपी को राहत दे दिया पुलिस ने मामले में समझौता कर दिया कि कुछ दिन में जमीन बिक्री का बकाया पैसा मिल जाएगा लेकिन फिर विधवा को अपनी जमीन बिक्री का डेढ़ लाख रुपए नहीं मिल सका झांसा देकर जमीन और नलकूप को कब्जा कर लिया और नलकूप की आमदनी से बंसीलाल मालामाल हो रहा है उसकी नियत खराब हो चुकी है और फ्रॉड करने वाले पर कार्यवाही नहीं हुई है विधवा अपनी जमीन का डेढ़ लाख रुपए लेने बंसीलाल के पास गई तो उसे गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी दी गई है जिससे विधवा महिला परेशान है झांसा देकर विधवा की जमीन बैनामा करवाने वाले बंसीलाल पर अभी तक मुकदमा नहीं दर्ज हुआ।

न्यूज झरोखा

शर्मनाक : शौचालय के बगल कबाड़ में पड़ा मिला तिरंगा झंडा, वीडियो वायरल

अझुवा कौशांबी तिरंगे झंडे अपमान का एक वीडियो वायरल हो रहा है घटना12 जुलाई की बताई जा रही है जो सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा है आदर्श नगर पंचायत सिराथू कार्यालय प्रांगण में बने शौचालय और वाश बेसिन के बगल जिसे प्रत्यक्ष दर्शी शौचालय बता रहे हैं उसमे बेतरतीब पड़े तमाम तिरंगा झंडा मिले हैं।जिसका किसी ने वीडियो बना कर वायरल कर दिया।जिसमे नगर पंचायत अधिशासी अधिकारी और कर्मचारियों की कर्तव्य मूढ़ता प्रदर्शित हो रही देश के आन बान और शान के लिए देश के सैनिक ,आमजन मानस सम्मान की नजर से देखते हैं वहीं नगर पंचायत कर्मियों और जिम्मेदारों का यह रवैया दिख रहा वीडियो देख लोगों ने जिम्मेदारों के प्रति आक्रोश प्रकट किया है।हालांकि इलाहाबाद एक्सप्रेस दैनिक अखबार ऐसे किसी वीडियो की सत्यता पुष्टि नही करता।

पुलिस अधीक्षक द्वारा सुनी गई लोगों की फरियाद

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी द्वारा शुक्रवार को पुलिस कार्यालय में पहुँचे फरियादियों की समस्याओं की जनसुनवाई की गयी है। इस दौरान पुलिस कार्यालय में आने वाले फरियादियों की समस्याओं को एसपी द्वारा सुना गया तथा उनकी समस्याओं के समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु संबन्धित को आवश्यक आदेश-निर्देश दिए गये।

एसडीएम सीओ ने तजियादारो से की वार्ता

कौशाम्बी क्षेत्राधिकारी सिराथू द्वारा एसडीएम सिराथू के साथ सिराथू सर्किल क्षेत्रांतर्गत भ्रमण कर विभिन्न ताजिया दारो से मिलकर जुलूस के मार्ग, कर्बला आदि का निरीक्षण किया गया एवं बैठक कर शासन के निदेशों से तजियादारो को अवगत कराया गया तथा संबंधित को आवश्यक निर्देश दिये गये उन्होंने कहा कि निर्धारित मार्ग से ही ताजिया निकली जाएगी नई परंपरा नहीं शुरू की जाएगी

ओ-लेवल एवं सी0सी0सी0 कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिए 05 अगस्त तक ऑनलाइन आवेदन

कौशाम्बी। पिछड़े वर्ग के अभ्यर्थी ओलेवल एवं सी0सी0सी0 कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिए दिनांक 05 अगस्त 2024 तक वेबसाईट पर ऑनलाइन आवेदन कर सकतें हैं। यह जानकारी जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी अश्विनी कुमार ने देते हुए बताया कि इच्छुक युवक/युवतियॉ ऑनलाइन भरे गये आवेदन की प्रिन्टआउट प्राप्त कर हस्ताक्षरित करते हुए समस्त अभिलेखों सहित कार्यालय संख्या-27 जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, विकास भवन, मंझनपुर में 05 अगस्त 2024 की सायं 5:00 बजे तक जमा कर सकतें हैं। निर्धारित तिथि तक आवेदन प्राप्त न होने की स्थिति में कम्प्यूटर प्रशिक्षण चयन के लिए विचार नहीं किया जायेंगा।

ग्राम चौपाल में ग्रामवासियों की समस्याओं को सीडीओ ने सुना

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी ने ग्राम पंचायत डोरमा में आयोजित ग्राम चौपाल में ग्रामवासियों की समस्याओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को निस्तारित करने के निर्देश दिए। चौपाल कार्यक्रम में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में ग्रामवासियों को जानकारी दी गयी। पशुचिकित्साधिकारी द्वारा पशुओं के टीकाकरण के बारे में ग्रामवासियों को जानकारी दी गयी एवं कृत्रिम गभार्धान के लाभ बताये गये तथा पशुपालन विभाग द्वारा संचालित अन्य योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी भी दी गयी। पूर्ति निरीक्षक द्वारा भी अपने योजनाओं के बारे में जानकारी दी गयी है। खण्ड विकास अधिकारी, कड़ा ने समाज कल्याण विभाग के अन्तर्गत मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, परिवारिक लाभ योजना एवं निराश्रित महिला पेंशन, विकलांग पेंशन व वृद्धावस्था पेंशन के बारे में भी जानकारी दी गयी। साथ ही अन्य विभागीय योजनाओं के बारे में ग्रामवासियों को योजनाओं के बारे में जानकारी दी गयी। मुख्य विकास अधिकारी कौशाम्बी द्वारा बाल विकास पुष्टाहार विभाग द्वारा संचालित गोद-भराई व अन्नप्रसन्न कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा ग्रामवासियों को आकाशीय बिजली के बारे में बताया गया कि बारिश के दौरान पेड़ों या किसी ऊंचे खंभे के पास न जाएं. क्योंकि इनमें बिजली गिरने की संभावना सबसे ज्यादा होती है, उस व्यक्ति को खुले मैदान में झुक-कर बैठने व बिजली से खुद को बचाने का सबसे अच्छा तरीका एक सुरक्षित, बंद जगह ढूंढना भी है, जिससे बचाव किया जा सकता है। चौपाल कार्यक्रम में दिनेश चन्द्र संयुक्त खण्ड विकास अधिकारी कड़ा, पशु चिकित्सा अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी (पंचायत), पूर्ति निरीक्षक, बाल विकास परियोजना अधिकारी कड़ा, लेखपाल एवं सचिव व ग्राम प्रधान उपस्थित थे।

हुसैन कहते थे आओ हबीब तन्हा हूं

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। करारी दरियापुर मांझियांवा में 5 मोहर्रम का जुलूस रवायती अंदाज में निकला। सोगवारों ने रोते हुए इमाम हुसैन को याद किया। नोहाख्वानी करते हुए बयां किया ह्यसैयदा के लाल तुझको उम्रभर रोएंगे हम, हम फकत पैदा हुए रोने-रुलाने के लिएह्ल। चारों और मातमपुरसी और जुलूस में रोने की आवाज से माहौल गम में तब्दील रहा। दरियापुर मांझियावा महमूद आलम के इमामबारगाह में मजलिस के बाद शुरू हुआ जुलूस और दिलदार हुसैन के इमामबरगाह पर समाप्त हुआ।

मोहर्रम माह की 5 तारीख के जुलूस में जुलजुना (घोड़ा इमाम) की जियारत करते सोगवार

इमाम हुसैन की कुर्बानियों से जिंदा हुआ दीन

कौशाम्बी। शुक्रवार को मोहर्रम की 5वीं तारीख पर मजलिस हुई। जिसको चायल इमामे जुमा मौलाना सय्यद जाहिद हुसैन रिजवी ने खिताब (संबोधित किया) फरमाया। मौलाना ने नवासाए रसूल इमाम हुसैन का मरतबा बयां किया। मौलाना ने फरमाया कि इमाम हुसैन ने करबला के मैदान में अपनी और परिवार वालों की कुर्बानियां पेश कर अपने नाना के दीन को बचा लिया। उन्होंने फरमाया कि अच्छाई की पहचान और हक को जिंदा रखने के लिए ही इमाम हुसैन ने शहादत पेश की। मजलिस के बाद जुलूस निकाला। जिसमें जुलजुनाह, अलम की जियारत कर सोगवार रो पड़े। अंजुमन अब्बासिया के के सदर शीमू ने बताया कि शिया सोगवारों का जुलूस महमूद आलम के इमाम बारगाह से दिलदार हुसैन के इमाम बारगाह तक पहुंचा। जहां जूलूस समाप्त हुआ। जुलूस के दौरान राजू ने नोहाख्वानी की। हुसैन कहते थे आओ हबीब तन्हा हूं, मोहम्मद ने पढ़ा सुगरा ने खत में लिखा बाबा मुझे बुला लो , मोहम्मद रजा ने दर्द भरा नौहा पढ़ा तौख गले में पांव में लंगर। आदि नोहाख्वानी तथा सीनाजनी करते हुए आगे बढ़े।

मेडिकल असिस्मेण्ट कैम्प की तैयारी के सम्बन्ध में बैठक

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने परिषदीय विद्यालयां में अध्ययनरत दिव्यांग बच्चों को दिव्यांगता प्रमाण-पत्र जारी कराये जाने के सम्बन्ध में मेडिकल असिस्मेण्ट कैम्प की तैयारी के सम्बन्ध में बैठक कर अधिकारियों को दिये आवश्यक निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा उदयन सभागार में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ परिषदीय विद्यालयो में अध्ययनरत दिव्यांग बच्चों को दिव्यांगता प्रमाण-पत्र जारी कराये जाने के सम्बन्ध में मेडिकल असिस्मेण्ट कैम्प की तैयारी के सम्बन्ध में बैठक की गई। बैठक में जिला बेसिक शिक्षाधिकारी ने बताया कि विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण कराकर उनको दिव्यांगता प्रमाण-पत्र जारी कराये जाने, अल्प दृष्टि दोष से प्रभावित विद्यार्थियो को चश्में तथा अन्य विद्यार्थियों को सहायक उपकरण/यन्त्र उपलब्ध कराये जाने के लिए अभियान का संचालन किये जाने के निर्देश शासन द्वारा दियें गये हैं। उन्होंने बताया कि गतवर्ष स्क्रीनिंग में अल्प दृष्टि दोष से प्रभावित पाये गये विद्यार्थियों के नेत्र दृष्टि स्क्रीनिंग 31 जुलाई 2024 तक किया जाना है। इसी प्रकार मोबाइल हेल्थ टीम द्वारा जन्मजात दोष से रेफरल विद्यार्थियों एवं समर्थ पोर्टल पर पंजीकृत बच्चों का 31 अगस्त 2024 तक कैम्प लगाकर दिव्यांगता प्रमाण-पत्र जारी किये जाने के निर्देश दियें गये हैं। सीएचसी पर बच्चों की दृष्टि स्क्रीनिंग के बाद चिन्हित बच्चों को 30 सितम्बर तक चश्मा उपलब्ध कराया जाना हैं। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को कैम्प लगाकर दिव्यांग बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कराने के निर्देश देते हुए कहा कि दिव्यांग बच्चो का दिव्यांगता प्रमाण-पत्र समस्त औपचारिकताओ को पूर्ण कराते हुए शीघ्र जारी किये जाने की कार्यवाही की जाय बैठक में सभी खण्ड शिक्षाधिकारी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

रोजगार मेले का आयोजन 15 जुलाई को

कौशाम्बी। जिला सेवा योजन, राजकीय आईटीआई एवं कौशल विकास मिशन के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 15 जुलाई 2024 को एक्सिस आईटीआई, म्यौहर के परिसर में एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया जायेंगा। यह जानकारी जिला सेवा योजन अधिकारी गौतम घोष ने देते हुए बताया कि रोजगार मेले में विभिन्न क्षेत्र की विभिन्न कम्पनियों के माध्यम से आईटीआई, नॉन आईटीआई एवं डिप्लोमा उत्तीर्ण सभी प्रकार के अभ्यर्थियां के चयन की कार्यवाही की जायेंगी। इच्छुक अभ्यर्थी विभाग की बेवसाइट पर अपना पंजीयन करते हुए अपने समस्त शैक्षिक अभिलेखों की छायाप्रति/ रिज्यूम के साथ प्रातः10:30 बजे उपस्थित हों।

केपीएस भरवारी के 12वीं पास छात्र शिवांशु जैसवारा का आईआईटी कानपुर में हुआ चयन

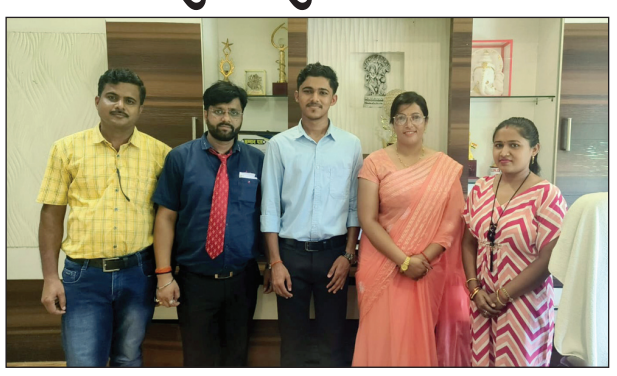

कौशाम्बी भरवारी। नगर के कौशांबी प्रेसीडेंसी स्कूल विद्यालय के एक होनहार छात्र, शिवांशु जैसवारा ने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से पूरे जिले का नाम रोशन किया है शिवांशु ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आईआईटी में दाखिला पाकर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। शिवांशु जैसवारा ने 12वीं कक्षा में विज्ञान संकाय से 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे और आईआईटी की प्रवेश परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया। उनकी इस सफलता से विद्यालय के शिक्षकों और सहपाठियों में खुशी की लहर दौड़ गई है। विद्यालय के प्रधानाचार्य सीमा पंवार ने बताया कि शिवांशु जैसवारा हमेशा से ही एक मेधावी छात्र रहे हैं और उनकी इस उपलब्धि पर पूरा विद्यालय गर्व महसूस कर रहा है। उन्होंने कहा, ₹शिवांशु की यह सफलता सिर्फ उनकी मेहनत का ही परिणाम नहीं, बल्कि उनके माता-पिता और शिक्षकों के मार्गदर्शन का भी नतीजा है।₹ शिवांशु ने अपनी सफलता का श्रेय अपने शिक्षकों और माता-पिता को दिया। उन्होंने कहा, ₹मेरे माता-पिता ने हमेशा मेरा साथ दिया और मुझे हर परिस्थिति में प्रोत्साहित किया। मेरे शिक्षकों ने मुझे सही दिशा दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।₹ शिवांशु की इस उपलब्धि से न केवल उनके परिवार बल्कि पूरे नगर में खुशी की लहर है। संस्थान के चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता ने शिवांशु और उनके परिवार को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की शिवांशु जैसवारा की इस सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि मन में दृढ़ संकल्प हो और मेहनत करने की लगन हो तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। उनकी यह प्रेरणादायक कहानी आने वाले विद्यार्थियों के लिए एक मिसाल बनेगी।

अतिक्रमण हटाने गए नगर पंचायत अधिकारी और दुकानदारों के बीच हुआ विवाद अधिकारी ने की कार्रवाई

अझुवा कौशांबी आदर्श नगर पंचायत सिराथू में दुकानदारों ने और व्यापारियों ने संत मलूक दास ओवर ब्रिज के नीचे अतिक्रमण कर तमाम वाहन खड़े कर देते हैं जिसकी शिकायत लोगों के द्वारा आए दिन की जाती थी इन्हीं शिकायतों पर अमल करते हुए शुक्रवार को नगर पंचायत अधिकारी एवं कर्मचारियों में अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया। अतिक्रमण हटाने नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी वैभव चौधरी और कर्मचारियों के साथ ओवर ब्रिज के नीचे खड़े तमाम चार पहिया और दो पहियों वाहनों का चालान करने लगे जिस पर व्यापारियों और दुकानदारों ने नगर पंचायत अधिशासी अधिकारी और कर्मचारियों के बीच जमकर तू तू मै मैं हुई बहस बाजी देख लोगो को भीड़ जमा हो गई लोग तो यहां तक कह रहे थे कुछेक व्यापारियों ने अधिशासी अधिकारी को पूंछा कि तुम हो कौन ?? ज्यादा बोलोगे तो बेज्जत कर दिए जाओगे गर्मा गरम बहस देख सैकड़ों लोगों का मजमा लग गया।अधिशासी अधिकारी ने कोतवाली से पुलिस कर्मी बुलाकर दर्जनों वाहनों का चालान कर दिया तमाम ऐसे लोगों की गाड़ियों का भी चालान किया गया जो रजिस्ट्री कार्यालय में कार्य हेतु आए थे वहीं एक वकील की गाड़ी का चालान हो गया जो नगर पंचायत कार्यालय में पहुंचकर अधिशासी अधिकारी को अपना कार्य भी बताया कि वह रजिस्ट्री आफिस में कार्य से आए बाहर गाड़ी खड़ी करने पर चालान कर दिया क्या लोग रजिस्ट्री आफिस के अंदर गाड़ी खड़ी करें क्या? बहुत देर तक बहस बाजी होती रही ।नगर पंचायत क्षेत्र में आज शुक्रवार दिन भर चालान और अतिक्रमण कार्रवाई की चर्चा होती रही है।

बिना रवन्ना और रॉयल्टी के जिले में जगह-जगह पर डंप है कई हजार ट्रक बालू

मनौरी में अवैध तरीके से डंप है हजारों ट्रक बालू

कौशांबी। खनन विभाग के अधिकारियों के मेहरबानी से बरसात होने के पूर्व यमुना नदी से जेसीबी मशीन और पोकलैंड मशीन लगाकर बड़ी तादाद में अवैध बालू का खनन किया गया है जिले के विभिन्न क्षेत्र में जगह-जगह पर बालू के बड़े-बड़े डंप लगे हैं बताया जाता है कि बालू के बड़े-बड़े भंडारण में रॉयल्टी अदाकार रमन्ना का प्रयोग नहीं किया गया है इस बात की जानकारी विभाग के अफसर को है लेकिन उसके बाद भी अवैध तरीके से डंप बालू को सीज करके बालू माफियाओं पर कार्यवाही नहीं की गई है बताया जाता है कि यमुना नदी के लोधौर पुलिस चौकी अंतर्गत कई गांव में बालू के कई बड़े-बड़े डंप है इसी के साथ-साथ तिल्हापुर पुलिस चौकी क्षेत्र में भी बालू के कई बड़े-बड़े अवैध डंप हैं महेवा घाट थाना क्षेत्र से लेकर टिकरा हिनौता के आसपास भी बालू के कई बड़े-बड़े डंप है पभोषा बालू घाट और उसके आसपास कटरी देढावल आदि क्षेत्र में भी बालू के बड़े-बड़े कई डंप माफियाओं ने लगाए हैं जिन पर अभी तक खनन अधिकारी ने कार्रवाई नहीं की है जिससे उनकी साठगांठ से इनकार नहीं किया जा सकता है। चायल तहसील क्षेत्र के मनौरी में हजारों ट्रक बालू अवैध तरीके से डंप किया गया है। बालू डंप करने के बाद महंगे दाम में मनमाना रेट में इसका विक्रय हो रहा है। बालू डंप करने वालों के पास वैध कागजात नही है और न ही तहसील प्रशासन से अनुमति प्राप्त है फिर भी अवैध तरीके से भारी मात्रा में बालू का भंडारण किए हैं। बालू के अवैध भंडारण से क्षेत्रीय पुलिस और तहसील के अधिकारियों के ऊपर लोगों के द्वारा गंभीर आरोप लगाए जा रहे हैं। अवैध तरीके से बालू डंप करने वाले लोग एक तरफ लोगों को लूट रहे हैं दूसरी तरफ राजस्व विभाग को भी हानि पहुंचा रहे हैं।

लेखपाल से परेशान ग्रामीण, शिकायत के बाद भी नहीं हटाया गया लेखपाल

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। सिराथू क्षेत्र में आखिर क्षेत्र के लोगों पर धौस जमाने वाले अपने को एक माननीय का करीबी बताने वाले लेखपाल को बचाने में लगे है लेखपाल के खिलाफ वर्तमान ककोढा ग्राम प्रधान व पूर्व प्रधान अपने कई पंचायत सदस्यों के साथ व ग्रामीणों ने सिराथू उपजिला धिकारी से लेखपाल को ग्राम पंचायत से हटाकर दूसरे लेखपाल की नियुक्ति की मांग की लेखपाल के कार्य शैली व ककोढा ग्राम पंचायत में लेखपाल के रिश्तेदार की मिलीभगत से ग्राम के ग्रामीण काफी परेशान है लेकिन लेखपाल को अधिकारी नहीं हटा सके हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक करेंटी ग्राम पंचायत ग्रामीण व कसिया पश्चिम ग्राम पंचायत के ग्रामीण भी काफी परेशान है सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक अतीक अहमद के करीबी फरार बिल्डर से भी लगातार फोन पर बातचीत करते हैं उनके इशारे पर क्षेत्र की जनता को परेशान किया जाता हैं जनता के कागजात सही होने पर भी उनका हिस्सा फाट नही बनाते है एसडीएम व नायब तहसीलदार को गुमराह कर अतीक के करीबी का कार्य करने के लिए वकील की तरह जनता से सवाल जवाब करते है पूर्व के किये गये अपने अधिकारियों के आदेश व कागजात को दबंग लेखपाल नही मानते ग्राम पंचायत ककोढा लेखपाल के खिलाफ जनता की परेशानी जानकर प्रधान ने शिकायती पत्र दिया एसडीएम ने ककोढा ग्राम प्रधान को कार्यवाही का अश्वासन दिया लेखपाल हाइवे पर स्थित कई ग्राम पंचायत को अपने पास रक्खा है लेखपाल जनता को परेशान कर मुआवजा धारक के मुआवजे में हिस्सा फाट ना बनाकर मुआवजा धारकों को दौड़ा दौड़ा कर मलाई काट रहे तहसील अध्यक्ष बनने का यह आलम है की अपने मातहतों लेखपालों को हाइवे मुआवजा क्षेत्र से दूर कर रखा है लेखपाल अपने उच्च अधिकारियों के पास बैठकर अपना समय काटते हैं ग्राम की जनता तहसील में लेखपाल को ढूंढती रहती हैं फोन लगाने पर फोन ना उठने से क्षेत्र की जनता की मनोदशा बिगड़ रहीं है आखिर ऐसे भ्रष्ट लेखपाल पर कब योगी सरकार के अधिकारी सख्त कार्यवाही करेंगे अगर जांच हुई तो फरार करीबी बिल्डर से करीबी का खुलासा हो सकता है।

संपादक की कलम से

मां के नाम पेड़ और उजड़ते पहाड़

एक तरफ तो देश भर में इस समय सामान्य जनों से लेकर विशिष्ट लोग अपनी माताओं के नाम पेड़ लगाने की होड़ में हैं। मुकाबला इस बात का भी है कि कैसे वे पेड़ लगाते हुए अपने फोटो एवं सेल्फियों को सोशल मीडिया पर वायरल करें। दिखावे के लिये ही सही पर इस तरह के अभियानों से किसी का विरोध नहीं है लेकिन दूसरी तरफ यह भी दिखता है कि 'भारत का मुकुट' कहा जाने वाला हिमालय लगातार उजड़ रहा है। इसका कारण है पेड़ों की अनवरत कटाई और वहां विकास का पर्याय बन चुका पर्यटन। पहाड़ों की प्राकृतिक सुषमा को निहारने के लिये आने वालों से लेकर इस पर्वत श्रृंखला में बने आस्था के केन्द्रों में माथा नवाने के लिये लाखों की संख्या में आने वाले श्रद्धालु पर्वतों को बर्बाद करने में एक सरीखा योगदान दे रहे हैं। पिछले कुछ समय से पूरी हिमालयन रेंज में आने वालों की तादाद में अप्रत्याशित रूप से बढ़ोतरी हुई है। खासकर, उत्तराखंड एवं हिमाचल प्रदेश में सबसे ज्यादा लोग जा रहे हैं। यहीं सबसे ज्यादा तबाही देखने को मिल रही है। बद्रीनाथ हाईवे पिछले तीन दिनों से भूस्खलन के कारण जाम हुआ पड़ा है और बड़ी संख्या में तीर्थयात्री यहां फंसे हुए हैं। 10 जून को जैसे ही बद्रीनाथ एवं केदारनाथ मंदिरों के कपाट खुले, लाखों की संख्या में श्रद्धालु उमड़ पड़े थे। चार धाम की यात्रा हर धर्मप्राण हिंदू की सबसे बड़ी इच्छा होती है। 16 जून, 2013 को हुई उत्तराखंड की भीषण त्रासदी में न जाने कितने लोगों की जान गई थी। उसे मानों भुलाकर लोग अगले साल से ही उसी प्रकार इन धार्मिक केन्द्रों में चले आये थे। 11 वर्ष के बाद इस साल लगभग 60 प्रतिशत ज्यादा लोग जून के पहले हफ्ते में ही चार धाम के लिये पहुंचे थे। तब भी केदारनाथ एवं यमुनोत्री में मीलों लम्बा जाम लगा था। शुक्र तो यह था कि उस दौरान न कोई बारिश हुई और न ही भूस्खलन। यहां तक कि सरकार को रजिस्ट्रेशन रोक देना पड़ा था। इसका नतीजा यह हुआ कि वहां पहुंचे लोग राज्य भर में फैल गये थे। चूंकि इस पर्यटन से कथित रूप से सभी पहाड़ी राज्यों की इकानॉमी चलने की बात कही जाती है तो पर्वतों में बड़ी संख्या में होटल, रेस्टारेंट, होमस्टे, रोमांचक खेल आदि के नाम से लाखों की तादाद में पेड़ों को काटा गया। रास्ते चौड़े करने के लिये भी उनकी बलि ली गई। विशेषकर उत्तराखंड एवं हिप्र में यह सर्वाधिक हुआ है।

पर्यटकों के जमावड़े ने जहां इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करने के नाम से पेड़ों की कटाई कराई, वैसे ही बड़ी संख्या में आने वाले वाहनों के कारण पूरा इको सिस्टम ही गड़बड़ा गया है। ग्लेशियरों में जमी बर्फ तेजी से पिघल रही है, नदियों का जल स्तर बढ़ रहा है और त्रासदियों की पुनरावृत्ति हो रही है। इनमें सबसे ज्यादा हादसे भूस्खलन के होते हैं। भूगोल का अध्ययन बतलाता है कि हिमालय पर्वत श्रृंखला अपेक्षाकृत नयी है और वह अब भी निमार्णाधीन है इस कारण यह बेहद संवेदनशील है। इसकी स्वनिर्मित प्रणाली से छेड़छाड़ के नतीजे अच्छे नहीं निकलेंगे। वही देखने को मिल रहा है। जो देखने को नहीं मिल रही है वह है लोगों की जागरूकता और हिमालय सहित देश भर के पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने की ललक- न सरकार की ओर से और न ही जनता की तरफ से। मैदानों में रहने वालों ने बड़े-बड़े उद्योग लगता हुआ देखने, कल-कारखाने खुलने, मॉल्स में शॉपिंग करने, हाईराइज सोसायटियों में रहने और फोर लेन-सिक्स लेन सड़कों पर फरार्टे भरने के मोह में अनगिनत पेड़ों को कट जाने दिया और अमूमन दुपहरी में भी 38-40 से ऊपर न जाने वाला पारा जब 48 से 50 डिग्री को छूने लगा तो उन्हें पहाड़ों की हरियाली और ऊंचाइयों की याद आने लगी।

हर वर्ष पर्यटकों के नाम से प्रकृति को तबाह करने वालों के झुंड आ रहे हैं और हर वर्ष उनकी संख्या में प्रति वर्ष इजाफा हो रहा है। हाल के इन वर्षों में धर्म और उसके नाम पर दिखावे का प्रचलन बढ़ा है, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेशों में स्थित धर्म स्थलों में आने वालों की तादाद भी बढ़ी है। वैसे तो मैदानी इलाकों के ऐसे स्थलों में भी जाने वालों की संख्या में जबर्दस्त इजाफा हुआ है परन्तु पहाड़ों की भौगोलिकी कहीं अधिक संवेदनशील होती है जो बड़ी जनसंख्या का भार वहन करने में असमर्थ होते हैं। इसे रोकने में सरकारें नाकाम हो ही हैं। हर वर्ष अलबत्ता बिला नागा 5 जून को पड़ने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर भी वैसे ही करोड़ों पौधे समारोहपूर्वक लगाये जाते हैं, जैसे इन दिनों चल रहे 'एक पेड़ मां के नामज पर लग रहे हैं। इसके अलावा किसी भी परिसर में अतिथियों के हाथों लगाये गये पौधों का जतन सही तरीके से हुआ होता तो अब तक भारत में एक इंच जगह भी न छूटी होती जहां पेड़ न लहलहा रहे होते। मैदानों से लेकर पहाड़ों तक आज कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे का जो आलम है वह इसी समझ का नतीजा है। देखा तो यह भी जा रहा है कि हर वर्ष सभी स्थानों पर गर्मी औसत से ज्यादा पड़ रही है और बरसात भी निर्धारित मात्रा से कहीं अधिक हो रही है। प्रकृति ने अपना चक्र करोड़ों वर्षों में बनाया है जिसे कुछ ही वर्षों में मनुष्य ने बिगाड़ कर रख दिया है। बदलाव की जरूरत मनुष्य के व्यवहार में होने की है वरना बड़ी प्राकृतिक आपदाएं प्रतीक्षारत तो हैं ही।

क्या मक्खन की जगह वनस्पति तेल का उपयोग करना सही है?

नई दिल्ली। एक शोध में यह बात सामने आई है कि मक्खन जैसे सैचुरेटेड फैट से जैतून के तेल जैसे वनस्पति आधारित अनसैचुरेटेड फैट वाले आहार पर स्विच करने से रक्त में वसा की संरचना प्रभावित हो सकती है, जिससे दीर्घकालिक बीमारी का खतरा बढ़ सकता है।

वर्तमान दिशा-निदेर्शों में आहार में अनसैचुरेटेड फैट का सेवन बढ़ाने तथा सैचुरेटेड फैट को कम करने के लिए कहा गया है, ताकि हृदय संबंधी बीमारियों को रोका जा सके, जिनमें हृदयाघात, स्ट्रोक, मधुमेह और इंसुलिन प्रतिरोध शामिल हैं।

नेचर मेडिसिन में प्रकाशित नए शोध में कहा गया है कि सैचुरेटेड फैट के स्थान पर अनसैचुरेटेड फैट का नियंत्रित आहार लेना स्वास्थ्य के लिए अच्छा हो सकता है साथ ही यह कार्डियो मेटाबोलिक जोखिम को कम कर सकता है।

इस शोध में टीम ने 113 प्रतिभागियों को शामिल किया जिन्हें दो समूहों में बांटा गया। एक समूह सैचुरेटेड फैट का सेवन कर रहा था, जबकि दूसरे समूह ने अनसैचुरेटेड फैट से भरपूर आहार लिया।

13 प्रतिभागियों पर 16 सप्ताह तक नजर रखी गई। साथ ही उनके रक्त के नमूनों का लिपिडो मिक्स या रक्त में वसा का विश्लेषण किया गया।

स्वस्थ रक्त वसा प्रोफाइल को इंगित करने वाले उच्च मल्टी-लिपिड स्कोर (एमएलएस) ने कार्डियो मेटाबोलिक रोगों के विकास के जोखिम को काफी हद तक कम कर दिया। स्वस्थ वसा युक्त आहार से हृदय रोग के 32 प्रतिशत और टाइप 2 मधुमेह के 26 प्रतिशत कम मामले सामने आए।

स्वीडन के चाल्मर्स यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के अनुसंधान प्रमुख क्लेमेंस विटेनबेचर ने कहा, "यह शोध भूमध्यसागरीय आहार जैसे अनसैचुरेटेड वनस्पति फैट से भरपूर आहार के स्वास्थ्य लाभों की और भी अधिक निश्चितता के साथ पुष्टि करता है और उन लोगों को लक्षित आहार संबंधी सलाह प्रदान करने में मदद कर सकता है जिन्हें अपने खाने की आदतों को बदलने से सबसे अधिक लाभ होगा।

शोध में यह भी पता चला कि रक्त में आहार से संबंधित वसा परिवर्तनों को सटीक रूप से मापना और उन्हें हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह के विकास के जोखिम से सीधे जोड़ना संभव है। इसमें बायोमार्कर-निर्देशित सटीक पोषण दृष्टिकोणों में आहार हस्तक्षेपों को लक्षित करने और निगरानी करने के लिए लिपिडो मिक्स-आधारित स्कोर की क्षमता पर भी प्रकाश डाला है।

पोषणयुक्त आहार एवं कुपोषण मुक्त भारत के संकल्प के उजाले

-: ललित गर्ग:-

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा भारत सहित पूरे विश्व में भूख, कुपोषण एवं बाल स्वास्थ्य पर समय-समय पर चिंता व्यक्त की गई है। यह चिन्ताजनक स्थिति विश्व का कड़वा सच है लेकिन एक शर्मनाक सच भी है और इस शर्म से उबरना जरूरी है। कुपोषण और भुखमरी से जुड़ी वैश्विक रिपोर्टें न केवल चौंकाने बल्कि सरकारों की नाकामी को उजागर करने वाली ही होती हैं। इस विवशता को कब तक ढोते रहेंगे और कब तक दुनिया भर में कुपोषितों का आंकड़ा बढ़ता रहेगा, यह गंभीर एवं चिन्ताजनक स्थिति है। लेकिन ज्यादा चिंताजनक यह है कि तमाम कोशिशों और दावों के बावजूद कुपोषितों और भुखमरी का सामना करने वालों का आंकड़ा पिछली बार के मुकाबले हर बार बढ़ा हुआ ही निकलता है। इन स्थितियों के बीच भारत में इस गंभीर स्थिति पर नियंत्रण पाने की दिशा में सरकार ने उल्लेखनीय कदम उठाये हैं। भारत सरकार पोषणयुक्त आहार एवं कुपोषणमुक्त भारत के संकल्प को आकार देने में जुटी है, आजादी के बाद मोदी सरकार ने इस दिशा में उल्लेखनीय सफलता पाई है, जो समस्या से मुक्ति की दिशा में सरकार के संकल्प का उजाला है।

कुपोषण की समस्या को दूर करने के लिये सरकार विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन कर रही है। हालाँकि उनके वित्तपोषण और कार्यान्वयन में अभी भी अंतराल मौजूद हैं। इस मुद्दे को समग्र रूप से संबोधित करने के लिये एक व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक है। कुपोषण की स्थिति तब विकसित होती है जब शरीर विटामिन, खनिज और अन्य पोषक तत्त्वों से वंचित हो जाता है, भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक ह्यकुपोषण मुक्त भारतह्ल सुनिश्चित करने के लिये राष्ट्रीय पोषण मिशन अभियान शुरू किया था, जिसमें बड़ी सफलता मिली है। एनीमिया मुक्त भारत अभियान वर्ष 2018 में शुरू किया गया, मिशन का उद्देश्य एनीमिया की वार्षिक दर को एक से तीन प्रतिशत अंक तक कम करना है। मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य स्कूली बच्चों के बीच पोषण स्तर में सुधार करना है, जिसका स्कूलों में नामांकन, प्रतिधारण और उपस्थिति पर प्रत्यक्ष एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 का उद्देश्य अपनी संबद्ध योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से सबसे कमजोर लोगों के लिये खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है, जिससे भोजन तक पहुँच कानूनी अधिकार बन जाए। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं को डिलीवरी के लिये बेहतर सुविधाएँ प्राप्त करने हेतु 6,000 रुपए सीधे उनके बैंक खातों में स्थानांतरित किये जाते हैं। समेकित बाल विकास सेवा वर्ष 1975 में शुरू किया गया था और इस योजना का उद्देश्य 6 वर्ष से

कम उम्र के बच्चों तथा उनकी माताओं को भोजन, पूर्व स्कूली शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और अन्य सेवाएँ प्रदान करना है। इन सब योजनाओं का असर कुपोषण को नियंत्रित करने पर पड़ रहा है।

अंतरिम बजट 2024-25 में, केंद्रीय वित्त मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि अमृत काल के दौरान समावेशी विकास के लिए, बेहतर पोषण वितरण, प्रारंभिक बचपन की देखभाल और समग्र विकास में तेजी लाने के लिए एक ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। विजन इंडिया 2047 के प्रयासों को पूरा करने के लिए, फीडिंग इंडिया भूख को कम करने और कुपोषण मुक्त राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से कार्यक्रमों को डिजाइन करने और लागू करने की दिशा में काम कर रहा है। एक बहुआयामी रणनीति के माध्यम से, फीडिंग इंडिया बड़े पैमाने पर व्यवस्थित हस्तक्षेप, कम आय वाले सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों को सीधे भोजन सहायता और युवाओं के नेतृत्व वाले स्वयंसेवी आंदोलन के माध्यम से कुपोषण के बारे में सामाजिक जागरूकता बढ़ाकर अपने मिशन को आगे बढ़ाता है। फीडिंग इंडिया एक ऐसे भारत के लिए प्रतिबद्ध है जो आर्थिक रूप से संपन्न हो, नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं को आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करे और जो कुपोषण मुक्त हो। अपनी स्थापना के बाद से, फीडिंग इंडिया ने 30 से अधिक शहरों में 150. कार्यान्वयन भागीदारों के माध्यम से 150 मिलियन से अधिक भोजन उपलब्ध कराया है और 2030 तक वंचित समुदायों को अतिरिक्त 300 मिलियन पौष्टिक भोजन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।ह्ल

असल में भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में हर इलाके की खास जरूरतों के हिसाब से अलग व्यवस्था की दरकार है, न कि सब जगह एक ही पैमाने पर बने कार्यक्रम को लागू करना। पिछले कई बरस से यही तरीका अपनाया जाता रहा है। देश से कुपोषण की समस्या जड़ से खत्म करने के लिए नए सिरे से हो रहे प्रयास तीन अहम बातों पर आधारित हैं- बर्ताव में बदलाव, संक्रमण रोकने का प्रबंधन और पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले कुपोषण के चक्र को तोड़ना। भुखमरी पर स्टैंडिंग टुगेदर फॉर न्यूट्रीशन कंसोर्टियम ने आर्थिक और पोषण डाटा इकट्ठा किया, इस शोध का नेतृत्व करने वाले सासकिया ओसनदार्प अनुमान लगाते हैं कि जो महिलाएं अभी गर्भवती हैं वो ऐसे बच्चों को जन्म देंगी जो जन्म के पहले से ही कुपोषित हैं और ये बच्चे शुरू से ही कुपोषण के शिकार रहेंगे। एक पूरी पीढ़ी दांव पर है।

कुपोषण के कई रूप हैं, जैसे बच्चों का नाटा रह जाना, कम वजन, एनीमिया प्रमुख हैं। इनमें से कुछ में समय के साथ सुधार हुआ है। ओडिशा, छत्तीसगढ़ जैसे गरीब राज्यों में भी सुधार देखा गया। यह किसी विडंबना से कम नहीं है कि कुपोषण के साथ भारत अधिक वजन, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी नई चुनौतियों का भी सामना कर रहा है, जिसे पोषण संबंधी गैर-संचारी रोग भी कहा जाता है। हर पांच में से एक महिला और हर सात में से एक भारतीय पुरुष आज बढ़ते वजन से पीड़ित हैं। शहरी क्षेत्र में दिनोंदिन यह प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास उसकी डाइट पर भी निर्भर करता है। विटामिन, मिनरल, कैल्सियम, प्रोटीन, फाइबर आदि भरपूर डाइट से बच्चे का विकास सही ढंग से होगा ही, वह तंदुरुस्त भी रहेगा। हकीकत ये है कि ज्यादातर माताएं संतुलित आहार व डाइट क्या है? जानती तक नहीं। विशेषज्ञों के अनुसार गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था की उम्र तक बच्चों की डाइट में परिवर्तन होता रहता है।

ग्रामीण क्षेत्रों व मलिन बस्तियों के बच्चों को उचित डाइट नहीं मिल पाती, नतीजतन वे कम वजन व लंबाई और बार-बार बीमारी से जूझते हैं। कई बार कुपोषण की चपेट में भी आ जाते हैं। बढ़ते बच्चों का डाइट चार्ट के अनुसार खानपान जरूरी है। शुरूआत भ्रूणावस्था से हो जाती है। इसके लिए गर्भवती को आयरन, कैल्शियम व फॉलिक एसिड लेना चाहिए। खजूर, गुड़, चना, दूध व दूध से बनी चीजें, चिकन-अंडा, मुरमुरे, अनार, सेब, चीकू, अमरूद, पनीर व दाल का सेवन करें। खूब पानी पीएं। इस उम्र में शिशु को चावल की खीर, दूध में साबूदाना, पिसे हुए पनीर को दलिया मिलाकर खिलाएं। खजूर भी अच्छा है, इसमें मैग्नीशियन, आयरन, फास्फोरस व अन्य पोषक तत्व होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ रोटी व हरी सब्जियां भी शुरू कर दें। यह बढ़ती उम्र है, बच्चे को कैल्शियम की ज्यादा जरूरत होती है, इसलिए दूध ज्यादा दें। अंडा-पनीर भी कैल्शियम के अच्छे स्रोत हैं।

पीछे रह गए पेड़

- हेमलता म्हस्के

भारत के खेतिहर इलाके में 60 करोड़ छायादार पेड़ थे। 2018 की एक रिपोर्ट के मुताबिक मात्र आठ सालों में साढ़े 6 करोड़ से अधिक छायादार पेड़ नष्ट कर दिए गए हैं। ये आंकड़े सबसे अधिक तेलंगाना, हरियाणा, केरल, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र और उत्तरप्रदेश के हैं, जहां गर्मी के कारण हाहाकार मचता है। ऐसे में हमारी आदतें और आरामपरस्ती नहीं बदलेगी तो हम निश्चित ही अपने अंत की ओर बढ़ रहे हैं। इन सबका बुरा असर हमारी अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा।

गर्मी तो हर साल आती है लेकिन इस बार पिछले रिकार्ड भी तोड़ गई है। यह हमारी लगातार लापरवाही का नतीजा है। हमने कांक्रीट के जंगल बसाए, ढ़ेर सारे उपकरण लगाए, लेकिन पौधे नहीं लगाए, बल्कि उनको काट डाला। क्या हम अभी भी सचेत नहीं होंगे? बढ़ते तापमान को रोकने के लिए हमें अपनी कोशिशें तेज करनी होंगी। पिछले कई वर्षों के मुकाबले इस बार अप्रैल और मई के साथ जून महीने में इतनी भीषण गर्मी पड़ी है जिससे अब तक के सभी रिकॉर्ड टूट गए हैं। शरीर को झुलसा देने वाली गर्मी, सूरज का बढ़ता पारा और लू के थपेड़ों से न केवल मनुष्य बल्कि पशु-पक्षी और जीव-जंतु सभी का हाल-बेहाल है।

सूरज का पारा दिन-प्रतिदिन बढ़ने का मुख्य कारण 'ग्लोबल वार्मिंग' है। पृथ्वी के बढ़ते तापमान को ही 'ग्लोबल वार्मिंग' कहते हैं। पृथ्वी सूर्य की किरणों से ऊष्मा प्राप्त करती है जो वायुमंडल से गुजरते हुए पृथ्वी की सतह से टकराती हैं और धरती को ऊष्मा प्रदान करती है। इंसान की लापरवाही और धन की हवस के कारण वायुमंडल की निचली परत में 'ग्रीन हाउस गैसों' का आवरण सा बन जाता है। यह आवरण लौटती किरणों के एक बड़े हिस्से को रोक लेता है। ऐसी रुकी हुई किरणें ही धरती के तापमान को बढ़ाती हैं।

वायुमंडल में गैसों का एक निश्चित अनुपात माना गया है, लेकिन बढ़ती 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण संतुलन बिगड़ रहा है। पिछले 100 वर्षों में कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा में 24 लाख टन की बढ़ोतरी हुई है, जबकि ऑक्सीजन की मात्रा में 26 लाख टन की कमी आई है। यह असंतुलन मानव सहित पशु-पक्षियों और वनस्पति जगत के लिए बहुत ही चिंताजनक है। अगर हम अभी भी जागरूक नहीं होंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमें घर से बाहर निकलते हुए अपने साथ ऑक्सीजन का एक छोटा सिलेंडर भी ढोकर ले जाना होगा।

अनुमान है कि भविष्य में 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण पृथ्वी के तापमान में और बढ़ोतरी होगी और अगर ध्रुव और ग्लेशियर की बर्फ पिघलने लगी तो पूरी पृथ्वी समुद्र के जल से जलमग्न हो सकती है और पृथ्वी पर महाप्रलय भी आ सकती है। भविष्य में संकट को देखते हुए 'ग्लोबल वार्मिंग' को रोकने के लिए हमें पौधे लगाने होंगे। केवल सरकार के भरोसे 'ग्लोबल वार्मिंग' को नहीं रोका जा सकता। अगर हर साल हर परिवार का एक व्यक्ति एक पौधा लगाए तो हम अपने आसपास के 2.5 सेंटीग्रेड फारेनहाइट तापमान को कम कर सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि हम मिलकर प्रयास करें, वरना भविष्य में ना केवल हमें, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी कष्ट उठाना पड़ेगा।

पेड़ मनुष्यों को ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, कार्बन का भंडारण करते हैं, मिट्टी को स्थिर करते हैं और दुनिया भर में विभिन्न प्रकार के जीवों का पोषण करते हैं। वे हमें उपकरण और आवास के लिए आवश्यक संसाधन भी देते हैं। पेड़ पत्तेदार छाया और नमी से हवा, भूमि और पानी को ठंडा करते हैं। हमारे घरों के पास और हमारे समुदाय में लगाए गए पेड़ तापमान को नियंत्रित करते हैं, और जीवाश्म ईंधन को जलाने से उत्पन्न एयर-कंडीशनिंग और हीटिंग की आवश्यकता को कम करते हैं, जो वायुमंडलीय कार्बन डाइ-ऑक्साइड का एक प्रमुख स्रोत है। पेड़ अनगिनत प्रजातियों के लिए घोंसले बनाने की जगह, भोजन और आश्रय प्रदान करते हैं। पेड़ सभी वन्यजीवों को आश्रय और पोषण देते हैं। प्रकृति इंसान की सबसे बड़ी दोस्त होती है, लेकिन इंसान को प्रकृति की उतनी परवाह नहीं है। इंसान अपने आराम के लिए प्रकृति का बेधड़क इस्तेमाल कर रहा है। पहले जहां जंगल थे, चारों तरफ जहां हरियाली थी, वहां अब हरियाली सिमटती नजर आ रही है और इसका सबसे बड़ा कारण है, इंसान। इंसानों ने अपने इस्तेमाल के लिए पेड़ों की कटाई की और जमीनों की खुदाई की। इसके साथ ही ऐसा वातावरण बनाया जिससे पिछले कुछ सालों में जंगल लगातार कम होते जा रहे हैं। 'भारतीय वन रिपोर्ट' के मुताबिक साल 2021 में भारत में 7,13,789 वर्ग किलोमीटर जंगल क्षेत्र था जो पूरे देश के भौगोलिक क्षेत्र का 21.72 प्रतिशत था। इसमें साल 2019 के बाद 1540 वर्ग किलोमीटर की बढ़ोतरी हुई, लेकिन पिछले कुछ सालों में इसमें कमी देखने को मिली, जो एक चिंता का विषय है। दुनिया में सबसे ज्यादा जंगल रूस में हैं। रूस में 815 मिलियन हेक्टेयर से ज्यादा जंगल हैं, जो रूस के पूरे क्षेत्रफल का 45प्रतिशत है। दुनिया के सबसे बड़े जंगल की बात की जाए तो वह दक्षिण अमेरिका में है। दक्षिण अमेरिका का जंगल 'अमेजॉन रेनफॉरेस्ट' करीब 65 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसे पृथ्वी का फेफड़ा भी कहते हैं क्योंकि यह दुनिया की करीब 20प्रतिशत ऑक्सीजन पैदा करता है।

रूस और ऑस्ट्रिया की यात्राओं से भारत की नई उड़ान

- ललित गर्ग -

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा के निष्कर्षों के साथ-साथ इसके वैश्विक निहितार्थ भी तलाशे जा रहे हैं। इन दोनों देशों की राजकीय यात्रा अनेक दृष्टियों से नई उम्मीदों को पंख लगाने के साथ भारत को शक्तिशाली बनाने वाली होगी। दोनों देशों की यात्रा के दौरान हुए विभिन्न समझौते भारत की तकनीकी एवं सामरिक जरूरतों को पूरा करने में अहम कदम साबित होंगे। सैन्य उत्पाद, व्यापार व उद्योग के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रूस और ऑस्ट्रिया के साथ द्विपक्षीय सहयोग ने नई उम्मीदें जगाई हैं। इन यात्राओं के दौरान प्रधानमंत्री ने जो प्रयास किए वे मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भरता के प्रयास, नये भारत-सशक्त भारत एवं सतत विकास की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे। निश्चित ही प्रधानमंत्री मोदी के प्रति इन दोनों देशों में जो सम्मानभावना देखने को मिली, उससे यही कहा जा सकता है कि मोदी विश्व-नेता के रूप में स्वतंत्र पहचान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं, जो भारत के लिये शुभ है।

निश्चित तौर पर वैश्विक राजनीति में अपनी चमक के साथ आगे बढ़ते भारत के लिये रूस की यात्रा कई मायनों में बहुत उपयोगी एवं दूरगामी रही। इस यात्रा के दौरान भारत और रूस के बीच हुई 22वीं द्विपक्षीय बैठक में हुए नए समझौते काफी अहम हैं। रूस के युद्ध में फंसे होने के कारण रक्षा जरूरतों से संबंधित आपूर्ति में बाधा होना हमारे लिए चिंता की बात थी लेकिन मेक इन इंडिया के तहत भारत में ही रक्षा उपकरणों के स्पेयर पार्ट्स का प्लांट लगाने पर सहमति जताकर पुतिन ने बड़ी चिंता का समाधान कर दिया है। दोनों देशों के बीच का व्यापार 2030 तक 65 अरब डॉलर से बढ़ाकर 100 अरब डॉलर तक करने पर भी सहमति बनी है। यह भारत-रूस के विशेष रिश्ते को और मजबूत करने वाले होंगे। भारत-रूस की दोस्ती की गर्माहट से चीन एवं पाकिस्तान की बौखलाहट भी देखने को मिली है।

यूक्रेन और गाजा में युद्धों की पृष्ठभूमि के बीच प्रधानमंत्री मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा पर दुनिया की नजरे लगी रही। एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश कर रहे अमरीका और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अपना हित देख रहे रूस के बीच भारत की

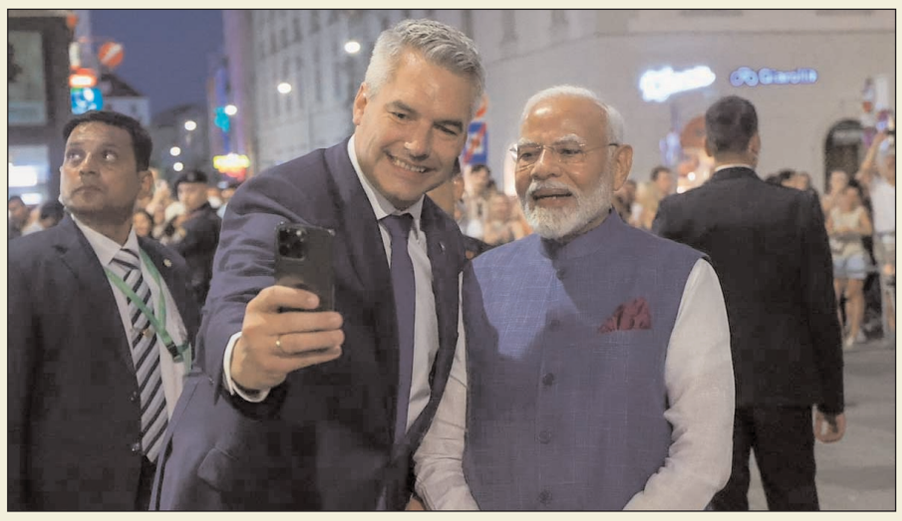

स्थिति एवं उसकी बढ़ती ताकत का भी विश्लेषण किया जा रहा है। मास्को में प्रधानमंत्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के गले मिलने पर यूक्रेन की नाराजगी के बावजूद अमरीका की सधी प्रतिक्रिया सामने आयी कि इससे उसके भारत से रिश्तों पर कोई असर नहीं होगा। निश्चित ही इससे यह साफ हो जाता है कि दुनिया अब एक या दो ध्रुवीय नहीं रही। अमेरीका यह जान रहा है कि चीन के तानाशाही भरे रवैये से निपटने के लिए भारत का साथ आवश्यक है। वास्तव में इस आवश्यकता ने भी अमेरीका में भारत की अहमियत बढ़ाने का काम किया है। यह अहमियत यही बता रही है कि अब भारत का समय आ गया है। वास्तव में आज अमेरीका ही नहीं, विश्व का हर प्रमुख देश भारत को अपने साथ रखना आवश्यक समझ रहा है। कहना न होगा कि वैश्विक मंच पर योग का विषय हो, या अहिंसा का या फिर आतंकवाद से निपटने का, जलवायु परिवर्तन का मसला हो या फिर जी-20 देशों की अध्यक्षता की बात, भारत, दुनिया को नई दिशा दे रहा है, नई उम्मीदें जगा रहा है।

एक नई ताकत एवं सशक्त अर्थ-व्यवस्था के साथ एक नया ध्रुव बनकर उभर रहा भारत समूची दुनिया की नजरों का ताज बना हुआ है। भारत अब बिना किसी दबाव के किसी भी अन्य ताकतवर देश की नाराजगी मोल लेने का हौसला रखता है। शीतयुद्ध के दौर में दो ध्रुवीय विश्व व्यवस्था के बाद एक ध्रुवीय व्यवस्था का अनुभव दुनिया को मिल चुका है। अब बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में ही संभावनाएं देखी जा रही हैं। ग्लोबल साउथ की आवाज बन भारत वैश्विक भूमिका को खुलकर प्रदर्शित भी कर रहा है। वैसे भी भारत एक बड़े देश के पाले में कभी नहीं रहा। अनेक संकटों से घिरा होकर भी भारत अपनी बात बुलन्दी के साथ दुनिया के सामने रखता रहा है, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री के तीनों कार्यकाल में भारत ने अपने शक्तिशाली होने का भान कराया है।

भारत की रूस से दोस्ती तो बहुत पुरानी है, लेकिन अमरीका, ऑस्ट्रिया या अन्य नए देशों से दोस्ती का यह मतलब नहीं है कि अपने पुराने साथियों से दूर हो जाएं। इजरायल और फिलिस्तीन के मामले में भी यह देखा जा सकता है। इजरायल से नई दोस्ती के बावजूद फिलिस्तीन पर हमारी रणनीति नहीं बदली है। उसी तरह रूस से अच्छे संबंध का यह मतलब नहीं कि यूक्रेन के मामले में उसे क्लीन चिट दे दें। यही वजह है कि राष्ट्रपति पुतिन को मोदी ने शांति का पाठ पढ़ाने में कोई हिचक नहीं दिखाई। भारत की इस भूमिका के बीच अब अमरीका भी यह कहने में संकोच नहीं कर रहा है कि भारत को यूक्रेन युद्ध रोकने की पहल करनी चाहिए। फिलहाल शांति के पक्षधर अन्य देश भारत के साथ मिलकर रास्ता खोजने की पहल कर रहे हैं। ऑस्ट्रिया का रूस और यूक्रेन के बीच संभावित समझौता वार्ता का मंच बनने की इच्छा जाहिर करना यही बताता है।

भारत अहिंसा एवं शांति का हिमायती का देश है और मानता है कि युद्ध से किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता। युद्ध केवल बबार्दी और तबाही लेकर ही आता है। रूस व यूक्रेन के बीच जो सीमा विवाद है वह इन देशों के बीच का मामला है और भारत शुरू से ही कहता रहा है कि इस समस्या का हल केवल बातचीत से ही होना चाहिए। श्री मोदी ने रूस की यात्रा के दौरान भी भारत का यही रुख सामने रखा और स्पष्ट किया कि किसी भी झगड़े को निपटाने का रास्ता केवल वार्तालाप ही हो सकता है। श्री मोदी ने रूस से आस्ट्रिया पहुंच कर भी इस रुख को और खोला और कहा कि भोले-भाले लोगों की हत्या कभी भी स्वीकार्य नहीं हो सकती। इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध के सन्दर्भ में इस तथ्य को अमेरिका को ही सबसे पहले समझना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा से क्या चीन की बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं पर असर पडेगा? क्योंकि रूस एवं चीन के बीच बढ़ती मित्रता एवं प्रगाढ़ता समूची दुनिया के लिये एक चिन्ता का सबब है। भले ही अमरीका की ताकत को देखते हुए रूस ने चीन से निकटता बनाई हो, लेकिन भारत से उसकी दोस्ती इन सबसे ऊपर है। फिर भी चीन एवं पाकिस्तान भारत के दुश्मन ही रहे हैं। इन हालातों के बीच मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया यात्रा भारत के भाग्य के लिए नये सूर्य का उदय कही जा सकती है। प्रधानमंत्री मोदी की जितनी महत्वपूर्ण यात्रा रूस की रही, उतनी ही महत्वपूर्ण ऑस्ट्रिया की यात्रा भी रही। मोदी ने पाकिस्तान के साथ चीन को भी निशाने पर लेते हुए पुतिन से कहा कि चीन जहां पाकिस्तान के आतंकवाद को सहयोग-समर्थन और संरक्षण देने से बाज नहीं आ रहा है, वहीं चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के चलते एशिया ही नहीं, पूरे विश्व के लिए खतरा बन गया है।

एक्सईएन गैरहाजिरः डीएम ने किया जवाब-तलब

डीएम ने अमचुर नेरुआ में लगाई चौपाल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने मानिकपुर ब्लाक के अमचुर नेरुआ गांव के प्राथमिक विद्यालय नेरुआ सोसाइटी में जनचैपाल में गांव की समस्या-गांव में समाधान किया।

शुक्रवार को जिलाधिकारी ने जनचैपाल में एक्सईएन जल निगम एके भारती की गैरहाजिरी पर जवाब-तलब कर एक दिन का वेतन रोकने के निर्देश दिये। ग्रामीणों से कहा कि गांवों में जनचैपाल से शासन की योजनाओं

अमचुर नेरुआ में पौधरोपण करते डीएम आदि।

का लाभ दिलाया जायेगा। सभी विभागों के अधिकारियों ने योजनाओं के बारे में बताया। लाभ नहीं मिल रहा है तो संबंधित विभागों के अधिकारियों से भेंटकर आवेदन करें। जनकल्याणकारी योजनाओं से जुड़े अधिकारियों को निर्देश दिये कि गांव में कैंप लगाकर शासन की महत्वाकांक्षी योजनाओं से पात्रों को लाभान्वित करें। जिनके गोल्डन कार्ड नहीं बने, उनके कार्ड बनवायें। एसडीएम मानिकपुर व तहसीलदार से कहा कि भूमि बाबत मामले में सीमांकन कर निस्तारित करें। कन्या सुमंगला योजना बाबत सचिव-प्रधान से कहा कि गांव की कन्याओं को लाभ दिलायें। किसानों से कहा कि जिन्हें किसान सम्मान निधि नहीं मिल रही थी, वह बैंकों में ई-केवाईसी करायें।

ब्लॉक प्रमुख मानिकपुर अरविंद मिश्रा ने जिलाधिकारी समेत अधिकारियों का अभिनंदन कर कहा कि खुली बैठक में समस्यायें सुनकर जिलाधिकारी ने पाठा में पानी की समस्या को दूर करने की पहल करें। जिलाधिकारी, ब्लॉक प्रमुख समेत अन्य अधिकारियों ने विद्यालय में वृक्षारोपण किया। जनचैपाल दौरान एसडीएम मानिकपुर पंकज वर्मा, तहसीलदार अखिलेश कुमार, डीसी एनआरएलएम ओम प्रकाश मिश्रा, सीबीओ डॉ सुभाष चंद्र, उप निदेशक कृषि राजकुमार, बीएसए बीके शर्मा, डीपीओ आभा सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक अनुराग शर्मा, सहायक विकास अधिकारी पंचायत मोहनलाल सिंह, सचिव वीरेंद्र सिंह, प्रधान श्रीमती प्रिया द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

मंत्री नंदी के पुर्न प्रान्त जन्मोत्सव पर हुआ रुद्राभिषेक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी के पुनः प्राप्त जन्मोत्सव पर चर स्थित सोमनाथ मंदिर में रुद्राभिषेक कर प्रसाद बांटकर मंत्री की लंबी उम्र की कामना की गई।

शुक्रवार को व्यापार मंडल के प्रदेश संगठन मंत्री अंकित केसरवानी, आशुतोष केसरवानी, अंबुर केसरवानी व शुभम केशरवानी ने बताया कि 12 जुलाई 2010 को माफियाओं को चुनौती दे रहे सरकार के कैबिनेट मंत्री नंदी पर आरडीएक्स रिमोट बम से जानलेवा हमला हुआ था। हमले में एक पत्रकार व एक सुरक्षाकर्मी की मौत हुई थी। मंत्री गंभीर घायल होने पर सात माह तक चले इलाज के बाद मंत्री के

रुद्राभिषेक करते अंकित केशरवानी आदि।

लाखों समर्थकों की प्रार्थना बाद मौत को मात देकर लौटे। इसी के चलते साहस दिवस के बतौर प्रदेश के व्यापारी 12 जुलाई को पुनर्जन्म प्राप्त दिवस मनाता है। इसी क्रम में 12 जुलाई को सोमनाथ मंदिर चर में प्रकाश केसरवानी की अगुवाई में रुद्राभिषेक, पूजा-अर्चना व फल बांटकर मंत्री नंदी की लंबी उम्र की कामना की गई। कार्यक्रम में मुख्य संयोजक आशुतोष केसरवानी, व्यापार मंडल जिलाध्यक्ष ओम केसरवानी, महामंत्री गुलाब गुप्ता, अंकुर केसरवानी, भाजपा नगर अध्यक्ष रवि गुप्ता, राहुल गुप्ता, शुभम केशरवानी, यशु, मिंटू, विवेक, मयंक गुप्ता, अतुल केसरवानी, दीपक द्विवेदी, अजय जायसवाल, विक्रम केसरवानी, श्रेय स्वर्णकार, आशीष वर्मा, हर्षित अग्रवाल, रामबाबू गुप्ता, स्वप्निल अग्रवाल, राजेंद्र कुशवाहा, मुशर्रफ हुसैन, राजा खान, आलोक साहू आदि मौजूद रहे।

प्रधान पुत्र आदि ने की दलित की हत्या

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर थाने के कुसेली गांव में अनुसूचित जाति के ग्रामीण की गांव के दबंग प्रधान पुत्र व साथी ने मनरेगा का पैसा निकलवाने के बहाने उसकी हत्या कर दी।

हत्या की ये घटना गुरुवार को हुई। बताया गया कि कुसेली गांव का शिवबोध (34) को गांव के प्रधान सुधीर ठाकुर का लडका उत्तम सिंह व बच्ची पाण्डेय घर से मनरेगा का पैसा निकलवाने के बहाने ले गये। उसकी हत्या कर शव जंगल में फेंक दिया। करंट लगने से उसकी मृत्यु होना बता रहे हैं। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। प्रशासन ने घटना की रिपोर्ट दर्ज नहीं की। दोषियों की गिरफ्तारी के प्रयास नहीं किये। पीड़ित परिवार पोस्टमार्टम हाउस कर्वी में धरने पर बैठा है।

पहाडी में बीएसएनएल ध्वस्त

पहाडी/चित्रकूट। कस्बा पहाड़ी में बीएसएनएल नेटवर्क कई दिनों से ध्वस्त है। कॉलिंग, इंटरनेट सेवा ठप होने से बीएसएनएल उपभोक्ताओं को नेटवर्क का लाभ नहीं मिला रहा। शुक्रवार को बीएसएनएल नेटवर्क पहाडी कस्बे में ध्वस्त नजर आया। अधिकारी-कर्मचारी बीएसएनएल के भरोसे रहते हैं। प्राइवेट कंपनी उपभोक्ताओं को बेहतर सुविधायें दे रही हैं। बीएसएनएल आये दिन ठप रहने से उपभोक्ताओं को सुविधायें नहीं मिलती। आये दिन बीएसएनएल का सर्वर गायब रहता है। कई बार नेटवर्क ध्वस्त होने की शिकायतें उच्चाधिकारियों से की गई हैं। कोई सुधार नहीं हुआ।

तुलसी चैक पर जानलेवा गड्ढे दे रहे हादसों को दावत

अधिकारी व ठेकेदार ने छोडा अधूरा कार्य

अखंड भारत संदेश

राजापुर/चित्रकूट। नगर पंचायत राजापुर में लोनिवि प्रयागराज एनएच राष्ट्रीय राजमार्ग 731 का शासनादेश के तहत निर्माण कार्य दिसंबर 2023 में पूरा करने के आदेश थे। अधिकारियों व ठेकेदार की उदासीनता से अधूरा कार्य छोड़ दिया गया। सड़क में बड़े-बड़े गड्ढे हैं, जो हादसे को दावत दे रहे हैं।

राजापुर नगर पंचायत में नाला भी आधा-अधूरा बनाया है। नालों

तुलसी चौक में जलभराव व गड्ढे।

में लगाई रेलिंग तूफान व बारिश से जगह-जगह टूटकर गिर गई है। नालों पर लगी स्ट्रीट लाइट धड़ाम हो गई है। तीन माह से ठेकेदार ने काम बंद कर दिया है। केंद्र सरकार की सड़क यातायात व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने को नगर पंचायत राजापुर में राष्ट्रीय राजमार्ग 731ए व 731एजी कर्वी बाइपास से यमुना सेतु तक प्रस्तावित है। तुलसी चैक के पास बड़े- बड़े जानलेवा गड्ढे होने से कई बार हादसे हो चुके हैं। विभागीय अधिकारियों व ठेकेदार ने कार्य पूरा नहीं किया। कस्बावासियों समेत राहगीरों में आक्रोश है।

नगर पंचायत अध्यक्ष संजीव मिश्रा, अमित मिश्रा उर्फ दीपू, पूर्व सभासद सतीशचन्द्र मिश्रा, हरप्रकाश मिश्रा आदि ने बताया कि दिसंबर 2023 तक कार्य पूरा करने के शासनादेश थे। आज तक कार्य पूरा न कर अधूरा छोड़ा है। तीन माह से ठेकेदार व अधिकारियों ने कार्य ठप करा दिया है। बारिश होने से आधे-अधूरे बने नाले दुकानदारों के घरों में पानी घुसने से लोगों को भारी परेशानियां हो रही हैं। नालों में लगी स्ट्रीट लाइट खम्भे धड़ाम हैं। नालों में लगी रेलिंग जगह-जगह टूटकर गिर चुकी हैं। प्रतीत होता है कि भारी-भरकम धनराशि का बंदरबांट हुआ है। कर्वी बाइपास, तुलसी चैक में बड़े-बड़े गड्ढे होने से हादसों को दावत दे रहे हैं। 11 अगस्त से तुलसी जन्म महोत्सव शुरू हो रहा है। दूर-दराज से तुलसी भक्त शामिल होने आते हैं। अव्यवस्थाओं को देखकर कस्बा समेत ग्रामीणों में आक्रोश है। मांग किया कि राष्ट्रीय राजमार्ग में हुए कार्यों की गुणवत्ता की जांच टीएसी टीम से कराई जाये, ताकि सरकार के धन का दुरुपयोग न हो सके।

बडे पैमाने पर पौधरोपण की डीएम ने बनाई कार्य योजना

जिले में हरियाली बढाने को डीएम ने उठाये कदम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने वृक्षारोपण बाबत बैठक में कहा कि प्रधानमंत्री ने पांच जून को पेड़ लगाकर एक पेड़ मां के नाम की शुरुवात की थी। मुख्यमंत्री की अपेक्षानुसार जिले की हरियाली व बढ़ते प्रदूषण तथा पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने को प्रदेश सरकार ने हरित आवरण में वृद्धि को जनआंदोलन से 20 जुलाई तक नामित नोडल प्रभारी व जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में वृक्षारोपण कराया जाये।

शुक्रवार को कलेक्टेट्रट सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए

बैठक में निर्देश देते डीएम।

डीएम ने कहा कि जो पौधा रोपा जा रहा है, उसकी सेल्फी लेकर मेरी लाइफ ऐप पर डाउनलोड कर सकते हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि राज्य वन नीति में बडे पैमाने पर जन सामान्य खासतौर पर महिलाओं, विद्यार्थियों, किसानों, दिव्यांगों, दृष्टिबाधितों, पूर्व सैनिकों, समाज के अल्प आय के लोगों व वनों के पास रहने वाले ग्रामीणों के सहयोग से वानिकी कार्य जन सहभागिता से चलायें। डीएफओ ने कहा कि गड्ढो की खुदाई की आख्या आ गई है। वन भूमि, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, निजी भूमि, कृषि, शिक्षण संस्थानों समेत ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में 7420520 पौधे लगाने हैं। पौधरोपण नजदीकी पौधशाला से गांव व संस्थाओं को दिये जायेंगे। जिले के चिन्हित 948 पौधे विरासत के बतौर लगाये जायेंगे। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों से पौधरोपण कार्य योजना बाबत जानकारी लेकर निर्देश दिये कि समय से सभी प्रजातियों के पौधों को लेकर लगवायें। सीबीओ को निर्देश दिये कि चारागाह, गौशालाओं की जमीन पर पौधरोपण कर फोटोग्राफ भेजें। बीएसए को निर्देश दिये कि विद्यालयों में सहजन के ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगायें। कृषि उपनिदेशक को निर्देश दिये कि किसान सम्मान निधि प्राप्त लाभार्थियों से भी पौधे लगवायें। पुलिस विभाग को सभी थानों व जिला खनिज अधिकारी को निर्देश दिये कि पट्टाधारकों से पौधे लगवायें। ट्रीगार्ड भी लगवायें। सभी तहसीलदारों को निर्देश दिये कि नगर विकास की चिन्हित जमीन की सूची दें, ताकि पौधरोपण हो सके। स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिये कि सभी सीएचसी, पीएचसी व हेल्थ वेलनेस सेंटर पर पौधे लगवायें। सभी विभागों से कहा कि पिछले वर्षों में पर्यावरण बदलाव हुआ है। अधिक से अधिक पौधरोपण करायें। कार्य योजना बनाकर गड्ढे खुदवाकर पौधरोपण करायें।

बैठक में एडीएम एफआर उमेश चंद्र निगम, डीएफओ नरेंद्र सिंह, कृषि उप निदेशक राजकुमार, डीसी एनआरएलएम ओम प्रकाश मिश्रा, सीबीओ सुभाष चंद्र, एसडीओ राजीव रंजन सिंह, डीपीआरओ इंद्र नारायण सिंह, बीएसए बीके शर्मा आदि मौजूद रहे।

योगी के पर्यावरण संरक्षण को पलीता लगा रहा रेंजर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पर्यावरण संरक्षण के आदेशों की धज्जियां उडाई जा रही हैं। राजीपुर टाइगर रिजर्व मारकुण्डी रेंज भाग-2 के जंगल में लोगों की आवाजाही पर रोक लगी है, वहां हजारों पेड रेंजर की मिलीभगत से कटवा दिये गये हैं।

ये खुलासा शुक्रवार को ग्रामीणों ने किया। बताया गया कि रानीपुर टाइगर रिजर्व में भू-माफिया ने सैकडों बीघा जमीन खरीदी है। इस जमीन पर तमाम जंगली व नीम आदि के पेड लगे थे। इन पेडों को मारकुण्डी रेंज भाग-2 के रेंजर से मिलीभगत कर भू-माफिया ने पेडों को कटवा दिया है। योगी सरकार के

पेड काटते मजदूर।

पर्यावरण संरक्षण के दावों को वन विभाग ही पलीता लगा रहा है। प्रत्येक वर्ष पेड लगाने के दावे किये जाते हैं। पेडों के संरक्षण के कोई उपाय नहीं किये जाते।

उस पर हरे-भरे पेडों को कटवाने में भू-माफिया का मारकुण्डी रेंज के रेंजर जमकर सहयोग कर रहे हैं। जेसीबी मशीन से हरे पौधों को तहस-नहस किया गया है। ये पेड धडल्ले से काटे गये हैं। भू-माफिया रानीपुर टाइगर रिजर्व क्षेत्र में जमीन खरीदकर कब्जा कर रहा है। इस मामले की बारीकी से जांच होनी चाहिए।

20 से 23 जुलाई तक जानकीकुण्ड में लगेगा अस्थि रोग निदान शिविर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। परमहंस संत रणछोड़ दास जी महाराज के स्थापित श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट से संचालित जानकीकुण्ड चिकित्सालय में प्रतिवर्ष की भांति गुरु पूर्णिमा पर 35वां जटिल अस्थि रोग निदान शिविर लग रहा है। शिविर में परम्परागत डॉ मनोज पटेल की टीम व जानकीकुण्ड चिकित्सालय के अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ महेश होसामने मरीजों को सेवायें देंगे। शुक्रवार को डॉ मनोज पटेल की टीम 20 से 23 जुलाई तक सेवायें देंगे। जटिल अस्थि रोग निदान को ऑपरेशन होंगे। शिविर में पोलियो से विकलांग व घुटनों का प्रत्यारोपण, रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन, हड्डियों की टूट-फूट का इलाज व ऑपरेशन होंगे। शिविर बाबत श्री सदगुरू सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी/डायरेक्टर डा बीके जैन ने बताया कि पहले लोग पोलियो बीमारी से ग्रसित रहते थे। ट्रस्ट बोर्ड ने चित्रकूट व आसपास के लोगों को लाभ पहुंचाने को 1987 में पहला पोलियो शिविर लगाया था। भारत सरकार ने देश को पोलियो

डॉ बीके जैन।

मुक्त करने को वैक्सीनेशन व पोलियो ड्रॉप से देश मार्च 2014 में पोलियो मुक्त देश घोषित हो गया। पोलियो मुक्त देश के बाद से शिविर को जटिल अस्थि रोग निदान शिविर के नाम से लगाया जाता है। यहां के लोगों को हड्डी संबंधी बीमारियों से निजात दिलाई जा सके। शिविर में निःशुल्क कैलिपर्स व अन्य उपकरण बांटे जायेंगे। निवास, विकलांगता प्रमाण के साथ दो फोटो साथ लायें। डा जैन ने अपील किया कि जिन लोगों को हड्डी बाबत बीमारी हो, वे शिविर से लाभ उठायें।

दुष्प्रचार से जनता के बीच नहीं रख सके बातः पूर्व सांसद

मतदाता सम्मान समारोह सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। मऊ-मानिकपुर विधानसभा मतदाता सम्मान समारोह मऊ नगर पंचायत परिसर में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री/पूर्व सांसद आरके सिंह पटेल ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता व मतदाता राष्ट्रवाद से परिपूर्ण है। मुझ जैसे छोटे कार्यकर्ता को समर्थन दिया है। हृदय से आभार जताते हुए संसदीय कार्यकाल में किसी कार्यकर्ता-मतदाता से भेदभाव नहीं किया।

शुक्रवार को सम्मान समारोह में पूर्व सांसद आरके सिंह पटेल ने कहा कि विधायक, मंत्री व सांसद बनाया है। लोकसभा में

मतदाता सम्मान समारोह में बोलते पूर्व सांसद।

336000 वोट देकर आशीर्वाद दिया, विरोधियों के भ्रामक दुष्प्रचार से जनता के बीच अपनी बात नहीं रख सके। आजीवन भाजपा कार्यकर्ता के बतौर जनता की सेवा करते रहेंगे। पीएम नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने के प्रयास जारी रहेंगे। अध्यक्षीय भाषण जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी ने कहा कि कार्यकर्ता सर्वोपरि था, है व रहेगा। चुनाव हारे हैं, बाजी नहीं हारे। देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी हैं। सरकार हमारी है, कार्यकर्ता पूरे उत्साह से पार्टी के कार्यों में हिस्सा लें। विश्वास दिलाया कि जिले के कार्यकर्ताओं का सम्मान व जनता के कार्यों को प्राथमिकता से करते रहेंगे। मतदाताओं से कहा कि उनकी समस्या व सम्मान को पार्टी के कार्यकर्ता कंधा से कंधा मिलाकर खड़े हैं। जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव ने कहा कि प्रत्येक गांव को विकसित करने को संकल्पित हैं। समारोह में जिला महामंत्री राघवेंद्र सिंह, नगर पंचायत अध्यक्ष मऊ अमित द्विवेदी, ब्लॉक प्रमुख मानिकपुर अरविंद मिश्रा, जिला सह मीडिया प्रभारी अर्पित जायसवाल, कार्यक्रम सह संयोजक अखिलेश रैकवार, अनुसूचित मोर्चा के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सुरेश अनुरागी, जिला पंचायत सदस्य अर्जुन शुक्ला, राजाराम पाल, विनीत द्विवेदी, मंडल अध्यक्ष ओमप्रकाश बालाजी, मनीष सिंह, प्रदीप सिंह, मोहनदास मिश्रा, आशीष पांडे, मुन्नालाल प्रजापति आदि मौजूद रहे। संचालन मंडल महामंत्री सर्वेश ने किया।

डिजिटल हाजिरी के विरोध में शिक्षकों ने दिया धरना, जायज मांगे न माने जाने तक जारी रहेगा विरोध

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय मऊ में उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ की अध्यक्षता में सभी शिक्षकों ने डिजिटल हाजिरी के विरोध में धरना-प्रदर्शन दिया। डिजिटल हाजिरी के खिलाफ शिक्षकों ने हुंकार भरते हुए विद्यालय समय बाद जिले के मऊ ब्लाक में खंड शिक्षा अधिकारी की मौजूदगी में डिजिटल हाजिरी के विरोध में जायज मांगों के समर्थन में धरना-प्रदर्शन किया।

शुक्रवार को धरना-प्रदर्शन में शिक्षकों ने डिजिटल हजारी को अव्यवहारिक बताया। कहा कि सभी

प्रदर्शन करते शिक्षक।

कार्यालयों व सचिवालय तक में कार्मिक हाजिरी की पुरानी व्यवस्था लागू है तो फिर बेसिक शिक्षा विभाग में ऑनलाइन हाजिरी की व्यवस्था क्यों? जायज मांगों को अभी तक पूरा नहीं किया। ऊपर से ये डिजिटल हाजरी थोपकर दोहरा मापदंड अपनाया जा रहा है, ये अन्याय है। शिक्षकों ने कहा कि उनकी जब तक हाफडे सीएल, ईएल, कैशलेस चिकित्सा, राज्य कर्मचारी का दर्जा, पुरानी पेंशन आदि जायज मांगों को नहीं माना जाता, तब तक शिक्षक डिजिटल हाजिरी का विरोध करते रहेंगे। इस मौके पर उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ जिला उपाध्यक्ष आलोक गर्ग, जिला प्रवक्ता संकल्प पांडेय, डॉ अखिलेश मिश्रा, वीरेंद्र श्रीवास्तव, वीरपाल सिंह, अजय सिंह, अजय साहू, बीरभान सिंह, शारदेन्दु शुक्ला, दिलीप शुक्ला समेत मऊ इकाई के संघर्ष मोर्चा अध्यक्ष अजीत पांडेय, विवेक सिंह, सुशील विश्वकर्मा आदि पदाधिकारी समेत सैकड़ो शिक्षक-शिक्षिका मौजूद रहे।

परेड देख ड्रिल सुधार के एसपी ने दिये निर्देश

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने पुलिस लाइन में साप्ताहिक परेड की सलामी लेकर निरीक्षण किया। परेड निरीक्षण दौरान अधिकारी-कर्मचारी का टर्न आउट देखा।

शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक ने परेड ग्राउण्ड में मौजूद टोलियों की ड्रिल देखी। ड्रिल में सुधार के निर्देश दिये। प्रतिसार निरीक्षक को निर्देश दिये कि ड्रिल में और सुधार करें। उन्होंने परिवहन शाखा, आवासीय परिसर, मेस का भ्रमण कर भोजन को साफ-सफाई से बनवाने के निर्देश दिये। आदेश कक्ष में पुलिस कर्मियों का अर्दली रूम किया। इस मौके पर सीओ सिटी राज कमल, प्रतिसार निरीक्षक शिवनारायण, पीआरओ प्रदीप पाल व अन्य अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

दुष्कर्म वारंटी दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में थानाध्यक्ष बहिलपुरवा राम सिंह की अगुवाई में दरोगा महेन्द्र सिंह की टीम ने अपहरण, दुष्कर्म व पाक्सो एक्ट तथा एससी/एसटी एक्ट के वारंटी पप्पू उर्फ मुर्तजा पुत्र मुस्तफा पिपरौही पुरवा मजरा सेमरदहा को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा महेन्द्र सिंह, दरोगा अनुभव वर्मा, दीवान जय सिंह व सिपाही धीरेन्द्र यादव शामिल रहे।

18 क्वार्टर शराब समेत एक दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण व बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मारकुण्डी शिवआसरे की अगुवाई में दरोगा इंदल सिंह ने बबलू सिंह उर्फ बब्बू पुत्र गुलाब सिंह इटवां डुडैला के कब्जे से 18 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। उस पर थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा इंदल सिंह, सिपाही सूर्यकान्त यादव व लालू यादव शामिल रहे।

दबंगों ने की ग्रामीण की पिटाई

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। थाना क्षेत्र के कटैया खादर गांव के शिवजतन के डेरा के कल्लू पुत्र ननकू ने थाने में दी तहरीर में कहा कि दस जुलाई की रात आठ बजे वह पुरानी रंजिश के चलते निमंत्रण में गांव में दबंग सुभाष पुत्र सुक्खा ने चेहरे व गले में दांत से काटकर उस पर चढा था। घटना की रिपोर्ट पुलिस ने दर्ज कर ली है। शुक्रवार को पीडित ने कहा कि दबंग व उसके भाई ने उसकी बेरहमी से पिटाई की है। उसके भाई कल्लू ने बीच-बचाव किया तो उसे भी सरिया से पीटा है। पीडित को अंदरूनी चोटें आई हैं। मौके पर 112 पुलिस के आने पर दबंग भाग खडे हुए। उसकी इस कदर पिटाई की कि वह बेहोश हो गया। दबंगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही कर उसका डाक्टरी परीक्षण कराया जाये। पुलिस ने मामला दर्जकर पीडित को डॉक्टरी परीक्षण को भेजा है।

कौबरा में रीबोर में हुआ घोटाला

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर ब्लाक के कौबरा गांव में वित्तीय वर्ष 22-23 व 23-24 में रीबोर के नाम पर प्रधान-सचिव ने जमकर घोटाला किया है। रीबोर के नाम पर गांव में भ्रष्टाचार की गंगा बहाई है। लोगों को बारिश के मौसम में भी पानी नहीं मिल रहा। सभी रीबोर की जांच कराई जाये तो बड़ा घोटाला सामने आयेगा। मनरेगा के कार्यों की टीएसी जांच हो तो प्रधान-सचिव लम्बे से नपेंगे।

नेपाल में एक बस चालक ने अपनी जान देकर बचाई 30 यात्रियों की जान

काठमांडू। नेपाल में गुरुवार-शुक्रवार की दरमियानी रात बस यात्रियों के लिए सबसे खौफनाक रात रही। भूस्खलन की चपेट में आने से जहां दो यात्री वाहन नदी में डूब गए वहीं एक ऐसी घटना सामने आई है जिसमें बस चालक ने अपनी जान देकर 30 यात्रियों की जान बचाई।

स्थानीय अधिकारियों के मुताबिक भारी बारिश के बीच हुए भूस्खलन के कारण पहाड़ों से मलबे के साथ लगातार बड़े-बड़े पत्थर सड़क पर आ रहे थे। इसी बीच बुटवल से 30 यात्रियों को लेकर काठमांडू आ रही एक यात्री बस बीच रास्ते में नारायणगढ़ मुगलिंग के पास इन पत्थरों की चपेट में आ गई। इस बस में सवार एक यात्री ने पुलिस को बताया कि चालक 36 वर्षीय मेघराज विक की तरफ एक बड़ा पत्थर आगे वाले शीशे पर गिर गया जिसके कारण वह चालक गंभीर रूप से लहूलुहान हो गया। चालक ने तत्काल सूझबूझ दिखाते हुए बस का ब्रेक लगा दिया जिससे बस खाई में गिरने से बच गई। यात्रियों ने बताया कि बस जहां रुकी थी उसके कुछ दूरी पर उनकी आंखों के सामने पहाड़ से बहुत बड़ा मलबा गिरा जिसके कारण सड़क अवरुद्ध हो गया।

बस चालक द्वारा ब्रेक लगाने के कारण किसी भी यात्री को कुछ नहीं हुआ और एक बड़ी दुर्घटना का शिकार होने से सभी बच गए। चितवन पुलिस ने बताया कि सिर पर गहरी चोट लगने और अत्यधिक रक्तस्राव के कारण चालक ने अस्पताल के रास्ते में दम तोड़ दिया। चितवन पुलिस ने सभी यात्रियों को बस से उतार कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।

अमेरिकी एनएसए ने कहा- भारत को दीर्घकालिक, भरोसेमंद साझेदार के रूप में रूस पर दांव लगाना

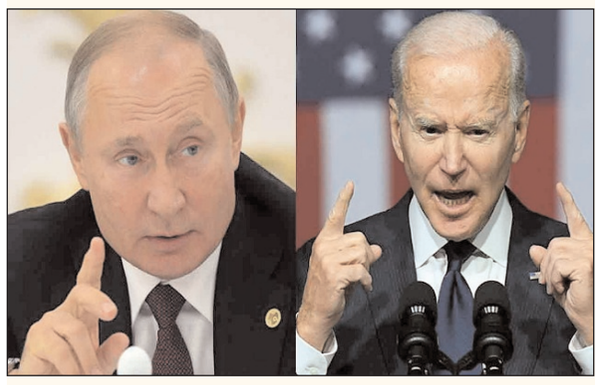

ठीक नहीं

वाशिंगटन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया रूस की यात्रा के बाद दोनों के संबंधों को लेकर अमेरिका के शीर्ष अधिकारी ने गुरुवार को भारत को आगाह किया कि एक दीर्घकालिक, भरोसेमंद साझेदार के रूप में रूस पर दांव लगाना ठीक नहीं है।

उन्होंने दावा किया कि भारत और चीन के बीच संघर्ष की स्थिति में रूस, नई दिल्ली के बजाय बीजिंग का पक्ष लेगा। अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) जेक सुलिवन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हाल की मास्को यात्रा के बारे में पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए यह टिप्पणी की। मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ व्यापक वार्ता की थी।

सुलिवन ने कहा, हमने भारत समेत दुनिया के हर देश को यह स्पष्ट कर दिया है कि दीर्घकालिक, भरोसेमंद साझेदार के रूप में रूस पर भरोसा करना अच्छा दांव नहीं है। सुलिवन पिछले महीने भारत के अपने समकक्ष अजीत डोभाल के साथ बैठक के लिए भारत आए थे। शीर्ष अमेरिकी अधिकारी ने अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी से भी मुलाकात की थी। सुलिवन ने कहा, ह्यह्यरूस चीन के करीब होता जा रहा है। वास्तव में, यह चीन का साझेदार बनता जा रहा है। इस तरह, वे हमेशा भारत के बजाय चीन का पक्ष लेंगे। हालांकि उन्होंने माना कि भारत जैसे देशों के रूस के साथ ऐतिहासिक संबंध हैं और यह स्थिति नाटकीय रूप से रातों-रात बदलने वाली नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी 22वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए दो दिन के लिए रूस में थे और यूक्रेन में जारी संघर्ष के बीच उनकी इस यात्रा पर पश्चिमी देशों की भी करीबी नजर रही है।

दक्षिण अफ्रीका: 'आतंकवादी हमले' में निशाना बनायी गई मस्जिद खुली रहेगी

जोहान्सबर्ग: दक्षिण अफ्रीका के तटीय शहर डरबन में एक मस्जिद के ट्रस्टियों ने बुधवार को वहां नमाज जारी रखने की बात कही. इस मस्जिद को एक नाकाम बम विस्फोट के प्रयास में निशाना बनाया गया था. मस्जिद के ट्रस्टियों ने कहा कि यह हमला मुस्लिम समुदाय को उनके धर्म का पालन करने से नहीं रोक सकेगा.

डरबन नॉर्थ के उपनगर में मस्जिदुर रहमान के ट्रस्टी यूसुफ देसाई ने बुधवार को स्थानीय मीडिया को बताया कि सोमवार को पुलिस को बुलाया गया, जब मस्जिद के सुरक्षा गार्ड ने मस्जिद के ड्राइववे में घुसे एक वाहन से बाहर निकलने वाले एक व्यक्ति से संपर्क किया.

जैसे ही गार्ड उसके पास पहुंचा, वाहन तेजी से भाग गया, लेकिन उससे पहले व्यक्ति ने मस्जिद में कुछ फेंका. दक्षिण अफ्रीकी पुलिस सेवा के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जे नाइकर ने पुष्टि की कि बम निरोधक दस्ते के तकनीशियनों ने मस्जिद स्थल पर वाणिज्यिक विस्फोटकों से बने एक विस्फोटक उपकरण की पहचान की, जिसमें फ्यूज लगाई गई थी. हालांकि इसे विस्फोट करने के लिए सेट नहीं किया गया था।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

त्रिशुली नदी में गिरी दो बसों और 65 यात्रियों का 15 घंटे के रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद भी सुराग नहीं

काठमांडू। त्रिशुली नदी में शुक्रवार सुबह 65 यात्रियों के साथ गिरी दो यात्री बसों के 15 घंटे बाद भी ना तो बस का कोई सुराग मिला है और ना ही एक भी यात्री के बारे में कुछ पता लग पाया है। अंधेरा होने के कारण आज तलाशी का काम बन्द कर दिया गया है। कल सुबह फिर से रेस्क्यू ऑपरेशन किया जाएगा।इस ऑपरेशन में नेपाली सेना और सशस्त्र पुलिस बल के 12 गोताखोरों और 100 से अधिक सुरक्षाकर्मियों को लगाया गया है। नेपाल पुलिस के अनुसार शुक्रवार को तड़के 3 बजे के करीब दो यात्री बसें दुर्घटनाग्रस्त होकर त्रिशुली नदी में गिर गई थी। इनमें से एक बस बीरगंज से काठमांडू की तरफ आ रही थी और दूसरी बस और काठमांडू से गौर की तरफ जा रही थी। दोनों यात्री बसें भूस्खलन की चपेट में आने के कारण नदी में गिरी थीं। इस दुर्घटना के 6 घंटे बाद राहत व बचाव दल दुर्घटनास्थल पर पहुंचा था। नेपाली सेना, सशस्त्र पुलिस बल के गोताखोरों और 100 से अधिक सुरक्षा बलों के लगातार 15 घंटे तक खोजी कार्य किए जाने के बावजूद अब तक ना ही दोनों बसें मिली हैं और ना ही इन बसों में सवार 65 यात्रियों के बारे में कोई सुराग मिल पाया है। 15 घंटे की मशक्कत के बाद सिर्फ बस की खिड़की का पर्दा हाथ लगा है सशस्त्र प्रहरी बल के डीआईजी पुरुषोत्तम थापा ने बताया कि गोताखोरों ने नदी के बहाव की दिशा में 10 किलोमीटर तक खोजबीन की है, लेकिन कुछ भी हाथ नहीं लगा।

उन्होंने कहा कि बड़े-बड़े चुम्बकों के सहारे नदी की गहराई में भी ढूंढा गया, लेकिन दोनों में से एक भी बस का पुर्जा भी नहीं मिला है। डीआईजी थापा ने बताया कि अंधेरा होने के कारण आज तलाशी का काम बन्द कर दिया गया है। कल सुबह फिर से रेस्क्यू ऑपरेशन किया जाएगा। इस रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए नेपाली सेना और सशस्त्र पुलिस बल के 12 गोताखोर और 100 से अधिक सुरक्षाकर्मी को लगाया गया है।

नेपाली संसद में विश्वास मत हारकर 18 महीने बाद सत्ता से बाहर हुए प्रधानमंत्री 'प्रचंड'

काठमांडू। प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल 'प्रचंड' संसद में विश्वास मत हासिल करने के दौरान पराजित हो गए हैं। विश्वास मत खोने के साथ ही प्रचंड 18 माह बाद सत्ता से बाहर हो गए हैं। राष्ट्रपति कानूनी परामर्श ले रहे हैं और नई सरकार का गठन आज ही किए जाने की उम्मीद है

प्रधानमंत्री प्रचंड ने आज प्रतिनिधि सभा में अपना विश्वास हासिल करने के लिए प्रस्ताव रखा। विश्वास मत के पक्ष में सिर्फ 63 सांसदों ने मतदान किया, जबकि विश्वास मत के विरोध में 194 सांसदों ने वोट डाला।

विश्वास मत में पराजित होने के साथ ही संवैधानिक प्रावधानों के तहत प्रचंड 18 माह बाद सत्ता से बाहर हो गए हैं। विश्वास मत के दौरान माओवादी, राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी और एकीकृत समाजवादी पार्टी के सांसदों ने उनके पक्ष में मतदान किया। नेपाली कांग्रेस, नेकपा एमाले, राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी, जनता समाजवादी पार्टी, जनमत पार्टी, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी, नागरिक उन्मुक्ति पार्टी के सांसदों ने विपक्ष में मतदान किया।

मतविभाजन के क्रम में सदन में कुल 258 सांसदों की उपस्थिति रही। सदन में उपस्थित नेपाल मजदूर किसान पार्टी के एक सांसद ने खुद को मतदान प्रक्रिया से अलग रखा। राष्ट्रीय जनमोर्चा, आम जनता पार्टी और दो स्वतंत्र सांसद मतदान के दौरान अनुपस्थित रहे। अब इसके बाद राष्ट्रपति की तरफ से नई सरकार का गठन किए जाने की तैयारी है। इसके लिए राष्ट्रपति ने संविधान विशेषज्ञों को राष्ट्रपति भवन में विचार विमर्श के लिए बुलाया है। नेपाल के संविधान के मुताबिक गठबन्धन सरकार के असफल होने के बाद सबसे बड़ी पार्टी के संसदीय दल के नेता को प्रधानमंत्री बनाने के लिए आमंत्रित किए जाने का प्रावधान है।

नाटो शिखर सम्मेलन में फिर फिसली बाइडेन की याददाश्त, जेलेंस्की को 'पुतिन' और हैरिस को 'उप राष्ट्रपति ट्रंप' बोल गये अमेरिकी राष्ट्रपति

वाशिंगटन : अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन अपनी बढ़ती उम्र और उससे संबंधित स्वास्थ्य चिंताओं के कारण आलोचकों के निशाने पर हैं. अब एक बार फिर उन्होंने कुछ ऐसा कर दिया है जो उनके आलोचकों की चिंता को और पुष्ट करता है. अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन गुरुवार को नाटो के एक कार्यक्रम में यूक्रेन के वोलोडिमिर जेलेंस्की को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के रूप में पेश किया और बाद में वाशिंगटन में एक एकल प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपने उपराष्ट्रपति कमला हैरिस का नाम रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप के साथ मिला दिया.

81 वर्षीय बाइडेन ने 10 जुलाई को वाशिंगटन में नाटो शिखर सम्मेलन में कहा कि और अब मैं इसे यूक्रेन के राष्ट्रपति को सौंपना चाहता हूं, जिनमें दृढ़ संकल्प के साथ-साथ साहस भी है, देवियों और सज्जनों, राष्ट्रपति पुतिन... बाइडेन के यह कहते ही कमरे में मौजूद लोगों की सांसें थम गईं.

दो सेकंड रुकने के बाद, उन्होंने तुरंत खुद को सुधारा और कहा कि राष्ट्रपति जेलेंस्की राष्ट्रपति पुतिन को हराने जा रहे हैं. उन्होंने कहा कि मैं पुतिन को हराने पर पूरा ध्यान केंद्रित कर रहा हूं. जेलेंस्की ने बाइडेन की टिप्पणियों का जवाब देते हुए कहा कि मैं (पुतिन से) बेहतर हूं जिस पर बाइडेन ने जवाब दिया कि आप बहुत बेहतर हैं. इसके बाद कमरे में मौजूद कुछ लोग हंसे.

इससे पहले कि जेलेंस्की अपना संबोधन शुरू करते नाटो शिखर सम्मेलन में साथी नेताओं ने बाइडेन के बारे में सवाल पूछे, और उनके जवाब काफी हद तक समर्थनपूर्ण रहे. फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन ने कहा कि हम सभी कभी-कभी गलती करते हैं, यह मेरे साथ हुआ है और कल फिर से हो सकता है. मैं आपसे क्षमा मांगूंगा.

बाद में एक एकल प्रेस कॉन्फ्रेंस में, बाइडेन से बार-बार उनकी उम्मीदवारी पर उनकी उम्र को लेकर चिंताओं के बारे में पूछा गया. उन्होंने जवाब दिया कि मुझे काम पूरा करना है. एक शर्मनाक गलती में, उन्होंने गलती से अपनी उप-राष्ट्रपति कमला हैरिस को 'उप-राष्ट्रपति ट्रंप' कह दिया. देखिए, अगर उपराष्ट्रपति ट्रंप राष्ट्रपति बनने के योग्य नहीं होतीं, तो मैं उन्हें उप-राष्ट्रपति नहीं चुनता. इसलिए वहीं से शुरूआत करें. बाइडेन ने हैरिस में अपने विश्वास के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए कहा. सीएनएन ने बताया कि ट्रंप ने बाइडेन के इस चूक का फायदा उठाते हुए ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट किया.

सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रंप ने बाइडेन की इस गलती का वीडियो साझा करते हुए लिखा कि क्रुक्ड जो ने अपने 'बिग बॉय' प्रेस कॉन्फ्रेंस की शुरूआत इस तरह की कि मैं उपराष्ट्रपति ट्रंप को उपराष्ट्रपति के रूप में नहीं चुनता, हालांकि मुझे लगता है कि वह राष्ट्रपति बनने के योग्य नहीं थीं... शानदार काम, जो!

अपने प्रतिद्वंद्वी डोनाल्ड ट्रंप, जो 78 वर्ष के हैं, के खिलाफ बहस में उनके प्रदर्शन के बाद, पिछले दो हफ्तों से बाइडेन का फिर से चुनाव अभियान संघर्ष कर रहे हैं. इस बीच, प्रतिनिधि सभा में चार और डेमोक्रेट ने बाइडेन से अपना अभियान समाप्त करने का आह्वान कियाः इलिनोइस के ब्रैड श्नाइडर, एरिजोना के ग्रेग स्टैंटन, हवाई के एड केस और मिशिगन की हिलेरी स्कोल्टेन। स्टैंटन ने एक तैयार बयान में कहा कि हमारे देश की खातिर, राष्ट्रपति के लिए नेताओं की नई पीढ़ी को मशाल सौंपने का समय आ गया है. इसके बाद, कुछ सीनेट डेमोक्रेट ने कहा कि वे बाइडेन अभियान अध्यक्ष जेन ओ'मैली डिलन और अन्य शीर्ष सहयोगियों के साथ बैठक के बाद भी बाइडेन की जीतने की क्षमता के बारे में अनिश्चित है.

अमेरिका ने यूक्रेन को नई पैट्रियट वायु रक्षा प्रणाली देने का वादा किया

वाशिंगटन: अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने यूक्रेन के लिए 225 मिलियन अमेरिकी डॉलर के नए सैन्य सहायता पैकेज की घोषणा की है. इस पैकेज के तहत यूक्रेन को पैट्रियट वायु रक्षा प्रणाली भी देगा. यह प्रणाली रूसी हवाई हमलों से अपने आसमान की रक्षा करने में मदद करने में मदद करेगा. यह घोषणा वाशिंगटन डीसी में 10 जुलाई को आयोजित नाटो शिखर सम्मेलन में बाइडेन और यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की के बीच एक बैठक के दौरान की गई थी। यह दूसरी पैट्रियट प्रणाली है जिसका वादा अमेरिका ने यूक्रेन से किया है. द हिल की रिपोर्ट के अनुसार, इस प्रणाली को सीधे अमेरिकी सेना की सूची से लिया जाएगा और जल्दी ही यूक्रेन भेजा जाएगा. इस वायु रक्षा प्रणाली में कई अन्य शामिल हैं जिनकी घोषणा बाइडेन ने इस सप्ताह शिखर सम्मेलन में की. 9 जुलाई को कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए, बाइडेन ने यूक्रेन के लिए वायु रक्षा उपकरणों के ऐतिहासिक दान की घोषणा की। अपनी घोषणा में बाइडेन ने बताया कि अमेरिका, जर्मनी, नीदरलैंड, रोमानिया और इटली कीव को पांच अतिरिक्त रणनीतिक वायु रक्षा प्रणालियों के लिए उपकरण प्रदान करेंगे. बाद में, अमेरिका, जर्मनी और रोमानिया के एक संयुक्त बयान में कहा गया कि वे यूक्रेन को पैट्रियट बैटरी देंगे. नीदरलैंड एक और पैट्रियट बैटरी बनाने के लिए घटक प्रदान करेगा. इसके अलावा इटली एक रअटढ-ळ वायु रक्षा प्रणाली प्रदान करेगा। बाइडेन ने कहा कि आने वाले महीनों में, अमेरिका और उसके साझेदार कीव को दर्जनों अतिरिक्त सामरिक वायु रक्षा प्रणालियां प्रदान करेंगे. इस सप्ताह, नाटो देशों ने यूक्रेन को रूसी हमलों से खुद को बचाने में मदद करने के लिए और अधिक हथियार भेजने का वादा किया. यह वादा हाल ही में हिंसा में वृद्धि के बाद आया है, जिसमें 8 जुलाई को कीव में बच्चों के अस्पताल पर मिसाइल हमला शामिल है जिसमें कम से कम 42 लोग मारे गए थे. अस्पताल पर हमला एक बड़े हमले का हिस्सा था जिसमें 40 से अधिक मिसाइलों के साथ पांच यूक्रेनी शहरों को निशाना बनाया गया था. नाटो के समर्थन का उद्देश्य यूक्रेन को रूसी आक्रमण का विरोध जारी रखने में मदद करना है.

विश्वास मत से पहले ही प्रचण्ड ने खाली किया सरकारी आवास, संसद से सीधे निजी निवास जाने की तैयारी

काठमांडू। प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्ड ने संसद में विश्वास मत लेने से ठीक पहले अपने सरकारी बंगले को छोड़ दिया है। संसद भवन में विश्वास मत के बाद प्रधानमंत्री प्रचण्ड सीधे अपने निजी निवास में जाने की तैयारी में हैं।

प्रतिनिधि सभा में प्रधानमंत्री प्रचण्ड द्वारा प्रस्तावित विश्वास मत की प्रक्रिया शुरू हो गई है। नेपाल में सत्ता समीकरण बदलने और प्रचण्ड को समर्थन कर रहे कई राजनीतिक दलों द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद उनकी सरकार अल्पमत में आ गई है। हालांकि प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के बदले उन्होंने विश्वास मत लेने की प्रक्रिया शुरू की है।

संसद भवन में पहुंचने पर प्रधानमंत्री प्रचण्ड ने बताया कि वो अपना सरकारी निवास छोड़ कर आए हैं और यहां से सीधे अपने निजी निवास में जाने वाले हैं। विश्वास मत को लेकर प्रधानमंत्री ने कहा कि राजनीति में केपी ओली ने जो बेइमानी और धोखेबाजी की है, उसकी कीमत नेपाली जनता को चुकानी पड़ सकती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और एमाले के बीच बना गठबन्धन कई तरह से आशंकाओं के घेरे में है।

इस समय संसद का अंकगणित प्रचण्ड के पक्ष में नहीं है। कभी पूरे सदन के 273 सांसदों का समर्थन लेकर प्रधानमंत्री बनने वाले प्रचण्ड आज सिर्फ 63 सांसदों के साथ सत्ता से बाहर हो रहे हैं। कुछ दिन पहले तक पांच साल तक सत्ता चलाने का दावा करने वाले प्रचण्ड के विपक्ष में दो तिहाई से भी अधिक सांसदों द्वारा मतदान करने के लिए व्हिप जारी किया गया है।

नेपाल : नदी में गिरे दो बसों के यात्रियों की तलाश में 7 गोताखोर उतारे गए

काठमांडू। नेपाल में यात्रियों से भरी दो बसों के नदी में गिरने के कारण लापता हुए करीब पांच दर्जन से अधिक लोगों की तलाश के लिए गोताखोरों को लगाया गया है। राहत व बचाव कार्य में 70 से अधिक लोगों की टीम दुर्घटनास्थल पर लगातार काम कर रही है।

सशस्त्र प्रहरी बल के डिआईजी पुरुषोत्तम थापा ने बताया कि नदी में लापता हुए यात्रियों की तलाश में सशस्त्र प्रहरी बल (एपीएफ) के सात गोताखोरों को त्रिशुली नदी में उतारा गया है। उन्होंने कहा कि एपीएफ की डिजास्टर मैनेजमेंट से जुड़े 70 जवानों को भी राहत व बचाव के काम में लगाया गया है। मौसम की खराबी और रास्ता अवरुद्ध होने कारण इन जवानों को करीब 30 किलोमीटर पैदल चल कर दुर्घटनास्थल पर पहुंचने में कामयाबी मिली है।

आज तड़के करीब 3 बजे काठमांडू से गौर जा रहे और बीरगंज से काठमांडू आ रहे यात्रीवाहक बसें भूस्खलन की चपेट में आकर त्रिशुली नदी में गिर गई थी। दोनों बसों पर चालक सहित कुल 65 यात्री सवार थे। इनमें से तीन यात्रियों ने कूद कर अपनी जान बचाई जबकि अन्य यात्रियों का कोई भी पता नहीं लग पाया है।

नेपाल : भूस्खलन के कारण पोखरा में एक ही परिवार के 7 लोगों सहित 11 की मौत, लापता लोगों की तलाश जारी

काठमांडू। पोखरा के अलग-अलग स्थानों पर बीती रात हुए भूस्खलन में एक ही परिवार के 7 लोगों सहित अब तक कुल 11 लोगों की मौत हो गई।राहत व बचाव कार्य के दौरान इन सभी लोगों के शव मलबे से निकाले गए हैं। सुरक्षाबलों की तरफ से कुछ और लापता लोगों की तलाश की जा रही है।

पोखरा महानगरपालिका के पुरनचौर में एक घर के भूस्खलन की चपेट में आने से उसमें रह रहे सभी सात सदस्यों की मौत हो गई। बचाव तथा राहत कार्य में जुटे सुरक्षाबलों ने मलबे से इन सभी सातों लोगों के शव निकाले। पोखरा पुलिस प्रवक्ता वसन्त शर्मा ने बताया कि भूस्खलन के कारण जहां दुर्घटना हुई है उन सभी स्थानों पर राहत और बचाव कार्य लगातार जारी है। मलबे से अब तक 11 शव निकाले जा चुके हैं।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि पोखरा के पुरनचौक में एक ही परिवार के सात लोग, पोखरा के ही मादी में आए भूस्खलन की चपेट में एक ही परिवार के तीन लोग और पोखरा के चैनपुर में एक ही परिवार के दो लोगों के शव निकाले जा चुके हैं। मरने वालों में अधिकतर महिलाएं एवं बच्चे हैं। कुछ अन्य स्थानों पर भी भूस्खलन से करीब एक दर्जन घरों के टूटने की खबर है। इन स्थानों पर भी राहत व बचाव कार्य चल रहा है।